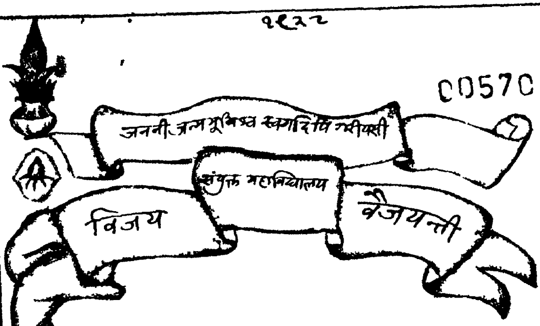


वर्ष - ५ | सम्पादक - [illegible] | अंक - 3

[illegible]

रोते रोते पुत्र ने मृत्यु शय्या पर पड़े हुए अपने पिता से स्नेह और नम्र भाव से कहा - अपने अन्तिम क्षणों में मेरे लिए कुछ सन्देश दे जाओ पिता।'

'सन्देश! अच्छा सामने बहती हुई उस भागीरथी को देखो। पिता के जवाब।

'मैं नहीं समझ सका कुछ स्पष्ट कीजिये' पुत्र ने कहा

पिता ने सामने के खड़े पेड़ की ओर इशारा करते हुए - उस पेड़ की छाया दीखती है?

'हाँ, इस की छाया में बैठ कर आप ने मुझे कई बार उपनिषद् के तत्त्व समझाए हैं। पर मैं भूल गया हूँ।' पुत्र सकुचाते हुए अधीरता से बोला 'और सन्देश दो'।

'इन की शीतलता और छाया अपने लिये नहीं होती ये तो सदा सूर्य की धूप में कष्ट सहते हैं' पिता ने आँखें मूँदते हुए धीरता से गुनगुनाया

पुत्र ने सन्देश [illegible] पा अब भक्ति पूर्वक पिता के चरण छुए तो वे ठण्डे हो चुके थे

विजय वैजानी

सन्ध्या

व्योम में आँचल किसी का है बिछा
सो रहा है सूर्य-शिशु जिस पर पड़ा।
क्या खिलाड़ी ने तना है जाल यह
रोकने को इन्दु रवि के कन्दुके।

या लगाई वागुरा यमराज ने
छीनने छौना मही की गोद से।
खींचने को व्योम वारिधि गर्भ से
चन्द्रमणि [illegible] अभिरामकारी।

लाल रेशम जाल लेकर लोलनी
या विधाता भानु ले कर है खड़ा।
देख प्राची में [illegible] निज वैरि को
क्रोध से आरक्त रवि-राजा हुए।

केसरी बाना इसीसे धार कर
आ डटे युद्धस्थल में शान से।
[illegible] ता है देखा पश्चिम मस्त हो
वारुणी के गर्व [illegible] प्याला लिये।
यह दिखाने को [illegible] प्राची लाल है —
काल का सा रूप रवि ने ले लिया।

विजय - वैजयन्ती

है न लाली सांझ की पश्चिम हुआ
रक्त पीकर पूर्व भी आ रक्त है।

लाल हीरे हुए कर लाखों लिये।
भारतीयों का [illegible] है खून भी।

रक्तिमा के व्याज से पश्चिम! तुम्हें
लाल दागों ने [illegible] के रंग है।

"हम विषों से रत्न में देते सुधा
लाल नदियां यों बहाते नहीं।

पश्चिमी-संसार आपस में सभी
कट कटा कर खून में रंग जाएगा।

क्या सताओगे हमेशा ही हमें
खायेगा पलटा ज़माना - इस तरह —

चन्द्र मानो व्योम में बहता हुआ
चन्द्रिका के व्याज से हंसने लगा॥

"प्रिय हंस"

फूलों की अभिलाषा

1

राजाओं के मणि मुकुटों पर चढ़ने की है चाह नहीं
लगे लगे या सूखे डाल पे सूखें हम परवाह नहीं
पिस जाएंगे घुल जाएंगे जीवन दीप बुझा देंगे।
जिस माली ने जन्म दिया है उन चरणों पे चढ़ जाएंगे।

2

देवार्चन की माला बनना हम को है [illegible] नहीं।
सम्राटों के दरबारों में जाने को तैयार नहीं।
दीर्घ काल से बाट जोहते पाने को विजयी लाल।
जिस के [illegible] में हम भी [illegible] बन जा सुन्दर जय की माला।

3

जन्म भूमि की विजय दुन्दुभि जिस दिन नाद करेगी
स्वर्ग लोक से देवि स्वतन्त्रता जिस दिन भू पर उतरेगी
जिस दिन अञ्चल फैला देगी पूजा को यह भारत मां।
उस झोली में बरस पड़ेंगे जीवन देंगे अपना [illegible]

—

विजय - वैजयन्ती

नवम्बर ११ १९२८

विजेता की

[illegible]

आज कुलक्षी सजाई जा रही है। छोटे छोटे दीपकों की पंक्तियां अपनी शोभा बढ़ा रही हैं। यह खुशी, यह आनन्द यह उल्लास, यह उत्साह किस की स्मृति में है? यह धूमधाम यह शानशौकत किस के स्वागत के लिए प्रस्तुत है? कई शताब्दियों पहले आज के दिन विजेता राम लंकाविजय कर आये, वापिस आए थे। उनकी स्मृति में अयोध्यावासियों ने दीपावली मनाकर, मकानों और दुकानों को सजा कर अपने उत्साह और आनन्द का परिचय दिया था। आज भी भारतवासी उसकी याद करते हैं। उसी विजयोत्सव को मनाते हैं। यद्यपि भारतीय स्वागत के प्राचीन ठोस अवशेष उपलब्ध नहीं होते, तथापि यह अनुभूति, यह तैयारी ही इस बात की परिचायिका है पर आज की दीपावली में और अयोध्यावासियों की दीपावली में आकाश पाताल का अन्तर है। उसमें सजीवता थी, स्फूर्ति थी, जान था और चैतन्य था। आज की दीपावली निष्प्राण है। वह बोलती नहीं - वह मुरदा है। इसमें नशीला जादू नहीं है। दीपावली विजयोत्सव की स्मृति है - यह जानते हुए भी हम इसे दिल से अनुभव नहीं करते। आज विजयोत्सव को मनाने वाले उसके इतिहास को जानते हैं, आत्मा को नहीं। अनुभव हीनता इस [illegible] का प्रधान कारण है।

पूछा जा सकता है कि क्या केवल अकेले राम ही ने विजय की थी? क्या भारत में अन्य विजेता राजा कोई उत्पन्न हुए ही नहीं? फिर क्यों हम इस प्राचीनतम घटना - जिसे बीते सदियां गुजर चुकी - की याद करते हैं, धूमधाम करते हैं, आनन्द और उत्साह से फूले नहीं समाते? भिन्न भिन्न व्यक्ति अपनी अपनी समझ के अनुसार उत्तर देंगे। कई कहेंगे कि राम में बहुत गुण थे - इसलिए हम उनका स्मरण करते हैं। पर

प्रश्न यह है कि क्या भारत में राम से भी अधिक गुणी व्यक्ति उत्पन्न नहीं हुए? राम के अन्दर कुछ और विशेषता भी होनी चाहिए। जिसके कारण वह इस सम्मान का भागी है; क्या कारण है कि हम राम - जिसे बीते सदियां हो चुकीं - की स्मृति में उत्सव मनाते हैं; एक या दो नहीं - तीन तीन, चार चार? क्यों हमारे जीवन का सम्बन्ध - आदि से अन्त तक राम के साथ है? क्यों हम आपस में मिलते समय अभिनन्दन करते समय 'राम' 'राम' कहते हैं? क्यों हम मृत-शव को ले जाते 'राम नाम सत है' से कहते हैं? क्यों हमारे उपनिवेश बसाने वाले भारतीय अपने साथ राम की स्मृति ले गए? क्यों हम उसे भगवान का अवतार समझते हैं? इसका गूढ़ कारण होना चाहिए। यह सम्मान किसी को मुफ्त में ही नहीं मिला करता। हमारी सम्मति इसका कारण राम की लंका-विजय है। इस विजय में और अन्य विजयों में भेद है। यह विजय राज्य वृद्धि की अभिलाषा से नहीं थी - इसका उद्देश्य आर्यसभ्यता का प्रचार था। यह दो विभिन्न संस्कृतियों और सभ्यताओं का परस्पर युद्ध था। आर्य सभ्यता का प्रतिनिधि राम था और अनार्य सभ्यता का रावण। दोनों में युद्ध होता है। राम की रावण पर विजय होती है। आर्य-सभ्यता अनार्य सभ्यता को पराजित करती है। अपना साम्राज्य स्थापित करती है। आज भी दक्षिणी भारत में आर्य-सभ्यता की झलक दिखाई देती है। उनका व्याकरण, उनका साहित्य, उनका अलंकार, आर्यत्व को सूचित करता है। आर्य-सभ्यता का प्रचार करने के कारण, मार्ग में आने वाले विघ्नों को दूर करने के कारण ही आज सदियों के बाद भी भारतीय उनकी स्मृति करते हैं; त्यौहार मनाते हैं, [illegible] भी मानते हैं; भगवान का अवतार समझते हैं।

पर आज हम उससे [illegible] उद्धार नहीं कर सकते। दीपावली मनाते हैं; विजयोत्सव करते हैं - पर करना है इस दृष्टि से, समझ-बूझ कर नहीं। इसीलिए आज भी भारत पराधीनता की बेड़ी में जकड़ा हुआ है। यदि भारतीय

विजय-वैजयन्ती

विजयोत्सव के महत्व को समझते तो क्या यह सम्भव था कि वे पराधीन हो सकते? क्या उसकी परीक्षा के लिए सात समुद्र पार से कोई आन आते? आवश्यकता है कि हम विजयोत्सव को विजयोत्सव समझें, विजयोत्सव समझ कर मनावें — तभी वह सफल हो सकता है। उठो — इन टिमटिमाते दीपकों की ज्योति से अपने हृदय के अन्धकार को दूर कर दो, क्रान्ति कर दो, परिवर्तन कर दो — राम उत्सुकता और प्रतीक्षा से युवकों को आह्वान करते हैं।

आज श्री पं देवशर्मा जी विद्यालंकार ने चरर्ण-यज्ञ का अनुष्ठान किया था और उसे विधिवत सम्पन्न किया भी। यह यज्ञ प्रातः ८ से ११ तक एवं मध्याह्न १२ से ३ तक होता रहा। पं जी के साथ अन्य विद्यार्थी तथा उपाध्याय भी सम्मिलित थे। ६६ घण्टों तक २ चर्खे चलते रहे। अन्त में श्री आचार्य जी ने पूर्णाहुति की। आज का दिन विजयोत्सव के साथ लक्ष्मीपूजा का भी पर्व है। आज के दिन व्यापारी अपने बही खातों को देखते हैं — सारे साल की लाभ हानि का निरीक्षण करते हैं। आज भारत दरिद्र है। उस की लक्ष्मी पूजा सच्ची लक्ष्मी-पूजा नहीं है। आज वह मृगतृष्णा के पीछे दौड़ा जा रहा है। भारत का सब धन विदेशों में ले जाया जा रहा है। भारत कृषि प्रधान देश है। इसके पास कल कारखाने नहीं हैं। रुपयों के स्थान पर यहां की उपज विदेशों में जा रही थी। जिन कृषकों ने पसीना बहाकर अनाज उत्पन्न किया था, वे मरते हैं, हाहाकार करते हैं। कृषक की तुष्टि दरिद्र-नारायण का अभ्युत्थान ही भारत को करना है।

के लिए व्यापार को अपने हाथों में करना चाहिए। मुख्य व्यापार कपड़ों का है यदि भारतीय स्वयं कपड़ा पैदा कर सकें तो उन्हें दूसरों का मुंह न जोहना पड़े और न ही वे कंगाल बनें। चूंकि भारत की दवा चरखा है इसलिए यह अनुष्ठान — यह लक्ष्मी पूजा — सब कुलवासियों के लिए अनुकरणीय है।

समय-पालन

दल के क्रीड़ा-समय-विभाग में अनेक खेलों का उल्लेख था — पर दर्शक इनसे वञ्चित रहा। कारण स्पष्ट है भारतीयों में समय-पालन की कमी है स्वतन्त्रता के प्रजा होते! इस कमी को दूर करो।

लखनऊ-टूर्नामेंट

दल 'अ' और 'ब' दल का सामुख्य हुआ था। यद्यपि 'अ' दल विजयी हुआ पर आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त न कर सका। 'अ' दल ने १५० [illegible] ने लखनऊ में आर्यकुमार टूर्नामेंट में भाग लेने के लिए उपस्थ आता है अब की बार 'अ' दल है और शोभित तपस्वी की है प्रातः काल ठण्डी ठण्डी ओस में के बार तपस्वी की है यह तपस्वी क्रीड़ांगण के सामने नीप द्रुपत को पर्याप्त है। अब तक यह शिकायत रहा करती थी कि 'अ' दल बिना तपस्वी के 'ब' सामुख्य के लिए निकल पड़ता है। पर अब की बार यह शिकायत नहीं है हम समझते हैं कि [illegible] भाइयों की सहनिष्ठता उनके साथ थी। हम उस दिन की प्रतीक्षा कर रहे हैं जब कि 'अ' दल विजयी होकर कुलभूमि में पधारेगा। समय के विजयोत्सव पर आर्योपाध्यायों ने जो उत्साह और उल्लास प्रकाशित किया था हम उसके दर्शनाभिलाषी हैं।

प्रथम संस्करण में कुलपति पर टीका टिप्पणी की गई थी। श्री आचार्य जी की सम्मति है कि courtesy इस बात की demand करती है कि विदाई के समय किसी पर टीका टिप्पणी न हो तो अच्छा है इसलिए उस टिप्पणी को पुनः प्रकाशित नहीं

विजय-वैजयन्ती का इतिहास

भारतीय समाचार पत्रों का इतिहास, जहाँ मनोरंजक है, वहाँ साथ ही साथ अद्भुत भी है। 'ह्विप' उपनाम से 'कौटिल्य' में लेख लिखने वाले महोदय ने भारतीय पत्रों का इतिहास लिखा है पर उसमें देशी भाषा के पत्रों का सम्पूर्ण इतिहास वर्णित नहीं है। देशी - विशेषतः हिन्दी - पत्रों का इतिहास लिखने का या तो अभी समय नहीं आया, या किसी का ध्यान ही नहीं गया। जो कुछ प्रयत्न हुआ है उसे इतिहास नहीं कहा जा सकता। इस अवस्था में गुरुकुलीय पत्रों का इतिहास लिखने का समय आ गया है, यह कहना कठिन है। इस अवस्था में किसी विशेष पत्र का इतिहास लिखना समयानुकूल होने पर भी कठिन है। यह कठिनाई उस समय बढ़ जाती है जब एतद्विषयक सामग्री उसके पास न हो। केवल लेखक ने अपनी स्मृति से काम करना हो। इसलिये इसको इतिहास न कहकर परिचय कहना अधिक अच्छा होगा।

भारतीय देशी पत्रों के इतिहास और विकास को देखकर यह बात कही जा सकती है कि राष्ट्रीय आन्दोलनों की गर्मी, उनकी प्रचण्डता, उनका तेज, देशी पत्रों के जन्म और स्थिरता के कारण हैं। १९१२ का दिल्ली दरबार यद्यपि राष्ट्रीय आन्दोलन नहीं था पर शिक्षित जनता ने उसे अपना लिया था। सारा शिक्षित समाज सम्राट् के दर्शनों के लिए उत्सुक था। उसकी खबरें जानने को उत्सुक था। उसकी चर्चा सबको प्रिय थी। ऐसे समय भारत मित्र दैनिक हुआ। महायुद्ध ने लोगों में एक सनसनी फैला दी थी। लोग चिन्तित थे। यह जानने को कि क्या होने वाला है, उस समय कलकत्ता समाचार, श्री वेंकटेश्वर समाचार और अभ्युदय दैनिक हुए। तीसरा युग स्वराज्य आन्दोलन का आता है। इसमें कई पत्र निकले। रौलट ऐक्ट और असहयोग आन्दोलन के युग में हिन्दी पत्रों की धूम रही। विजय, दैनिक प्रताप, आज, वर्तमान आदि पत्रों की सृष्टि हुई। इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि जब कोई नई लहर उत्पन्न हुई, कोई नई धारा फूटी नये पत्रों का जन्म हुआ।

इसके अतिरिक्त उस प्रतियोगिता के युग में प्रतियोगिता स्वयं नई २ वस्तुओं की जननी है।

व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाएं प्रतियोगिता को और भी प्रबल बना दिया करती हैं। और व्यक्तिगत स्पर्धा और राग इसमें घी का काम करते हैं। साहित्य सेवियों और सार्वजनिक कार्य कर्ताओं के बारे में सुना जाता है कि वे किसी दूसरे की चढ़ती देख नहीं सकते। हृदय की उदारता और विशालता उनके पल्ले नहीं पड़ी यह बात नहीं पर आदमी का अहंभाव इसको छुपा लेता है।

गुरुकुल के पत्रों का इतिहास के श्रोता तथा पाठकों को यह दोनों प्रवृत्तियां और मनोवृत्तियां गुरुकुलीय पत्रों के इतिहास में भी मिलेंगी। गुरुकुल इसका अपवाद नहीं कहा जा सकता।

मार्शल लॉ का आतंक देश से दूर होगया था उसकी छाया गुरुकुल में भी आयी थी। य इसी का यह फल था कि सब पत्र पत्रिकाएं समेटकर एक अज्ञात जगह पहुंचा दी गई थीं। इसी में राजहंस की पुरानी फाइल थी जो श्री आचार्य जी के गृहदाह पर जल गई थी। गुरुकुल की आदि काल की पत्र पत्रिकाएं जिनको पुराने स्नातक स्मरण करते हैं और जिनके पन्ने कभी २ उड़ते दिखाई देते हैं वे सब के सब इसी आतङ्क की छाया के ग्रास हुए। वह भयानक भूत दूर होगया था। अमृतसर Congress के

स्वागताध्यक्ष श्रद्धेय श्री पूज्य आचार्य स्वामी जी ने फिर से कुल के सूत्र हाथ में ले लिये थे देश में नई लहरें दौड़ रही थीं। नया जीवन था नया उत्साह था। सारा देश असहयोग के लिये उद्यत था। स्वर्गीय कुल पिता इस मत के अध्वर्यु थे। अब आन्दोलन के सामने में थे ऐसी अवस्था में कुल उन लहरों के प्रभाव से किस तरह बच सकता था। दशहरा, 'कुल' का सबसे निराला और अपनी ही शान का होता है। 'कुल' के त्यौहारों में सबसे ज्यादा गौरव इस को प्राप्त है। सब कुल वासी दिल खोल का उसमें मजा लेते हैं। सब अपने कौशल को दिखाने को उत्सुक रहते हैं। कोई नया चमत्कार को यह ... की इच्छा रहती है। ऐसी चीज निकालें जो पहिले किसी ने न देखी हो। कोई ऐसी बात कहें जो दूसरों ने न सुनी हो यह भावना उन दिनों में प्रबल रूप धारण किये होती होती है। स्व कुल पिता की उपस्थिति इसकी शान और गौरव को और अधिक बढ़ा देती है। अब तो कुल के दुर्भाग्य से 'विजय दशमी' का त्यौहार कुल में मनाया ही कई सालों से नहीं जाता। इस समय के कुल वासी कुल की विजया दशमी के महत्व तथा ... को अनुभव न कर सकें और हृदयंगम न कर सकें। पर पुराने लोग इस अवसर पर उपस्थित होने के लिये तरसा करते थे। यदि कोई घर से किसी कारण वश पीछे चला जाता था तो पछताता था। कुल की विजयदशमी,

विजय वैजयन्ती

मैं एक आकर्षण था। इसको आज भी पुराने स्नातक याद किया करते हैं। इसका कारण इस अवसर पर निकलने वाले पत्रों ने अपने नाम के आगे 'विजय' रखना आवश्यक, शुभ, और मंगल समझा था। 'विजयापहार' का नाम दो साल पहिले ही School से हो चुका था। 'विजय' नाम वाले दो पत्रों का और उदय हुआ। एक 'विजय वैजयन्ती' और दूसरा 'विजय-सन्देश'। कुल के इस युग में विजय-वैजयन्ती प्रथम पत्र था जो किसी भी समय ख्यात था। यह कुछ व्यक्तियों का ... ।

दूसरा कारण लिखने की ज़रूरत नहीं पर विजय-वैजयन्ती महाविद्यालय दैनिक की प्रतियोगिता या स्पर्धा में नहीं निकला था। यह दैव संयोग की बात थी। महाविद्यालय दैनिक के यदि कोई और सम्पादक होते तो शायद वैजयन्ती का जन्म भी न होता। महाविद्यालय के सम्पादक यदि कोई और पत्र निकालते तो उसी की प्रतियोगिता में और टक्कर में विजय वैजयन्ती खड़ी होती। यह उसी वर्ष स्पष्ट भी हो गया जब दिवाली पर 'महाविद्यालय' दैनिक के सम्पादकों ने 'उत्सव' निकाला। वैजयन्ती के संचालक ... नहीं ठहरे और 'उत्सव' के मुकाबले में खड़े हो गये। इस अवसर पर 'महाविद्यालय दैनिक' स्वतन्त्र रूप से वाग्वर्धिनी सभा के मन्त्री द्वारा प्रकाशित हुआ और वाग्वर्धिनी सभा के कुछ प्रेमियों ने विजय वैजयन्ती से सम्बन्धित रहने का उसको निश्चित बना लिया। विजय वैजयन्ती के संचालक ... तथा बाद के समय के भी सब के सब वाग्वर्धिनी को आदरणीय दृष्टि से देखते रहे हैं और उसके भी एक लेख भी करते रहे हैं।

जिस विवाद में वैजयन्ती को जन्म दिया वह सारे महाविद्यालय से भी सम्बन्ध नहीं रखता पर यदि बनाने की चेष्टा की गई और कुछ बन भी गई। यह केवल उस समय की त्रयोदश श्रेणी के पारस्परिक मनोमालिन्य और विवाद का फल था, पर दैव संयोग से उस सम्पूर्ण 'महाविद्यालय' की चर्चा का ~~...~~ विषय बन गया। यहां यह लिखना प्रसंग से बाहर न होगा कि एक निष्पक्ष पत्र की आवश्यकता समझ कर 'आजकल' कुलमन्त्री की ओर से प्रकाशित हुआ।

'विजय वैजयन्ती' के प्रकाशन ने चकमक ऊपरी का भाव पैदा कर दिया। 'महाविद्यालय' तथा वैजयन्ती दोनों इस होड़ में थे। इसने कुलीय पत्रों की काया पलट दी। जहां उनका कलेवर बढ़ गया वहां विषयों की विभिन्नता भी होने लगी। उसको और अधिक आकर्षक बनाने के लिये चित्रों का काफी संख्या में होना आवश्यक समझा गया।

विजय - वैजयन्ती

महाविद्यालय दैनिक के सम्पादकत्व मिलकर थे। अतः उसका Tital Page बड़ा आकर्षक था। उसकी स्मृति अब भी लोगों में बनी है। गुरुकुल के प्रसिद्ध चितेरे की कृति का यह उत्कृष्ट नमूना था। विजय वैजयन्ती के संचालक इसकमी को पूरा करने को यत्न भरसक करते थे परन्तु उसके पाँसंगा को भी टाइटल में न लासके। दोनों पत्रों की नीति में भी बड़ा अन्तर था दैनिक की नीति school को चिढ़ाना था - खिजाना था - उसके अच्छे कामों को भी फूटी आखों से देखा जाता था। वैजयन्ती school के साथ सहानुभूति रखता था। उसकी हार को भी हार्दिक कर लिखता था। महाविद्यालय के खिलाड़ी अपने मनोरथ में सफल हुए। उसको 'विजयोपहार' और 'विजय सन्देश' से पुरस्कृत होना था। School तथा college के पास २ रहने से दोनों में संघर्ष तथा प्रतियोगिता सदा रहती थी। यह अखाड़ा ही उन दोनों के अरमानों को निकालने का होता था अतः विजय वैजयन्ती में जीवन था। कट्टर Nationalist की भांति महाविद्यालय में एक ऐसे स्कूल 'पत्र' का होना जो विद्यालय से किसी किस्म का सम्बन्ध न रखना चाहता हो

यह स्वाभाविक था। महाविद्यालय दैनिक की यही नीति थी अतः विद्यालय वालों की सहानुभूति वैजयन्ती के साथ थी। इन दोनों पत्रों के पाठक दशहरे कार्यक्रम इन में कम देखते थे वे इन दोनों की आलोचना और प्रत्यालोचना, घात-प्रतिघात, आक्षेप - उत्तर को बड़े चाव से पढ़ते थे। विजय वैजयन्ती इसमें बढ़ी हुई थी। उसका मज़ाक दिल पर चोट करता था। हास्य तलवार की धार के समान पैना होता था। इसके लेखक आज अफ्रीका में वैदिक धर्म प्रचार कर रहे हैं। पं. सत्यपालजी आज भी हास्य की मूर्ति हैं। सदा घूमने वाले आदमी को भी इसने कुछ देर के लिये स्थिर होकर बैठने के लिये बाधित किया। इसी से उस समय की तीव्र प्रतियोगिता का अनुमान किया जासकता है। वैजयन्ती के सम्पादक कवि थे। इसका-रण कविताओं के लिये इसे भटकना न पड़ता था। महाविद्यालय दैनिक ने यदि सन्देश, प्रो. इन्द्रजी से लिया तो वैजयन्ती एक हाथ और ऊपर पहुंची और श्री कुल पिताका सन्देश और आशीर्वाद लेके पहुंची इस होड़ का अन्त

यहीं नहीं होता था। प्रकाशित होने पर हस्ताक्षर के लिये भी स्पर्धा होती थी। वैजयन्ती पर हस्ताक्षर कराने पं. ज्ञानदेव जी जाते थे। वे सुनाते हैं कि जब मैं पहुंचता था तो कुलपिता कहते थे पूछते हैं कि सोम भी पीछे आरहा होगा। इससे पता लगाया जा सकता है कि उन दिनों पत्रों की प्रतियोगिता कितनी तीव्र थी। इस होड के मैदान में सफलता पाने के लिये वैजयन्ती के संचालकों ने बाहर से लेखादि मंगवाना प्रारम्भ कर दिया था ताकि हम जल्दी पत्र प्रकाशित कर सका करें। दैनिक के सम्पादक अखबार लेने 'प्रेस ऑफिस' और प्रो. इन्द्र जी के पास पहुंचते थे तो वैजयन्ती के संचालक सीधे कुलपिता के पास जाते थे। वैजयन्ती ने इस प्रतियोगिता और होड के जमाने में विजय लिया था। विजय वैजयन्ती के मुख्य संचालक तथा प्रथम सम्पादक कुल के यशस्वी कवि 'मेरे फूल' के माली श्रीयुत प्रो. वंशीधरजी विद्यालंकार हैं। इसके पश्चात् तीन वर्ष तक निरन्तर शुद्ध सात्विक भाव से एक स्थिर Institution समझ कर पूज्य लालाजी के Private Secretary पं. अमरनाथ जी ने किया। उस समय के वैजयन्ती के चित्र आप ही के हाथ के हैं। उस समय का पत्र पत्र आपके सतत परिश्रम, लगन और धैर्य का फल है। इन के समय से महाविद्यालय के साथ टक्कर कम होती चली गई। इन दोनों के सम्पादकों में मित्रता थी, घनिष्ठता थी। फिर वैजयन्ती के सम्पादक वाग्वर्धिनी के प्रमुख कार्यकर्ताओं में से एक थे। अतः वह विरोधभावना बहुत कम होती चली गई।

दूसरे साल क्योंकि अभी पुराने कार्यकर्ता मौजूद थे इसकारण उसकी मनका सुना [illegible] दे जाना और उसकी झलक का मिलना स्वाभाविक था। एक समय वह समय भी आया जब कि वैजयन्ती के सम्पादक ही वाग्वर्धिनी सभा के मन्त्री थे। उस साल महाविद्यालय दैनिक सम्पादक महोदय उस पत्र का कोई अंक प्रकाशित नहीं किया। इसके बाद अगले [illegible] यह पत्र स्वतन्त्र रूप में दशहरे और दीपमालिका पर नहीं निकला। इन तीनों वर्षों में नियमपूर्वक सब कठिनाइयों के बावजूद भी वैजयन्ती कुल की सेवा करती रही। आजकल और महाविद्यालय ने किन्हीं कारणों से मुख्य भाग लिया तब भी केवल श्री पं. अमरनाथ जी विद्यालंकार का धैर्य था जिन्होंने मिलकर इसका सम्पादन किया। यदि इन तीन सालों इसका सम्पादन आपके हाथों में न होता तो सम्भव था कि वैजयन्ती भी अन्य अनेकों की तरह बन्द हो चुकी होती। वास्तव [illegible] तीन साल चाहे महत्वपूर्ण न हों पर वैजयन्ती के अपने जीवन को [illegible] ये तीन साल बड़े महत्वपूर्ण हैं। दिल्ली की special congress को ~~[illegible]~~ विषय पर स्वयं आंखों देखा [illegible] सम्पादक ने [illegible] लिखा था जो आजभी वैजयन्ती की file का गौरव बढ़ा रहे हैं)

विजय वैजयन्ती का सम्पादन श्री पं. जी बाद ऐसे व्यक्ति को मिला जो न चित्रकार और न सुलेखक ही थे। और दोनों पत्रों का भार कुछ घण्टों के अन्दर से उस व्यक्ति पर सौंपा गया था। उस वर्ष [illegible] से पूर्व खेले हुए थे उन अवसर पर 'महाविद्यालय' उनके

विजय - वैजयन्ती

राष्ट्रकार्य में निकल चुका था। उनके मित्र और सहकारी तथा उनके सार्वजनिक कार्यों के साथी एक ही पत्र को निकालने को उद्यत थे। दोनों को पृथक् २ उतने ही पृष्ठों का निकालना उनके लिये अति कठिन था। उस समय वाग्वर्धिनी के उपमन्त्री श्री पं० शंकरदेव जी विद्यालंकार थे। उनपर महाविद्यालय का सम्पादन भार सौंपा गया था, वे स्वयं उसे लेने को तय्यार न थे। वाग्वर्धिनी के मंत्री पं० चन्द्रगुप्त विद्यालंकार थे। वे महाविद्यालय को किसी न किसी रूप में प्रकाशित देखना चाहते थे। और उसका एक ही उपाय था कि दोनों को संयुक्त कर दिया जाय। उस दिन से दैनिक महाविद्यालय विजय वैजयन्ती के साथ सम्मिलित किया गया। तीसरे युग में रह रह विरोध भी जागता रहा। बीच में एक साल स्वतंत्र रूप से महाविद्यालय दैनिक को उसके एक भूतपूर्व मंत्री ने चाहा था। परन्तु किन्हीं कारणों से निकाला नहीं और ये दोनों सम्मिलित ही रहे।

विगत चार वर्षों से एक विभाग ने एक आत्मा ने इसको चलाया पर एकाकी नहीं अपितु अपने मित्रों की सहायता से। इस काल में काम बढ़े हुए थे। सम्पादक भी इन चार सालों में परिवर्तित होते रहे। काम करने वाले नाम की इच्छा न कर काम करते रहे। तीन सालों तक मेरठ से सचित्र वैजयन्ती निकलती रही। इस सजावट के कर्ता श्री वैद्य योगेश्वर आयुर्वेदालंकार थे। जिस वर्ष अब रोगी होने के कारण न आ सके उस साल इसका सौन्दर्य भी फीका रहा। इस युग में इसका कलेवर बहुत बढ़ गया। इन छपों की आज तक कुल में कोई भी पत्र नहीं निकला इस विषय में इसने Record Beat कर दिया है। इस समय पत्र को सजीव बनाने मिलाने की अधिकतम कोशिश की गई। कुल के प्रत्येक सार्वजनिक कार्य की समालोचना करना उसने अपना कर्तव्य समझा। यथासमय कुल की चर्चा तथा जीवन की प्रत्येक लहर, प्रत्येक धारा और प्रत्येक अंग पर इसने स्वतन्त्र रूप से आलोचना की। पत्र के हृदय की पूर्ति की और उसके लेख श्री देवशर्मा पं. नरदेव विद्यालंकार पं. शंकरदत्त विद्यालंकार श्री देवनाथ के प्रयत्न और चित्रण तथा परिश्रम का फल हैं। इसके प्रचार और व्यवस्था का सारा काम श्री चांदीराम के हाथों में रहा है। इन चार वर्षों में जब उत्तेजना का वातावरण नहीं था, अखबार निकालने की भावुकता उत्पन्न करने की चीज नहीं थी। जब कोई दूसरा युक्ति योगी नहीं था ऐसे समय यदि पत्र निकला तो इन्हीं हृदयों के उत्साह और परिश्रम के कारण। इस काल में पत्रिका के चित्रों का प्रबन्ध श्री रणवीर आयुर्वेदालंकार पर था। श्री अवधू जी ने पिछले दो वर्ष पर्याप्त सहायता की है। इस विभाग का श्रेय इन्हीं दो सज्जनों को है।

पत्र के लिये गौरव की बात है कि वह कुल में सदा साहित्यिकता का पोषक रहा है। वह कभी भी संकुचित रुचि का शिकार नहीं हुआ। जब आर्यसमाज के पक्के सहकारी भी लिखते रहे और कुल में नई समय आया जब मुसलमानों के

विजय वैजयन्ती

हाथ से छूट गया इसलिये छोड़ दिया गया चूंकि वह उम्र का मामला है, यह ध्यान में नहीं रखा गया कि वह कितने वर्षों से दे रहा है; जिससे उसको [illegible] का [illegible] भी पड़ा और एक छात्र को उत्तीर्ण निकाल दिया गया चूंकि वह मुसलमान है तब भी विजय वैजयन्ती ने इस निर्णय का विरोध किया। साहस के साथ राष्ट्रीय सिद्धान्तों पर अड़ा रहा।

पत्र की टिप्पणियों का यही असर था कि कुल मंत्री के चुनाव की पद्धति बदल गई और वैजयन्ती द्वारा प्रस्तावित प्रस्ताव को कुल मंत्री के चुनाव के समय कार्यान्वित किया गया। इसके लिये वैजयन्ती के सम्पादक गर्व कर सकते हैं।

गुरुकुलीय पत्रों में से किसी की स्थिति पूरी नहीं है इसको छोड़ कर। केवल यह भी इसके पक्ष में एक गौरव की बात है कि गत [illegible] की जयन्ती ने उसके रीति का स्पर्श नहीं किया। मंगलमय भगवान् करें कि वैजयन्ती सदा अपने पथ पर चलती हुई फले फूले और कालेज के गर्व की चीज़ बनी रहे॥

विजय-वैजयन्ती

चयनिका:—

राजनीति का शब्दकोश

मुल्की कामों में कुछ खास बातों का अलग अलग मतलब हुआ करता है। किसी के मुल्क पर डाका डालने करने को हमला करना कहते हैं, जबर्दस्ती किसी का मुल्क छीन लेने को फतह करना कहते हैं; जीते हुए मुल्क में मजे से राज करने को अमन चैन कहते हैं; जिनका सब कुछ छीन लिया जाता है, वे लोग लाचारी से गुलामी करते हैं उसे राजभक्ति कहते हैं; और जो शख्स अपनी छीनी हुई चीज वापिस लेने की कोशिश करता है, वह बलवाई माना जाता है। राजनीति का कोष भी बड़ा विचित्र है, जितने बुरे से बुरे, निकम्मे से निकम्मे, वाहियात और नीच काम हैं वे तो इन मुल्की मामलों में अच्छे समझे जाते हैं और जो अच्छे और ऊंचे दर्जे के काम हैं, वे बुरे समझे जाते हैं।

सुख और दुःख

सुख की अपेक्षा दुःख की छाप बहुत ही मनोहर होती है। सुख में एक प्रकार का अहंकार होता है — उसका स्वर बहुत ऊंचा और कर्कश होता है। परन्तु विषाद बहुत ही विनयी, बहुत ही नीरव होता है।

दुःख बहुत ही महत् और सुख बहुत ही नीच होता है। दुःख में जो कुछ जमा किया जाता है, सुख में वही खर्च किया जाता है। दुःख सृष्टिकर्ता और सुख भोग करने वाला होता है। दुःख जड़ की तरह मिट्टी से रस खींचता है, परन्तु सुख फूलों और पत्तों की तरह विकसित होकर उसी रस को व्यय करता है। दुःख वर्षा की तरह तपी हुई भूमि को शीतल करता है और सुख शरद् ऋतु के पूर्ण चन्द्रमा की तरह आकर उस पर हंसता है। दुःख किसानों की भांति खेत की मट्टी तोड़ता है, सुख राजा की तरह उसमें उगे हुए अन्न का उपभोग करता है। सुख उद्धत और दुःख मधुर होता है।

दुःख के गीत के समान और कोई मीठा गीत नहीं।

विजय-वैजयन्ती

राम के गुण

नारद से वाल्मीकि पूछते हैं —

को न्वस्मिन्साम्प्रतं लोके गुणवान् कश्च वीर्यवान्।
धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्यवाक्यो दृढव्रतः ॥१॥
चारित्रेण च को युक्तः सर्वभूतेषु को हितः।
विद्वान्कः कः समर्थश्च कश्चैकप्रियदर्शनः ॥२॥
आत्मवान्को जितक्रोधो द्युतिमान्कोऽनसूयकः।
कस्य बिभ्यति देवाश्च जातरोषस्य संयुगे ॥३॥

वाल्मीकि उत्तर देते हैं —

इक्ष्वाकुवंशप्रभवो रामो नाम जनैः श्रुतः।
नियतात्मा महावीर्यो द्युतिमान्धृतिमान्वशी ॥४॥
बुद्धिमान्नीतिमान्वाग्मी श्रीमाञ्छत्रुनिबर्हणः।
विपुलांसो महाबाहुः कम्बुग्रीवो महाहनुः ॥५॥
महोरस्को महेष्वासो गूढजत्रुररिंदमः।
आजानुबाहुः सुशिराः सुललाटः सुविक्रमः ॥६॥
समः समविभक्ताङ्गः स्निग्धवर्णः प्रतापवान्।
पीनवक्षा विशालाक्षो लक्ष्मीवाञ्छुभलक्षणः ॥७॥
धर्मज्ञः सत्यसंधश्च प्रजानां च हिते रतः।
यशस्वी ज्ञानसंपन्नः शुचिर्वश्यः समाधिमान् ॥८॥
प्रजापतिसमः श्रीमान्धाता रिपुनिषूदनः।
रक्षिता जीवलोकस्य धर्मस्य परिरक्षिता ॥९॥
रक्षिता स्वस्य धर्मस्य स्वजनस्य च रक्षिता।
वेदवेदाङ्गतत्त्वज्ञो धनुर्वेदे च निष्ठितः ॥१०॥
सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञः स्मृतिमान्प्रतिभानवान्।
सर्वलोकप्रियः साधुरदीनात्मा विचक्षणः ॥११॥ (रामायण से)

सन्ध्या को आह्वान

सन्ध्या इस विश्वमन्दिर में आधा घूंघट काढ़े, मलिन वस्त्र धारण किए, लजाई लिए मुख में मुस्कान और हाथ में दीपक ले कर चुपचाप धीरे धीरे पैर रखती हुई आ रही है। लज्जा से मानो आंखे नीची किए है। मन्द मुसकान से मनोहर मुख वाली, माधुरी से भरी, लज्जा से नम्र, प्रेममयी सन्ध्या! पृथिवी पर आओ॥

" ५ "

लक्ष्मी-पूजा का पर्व

(लेख - श्री पं. देवशर्मा जी । [illegible])

यह बड़ा आश्चर्य है कि भारत वासी आज के दिन लक्ष्मी के लिये जुआ खेलते हैं। केवल आज के दिन नहीं खेलते, किन्तु आज से प्रारम्भ कर साल भर जुए द्वारा ही लक्ष्मी (?) की आराधना करते हैं। क्यों कि हम यह

चे

हम भारतवासी लक्ष्मी को भूल चुके हैं अथवा लक्ष्मी देवता हम को त्याग चुकी है। अतः देश भर में जहां देखो गरीबी का ही रोना है। व्यापारियों से पूछो तो वे कहते हैं कि हमें इस में कुछ नहीं बचता, सरकारी नौकर तो पाई पाई को मारे २ फिरते हैं। पर ऐसे 'धन कमाने वाले' थोड़े से लोगों के अतिरिक्त जो भारतीय जनता का समुद्र पड़ा हुआ है उस में कोई प्रवेश नहीं करता। इन की कोई चर्चा नहीं करता। हम पढ़े लिखे लोग इन की हालत जानने की आवश्यकता ही नहीं समझते। हम इनसे इतनी दूर हो गये हैं कि यदि कोई इन की सच्ची कथा हमें सुनाता है तो हमें उस पर विश्वास नहीं आता। ये हैं भारत के किसान और मजदूर, जो कि कम से कम २० करोड़ हैं जिन में से आधों को एक समय रूखा भोजन ही नसीब होता है, जिन में से लाखों एक दुर्भिक्ष आ जाने पर चल बसते हैं। यह हैं तीन चौथाई असली भारत जिस को यदि हम देखें तो हमें पता लगेगा कि हमें लक्ष्मी देवता की आराधना की जरूरत है तथा यह आराधना हमें ठीक तरह करनी चाहिये। भारत में पूर्व काल से कार्तिकी अमावस का दिन लक्ष्मी पूजा का दिन समझा जाता है। यह वैश्यवर्ग का विशेष त्यौहार है। इस लिये हमें इस पुनीत त्यौहार को यूं ही व्यर्थ के 'हा हा हू हू' में नहीं गंवा देना चाहिये।

२ दीपित हृदयों से निकली दिवाली हो। यह सच है कि इस त्यौहार से हम जो कुछ शक्ति ले सकते हैं उसे न ले कर हम इसे यूं ही बिताते हैं। ये इतने दीपक जला कर हम क्यों बैठे हैं! आज कार्तिक अमावस की यह इच्छा नहीं है कि हम उसे दीपों की माला पहिना कर सजावें (लजावें) पकवान खा कर उसे भोग लगावें [illegible]। इस अमावस के ने दिन तो [illegible] बीत [illegible] कि यह उस भारत वर्ष में आया करती थी जो कि धन धान्य से पूर्ण था, सुखी था, स्वस्थ था, अपने निजात कर्म में मस्त था, कुछ दुनिया को जानना न थी, देश के सब स्त्री जो पुरुष और वीर क्षत्रिय इस की रक्षा में तत्पर थे। पर अब तो यह अमावस उन गुलामों की बड़ी भारी बस्ती में प्रति वर्ष आती है जो कि गुलामी में इतने पक चुके हैं कि इसी में जैसे तैसे जीते रहना पसन्द करते हैं और ऐसे जिन्दा रहने के लिये अपने पर सब अत्याचार खुशी से सहते हैं और बदले में अपने छोटे भाइयों पर अत्याचार करने में नहीं हिचकते। हम ऐसे पामर दास बन चुके हैं। अपना धन, बल, गौरव, ज्ञान सब गंवा चुके हैं। अतः, तो क्या हम उसी तरह दिवाली मना सकते हैं जैसे कि हमारे वीर

और विजयी पुरुषों ने मनानी शुरू की थी तो निर्जीव नकल करते जाने से क्या लाभ ?

मेरे भाई कहते हैं "क्या हमें अपने भव्य अतीत की स्मृति में दीवाली कर के खुशी न मनानी चाहिये ? क्या हम गौरवपूर्ण अतीत की स्मृति ऊँचा नहीं उठाती ।" पर हम देखें कि हमें भूत की ही स्मृति नहीं करनी चाहिये किन्तु साथ ही भविष्य पर भी दृष्टि डालनी चाहिये । लेकिन यदि इन दोनों में से हमें कभी एक का ही चुनाव करना पड़े तो हमें अपने भूत को [illegible] कर अनागत भविष्य को ही दृष्टि में रख कर चलना चाहिये । पर मेरा कथन तो इतना है कि हमें वर्तमान में भूत की स्मृति इस प्रकार से करनी चाहिये जिस से कि वह स्मृति हमें भविष्य में बढ़ा सके- उन्नति कर सके । आज कल की काली- अमावस्याओं में यदि हम अपने अतीत के दीपकों को अपने मन में ही स्मृति रूप में रख कर जलायें अर्थात् उज्ज्वल अतीत द्वारा पहले अपने वर्तमान के बुझे हुवे हृदयों को दीप्ति करने का यत्न करें और इस आन्तर कार्य के लिये यह पद आवश्यक संकेत रखें कि जब तक हृदय दीपित न हो जाय तब तक बाहर के निर्जीव दीपे जलाने से बाज रहें तो इस प्रकार मनाया गया पर्व भविष्य के उस दिन को जल्दी ले आवेगा जब कि एक दिन हमारे आर्थिक तथा राजनैतिक मुक्ति पा जाने के कारण हमारे हृदय स्वभावतः इतने दीपित हो उठेंगे कि हमें बाहिरी दीपावली मनाने को विवश करेंगे । वह सजीव दीपावली होगी । आज की दीपावली हमारे हृदय से निकली हुई नहीं है यदि हम जान बूझ कर अपनी वर्तमान अवस्था को भुला न दें । इसलिये यह झूठी दीवाली मनाते जाना हमारी सच्ची दीवाली के आने में देर करने का कारण बन रही है ।

३ लक्ष्मी पूजा की विधि

तो यह सच्ची दिवाली किस तरह से आवेगी- दिल से प्रेरित हो कर स्वभावतः निकलेगी ? यह होगा लक्ष्मीपूजन से । पर लक्ष्मी पूजन दीवारों पर निरर्थक लकीरें बनाने से, विदेशी सामान खरीदने से या जुआ खेलने से न होगा । आज हमारे कुल में कुछ लोगों ने ६ घण्टे तक दो चर्खे चला कर लक्ष्मी पूजा की है । इसी तरह खादी खरीद कर, अन्य स्वदेशी कौशल के सामान खरीद कर देश की संपत्ति बढ़ाने वाले व्रत स्वीकार कर के भी लक्ष्मी पूजा की जा सकती है एवं कृषि तथा पशु पालन की दिशा में इस दिन कोई उपयोगी कार्य करना चाहिये । चाहिये आज के दिन का आमोद प्रमोद भी इसी दिशा में होना चाहिये । पर इस पर्व के मनाने की देशव्यापी विधि सूत्र चर्खे या खादी से सम्बन्ध रखने वाली ही हो सकती है । क्यों कि इसी [illegible] के नाश से भारत की ३/४ जनता में दारिद्र्य का सूत्रपात हुआ था तथा आज इसी के पुनरुज्जीवन द्वारा जहां एक ओर भारत के गरीबों को लक्ष्मी का संदेश मिलेगा वहां दूसरी ओर भारत से बाहर जाने वाली लक्ष्मी शक्ति का प्रवाह रुकेगा और हमारे राजनैतिक संबन्ध को सुधार देगा । इस लिये लक्ष्मी पूजा की सामग्री आजकल चर्खा है - [illegible] है । यह चर्खा जिस दिन भारत में फिर घर घर चलने लगेगा तो लक्ष्मी देवी आराधित हो गयी- सिद्ध हो गयी जानो । भारत की राजनैतिक पराधीनता तो शायद और पर इतने होने से भी पहिले दूर हो जाना संभव है, किन्तु हमारी आन्तरिक (पूरी) स्वाधीनता तभी होगी जब कि यह चर्खा अपने पूरे अर्थों में भारत में स्थिर हो जायगा । दूसरे शब्दों में कहें तो जब कि वैदिक सभ्यता (यह सादगी तथा उच्च जीवन की सभ्यता जिस में [illegible] का मुख्य स्थान है) भारत में बद्धमूल हो जायगी । चर्खा उस सभ्यता पर हमें पहुंचाने वाली मुख्य वस्तु है अतः इसे ही प्रतीक ले कर हमें चलना है ।

आप कहेंगे ६ घंटे में कोई ८, १० तोले सूत से क्या बनेगा ? इस प्रकार का विचार बहुत से भद्र पुरुषों के मन में आया करता है । कई भाइयों ने सूत कातना शुरू कर के इसे छोड़ दिया जब कि देखा कि इस से इतनी अल्प मात्रा में उत्पत्ति होती है । पर

इस में दीर्घदृष्टि का अभाव स्पष्ट दीखता है। जिन की दृष्टि विस्तृत व्यापक राष्ट्र को देख सकती है उन्हें ऐसा भ्रम नहीं हो सकता। नहीं तो यह कहना कि 'इतने से मेरे कातने से क्या होगा? इस से दारिद्र्य कैसे हटेगा?' ऐसा ही है जैसे कि आज जब आप सहभोज खाने जायें तब मिठाई का एक कण मुख में डाल कर कोई ठहर जाय और सोचने लगे कि 'इस से तो भूख नहीं मिटी और कहते हैं कि अन्न खाने से भूख मिटती है', इस लिये वह और खाना छोड़ कर उठ खड़ा हो। भूख तो पेट भर खाने से मिटेगी, पर भोजन का एक एक कण भूख मिटाने में सहायक होगा, इसी तरह देश की भूख तो तब मिटेगी, जब चर्खा इतना चल पड़ेगा कि उस की बेकारी न रहेगी पर हमारा काता हुआ एक एक सूत उसे मिटाने में अवश्य सहायक होगा। यदि सच मुच यही [illegible] है कि इतने जरा से सूत से क्या होगा तो [illegible] कातते, दूसरों को कातने की प्रेरणा क्यों नहीं करते? थोड़ा २ देकर इसे भारत को तरसाते क्यों हो? जरा सा खाने से तो भूख और चमकती है।

'सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्' यह वर्णन यदि किसी अलौकिक महापुरुष का नहीं है, तो लोक में सहस्रों हाथ पैर वाला यह पुरुष राष्ट्र पुरुष ही हो सकता है। ६० करोड़ भुजाओं वाला भारत राष्ट्र यदि चाहे तो क्या नहीं कर सकता। यदि भारत के दो करोड़ हाथ भी हिल पड़ें - उन्हें चर्खे मिल जाय - तो भारत अपने को दो वर्ष में [illegible] करके इतनी शक्तिमान हो जाय कि वह अपने बन्धन काट कर तो अवश्य खड़ा हो जाय। पर अपने ही काम के लिये अपने हाथ नहीं हिलते। हम थोड़ी २ अल्प-[illegible] चेष्टायें करके अपने राष्ट्रात्मा को तरसा रहे हैं। यदि हम अपनी तृप्ति के लिये ही मनोनीत चेष्टा करें तो हमारा राष्ट्र देह हो कर अपनी देश में खड़ा हो जाय और तब परजीवी कीड़े (Parasite) की तरह हमारी कमजोरी पर आश्रित साम्राज्य भी इस तरह खड़ा न रह सके।

फिर आप कहते हैं कि 'चर्खा कातना तो उन्हें कहो जिन्हें कि इस तरह के सहायक पेशे की जरूरत है - हम कातने को क्या करते हैं।' पर नहीं, आप पढ़े लिखे लोगों का कातना जरूरी है। आप के बिना कातें उन को कातना शुरू करना कठिन है। उन को कतवाने के लिये आप का कातना उतना ही जरूरी है जितना कि अन्न को पेट में पहुंचाने के लिये उस को मुख में डालना जरूरी है। (मुख उदाहरण है) जब तक आप उदाहरण सामने न दिखायेंगे तब तक और कहीं उधर नहीं जा सकते। ग्रामीण लोग हम पढ़े लिखे लोगों के आचरणों को ही ग्रहण करते हैं। यदि आप को अपनी आमदनी के लिये कातने की जरूरत नहीं है तो आप निःस्वार्थ हो कर परार्थ (राष्ट्र के लिये या गरीबों के लिये) कातिये, ठीक उसी तरह जैसे कि मुख भोजन को अपने लिये नहीं ग्रहण करता किन्तु पेट तक पहुंचाने के लिए ग्रहण करता है। यही उदाहरण का काम है। सच्चे उदाहरण के द्वारा ही चर्खा उन तक पहुंच सकेगा। इसी दृष्टि से (आत्म रूप समझ कर श्रद्धा के साथ) यदि हम (गुरुकुल वासी), आध घंटा रोज ही परार्थ सूत कातें तो जो इस का प्रभाव होगा उस की हम अभी कल्पना तक नहीं कर सकते। पर यह प्रभाव तभी है जब यह श्रद्धा से किया जाय। सूत कातना यज्ञरूप तभी बनेगा जब कि हम इसे सचमुच इतने बड़े भारी परोपकार का कारण समझ कर कातेंगे। नहीं तो केवल थोड़े से सूत की उत्पत्ति ही इस का फल होगा। पर यह फल भी थोड़ा

नहीं है, पर भी मिल कर बहुत बड़ी वस्तु हो जायगी।

(४) जागरण

कहते हैं कि इस अमावस्या की रात भर लगातार जागते रहने से लक्ष्मी दर्शन देती है। इस का मतलब मैं यह लेता हूं भारत के इस अंधकार काल में लगातार जागते हुवे यदि हम खादी प्रचार आदि द्वारा लक्ष्मी की खोज में लगे रहेंगे तभी हमें लक्ष्मी मिलेगी। पर हम जागने में बहुत कच्चे हैं। थोड़ी देर खोज में जागते हैं, पर फिर ऊंघने लगते हैं और धीरे धीरे सो जाते हैं। गुरुकुल में तीन साल हुवे लगभग २०, २५ व्यक्तियों ने चर्खा संघकी सभासदी स्वीकार कर प्रतिमास एक हजार गज सूत कातने का निश्चय किया था - एवं लक्ष्मी की खोज करने वालों में भर्ती हुवे थे। किन्तु देर तक जागते न रहे - उन में से शायद एक आध ही स्थिर रहा हो। बाकी सब सो गये। मैं आज लक्ष्मी पूजनोत्सव के दिन फिर आप को यत्न पूर्वक जगाना चाहता हूं। और यह संदेश सुनाना चाहता हूं कि लक्ष्मी जागृत रहने से ही मिलती है। इस लिये जब तक इस भारत पर छायी अंधकार की रात न गुजर जाय तब तक सावधानी से जागते रहिये। क्या आप यह सुनेंगे?

(५) लक्ष्मी और जुआ

यह बड़ा आश्चर्य है कि भारत वासी आज के दिन लक्ष्मी पूजा के लिये जुआ खेलते हैं। केवल आज के दिन नहीं खेलते किन्तु आज से प्रारंभ कर साल भर जुए द्वारा ही लक्ष्मी (?) की आराधना करते हैं। क्या कि हम यह चेष्टा करते रहते हैं कि किसी तरह बिना श्रम किये धन हमें मिल जाय और यही जुआ (द्यूत) है। बिना अपने श्रम द्वारा अर्जन किये धन पा लेने की संभावना में अनिश्चित व आलस्यमय जीवन बिताना ही निरंतर द्यूत क्रीड़ा है। क्या हमारा यह जीवन ऐसा ही नहीं है? हम में से 'धन कमाने वाले' कहलाने वालों में से - वकील, डाक्टर, व्यापारी आदिकों में से - कितने हैं जो कि ईमानदारी से कमाते हैं - जो वास्तव में कोई हितकारी वस्तु को अपने श्रम से उत्पत्ति कर के कमाते हैं? क्या हम प्रायः दूसरे के मुख के कौर को छीन लेना ही धन कमाना नहीं समझते? ऐसी कमाई की लक्ष्मी लक्ष्मी नहीं है, मैं इसे लक्ष्मी असुरी कहता हूं। पर लक्ष्मी देवी नहीं है। द्यूत के साथ जिस धोखे की लक्ष्मी का संबन्ध है वह यह लक्ष्मी असुरी है। लक्ष्मी देवी तो इस से बिल्कुल विपरीत वस्तु है। लक्ष्मी देवी तो उद्योगमय जीवन में बसती है। लक्ष्मी देवी वहां आविर्भूत होती है जहां मनुष्योन्नति के लिये वास्तविक उपयोगी वस्तु की श्रम से उत्पत्ति की जाती है। दूसरे का हिस्सा नहीं छीना जाता। और यह उत्पत्ति भी ऐसे साधन से की जाती है जिस से कि सब के साथ न्याय होता है। इसी लिये मैं ने कहा है कि आजकल चर्खा लक्ष्मी देवी की प्रतीक है। बहुत से ऐसे लोग जिन्हें चर्खे से लक्ष्मी की प्राप्ति नहीं दीखती उन के यह सादी सी बात न समझ सकने का कारण मैं न [illegible] यह पाता हूं कि उन की आंखें लक्ष्मी असुरी से इतनी चौंधियायी रहती हैं कि वे लक्ष्मी देवी को पहचान नहीं सकते। लक्ष्मी असुरी के इर्दगिर्द पारवार को हम इतना अपना चुके होते हैं कि अपनी आत्मीय लक्ष्मी देवी को सामने देख कर भी हम उस से प्रेम नहीं उत्पन्न होता। इस लिये उद्योगमय जीवन छोड़ कर दूसरे के हिस्से को छीन लेना यद्यपि आसान है - और छीन लेने की आशा में आलस्यमय जीवन बिताना और भी आसान है किन्तु धोखा न खाना चाहिये कि इस से हमारे पास लक्ष्मी आई भी तो बेशक भर के आ जायगी, पर लक्ष्मी देवी कभी नहीं। शायद इसी लिये भारत वासी द्यूत द्वारा आसान लक्ष्मी पूजा (?) कर के चाहते तो हैं सुखी होना किन्तु दिनों दिन अधिक कष्ट में पड़ते जाते हैं। उल्टे रस्ते चलने का यह फल क्यों न हो।

किन्तु यह नहीं समझ में आता, कि भारत देश में लक्ष्मी पूजा का द्यूत के साथ संबन्ध कब से लगा - प्राचीन इतिहास में किस अशुभ घड़ी से यह उल्टा संबन्ध जुड़ा। भारत की (बल्कि संसार की) सब से पुरानी धर्म पुस्तक ऋग्वेद में स्पष्ट आदेश है

अक्षैर्मा दीव्यः, कृषिमित्कृषस्व

वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः। ऋ. १०-३४-१३

"जुआ मत खेल, खेती कर। (इस प्रकार) लब्ध धन को बहुत मानता हुआ इसी में आनन्दित रह"। कितने स्पष्ट शब्द हैं। यह तो बतलाने की जरूरत नहीं कि खेती

की उत्पत्ति खेती (कृषि) के द्वारा ही होता है।

(6) सहभोज

इस दिन हमें सहभोज अवश्य करना चाहिये, पर राष्ट्रीय दृष्टि से सहभोज। सहभोज का अर्थ है 'साथ (मिल कर) खाना।' इस दिन हम अखिल राष्ट्र के साथ भोजन करें। जब हम विदित हैं कि हमारे कम से कम 8 करोड़ राष्ट्र भाई ऐसे दारिद्र्य ग्रस्त हैं जो कि पेट भर खाना क्या होता है इसे नहीं जानते तो उन सब के साथ खाने के लिये हमारा भोजन आज क्या होना चाहिये यह आप ही सोच लें। क्या उनके साथ हमें एक दिन भी दिन न खाना चाहिये। इस दिन यदि सब छोटे बड़े कुलवासी मिल कर इसी तरह बैठ और एक मोटी रोटी पर नमक की डली या कुछ शाक रख कर खायें तो यह वास्तविक सहभोज होगा। अभी तक तो हम भल्ल-भोज करते हैं - जो भोजन अन्य सब को कभी नसीब नहीं है उसे बनवाकर खाते हैं उन सब से पृथक होकर भोजन करते हैं। साल भर में कम से कम एक दिन तो ऐसे राष्ट्रीय सहभोज को करना ही चाहिये। जन्मोत्सव, वार्षिकोत्सव आदि उत्सवों पर आज जैसे भोजनों के लिये अवकाश हो सकता है पर आज जैसे राष्ट्रीय त्योहार के भोजन की विशेषता तो उपर्युक्त प्रकार की ही होनी चाहिये।

(7) पर्व मनाने का कार्य क्रम

इस प्रकार विचार करते हुए इस पर्व के दो तीन दिनों को हमें कैसे मनाना चाहिये इस के लिये निम्नलिखित निर्देश किये जा सकते हैं। अनुभवी कार्य कर्ता लोग स्वयं इन्हें और अधिक ठीक ठाक कर लेने की कृपा करेंगे।

1 सब को चाहिए कि वे खूब सफाई और स्वच्छता करें। आस पास की गलियों को, घरों को, घर की सब वस्तुओं को साफ सुन्दर स्वच्छ बना लें।

2- धनी लोगों को चाहिये कि वे सुन्दर से सुन्दर बहुमूल्य खादी खरीदें तथा अन्य स्वदेशी चीजों की उत्तम वस्तुएं खरीद कर लक्ष्मी के विस्तार में लक्ष्मी का सदुपयोग करें। आज के दिन कुछ न कुछ खादी खरीदने में प्रत्येक मनुष्य माहात्म्य समझे। विदेशी खिलौने, रंगीन कागज आतिशबाजी का सामान आदि विदेशी वस्तुओं जिन का आजकल हानिकारक रूप मिलाकर खरीदने का जो घोर कृत्य इस पर्व पर किया जाता है वह सर्वथा बन्द हो।

(3) माताओं को चाहिये कि वे आज से नई रुई को कातने के लिये चर्खे चलाने शुरू करें। अब तक नई कपास आ जाती है उसे ओट धुन कर आज सुन्दर चर्खे से कुछ न कुछ जरूर कातना चाहिये और फिर गाढ़ा भर कातने का क्रम जारी रखना चाहिये।

(4) बालक बालिकाओं को चाहिए कि वे लक्ष्मीवर्धक कोई मनोरंजन करें, जैसे कातने का मुकाबला (Match), मिल कर [illegible] को सींचना आदि। वे रामायण कथा सुनें तथा इसी विषयक व्याख्यान सुनें।

(5) सार्वजनिक भूमि, कृषि यंत्र, पशु वर्ग आदि की पूजा होनी चाहिए। कोई ऐसी विधि की जाय जिस से कि मन में इन के विषय में पूज्यभाव उत्पन्न हो। इन के स्वास्थ्य वृद्धि के लिये प्रार्थना हो।

आतिशबाजी नहीं छोड़नी चाहिये। दीपक नहीं जलाने चाहिये। कुछ बिना जले दीपकों को थाली में रख देना पर्याप्त है। इन के पास अग्नि जला कर (हो सके तो हवन कर के) इस के प्रकाश में बुझे हुए दीपकों को देखना चाहिये। फिर लक्ष्मीवर्धक कोई व्रत ग्रहण करने चाहियें, जैसे, विदेशी चीज नहीं लूंगा, खादी ही पहिनूंगा, नियम से सूत कातूंगा, गौ का ही दूध पीऊंगा इत्यादि।

फिर गांव के सब लोग या मोहल्ले के सब लोग मिल कर सादे से सादा भोजन करें।

(8) रामायण को दोहराना

यदि हम इस तरह से इस पर्व को कुछ काल मनायेंगे तो हम इस दिन दीपावली जलाने की पद्धति को भी फिर शीघ्र ले आयेंगे। यदि दीपावली का रामायण से कुछ संबन्ध है तो अपनी दीपावली को पुनरुज्जीवित करने के लिये हमें फिर रामायण को दोहराना होगा। समुद्र

लिखता - बैजयन्ती

पर गयी सीता को जब राम पुन अयोध्या लाये थे और रामराज्य प्रारम्भ हुआ था तो हर्ष से भरे अयोध्या ने दीपावली रची थी। हम ने सुन रखा है कि राम विष्णु थे और सीता लक्ष्मी थी। अब जब विष्णु, अर्थात हमारा संगठन रूप पक्ष (पक्षो विष्णु) उन लक्ष्मी देवी को समुद्र पार से लौटा लाने में सफल होगा और राम राज्य (भारत का स्वराज्य) स्थापित होगा तभी हम अपने हृदयों से भरे आनन्दमय प्रकाश को जो स्वभावत बाहर दीपावली रूप में निकालेंगे वही दीपवाली दीपावली होगी। उस दिन रात्रि यह अमावस दीपावली से दीपित हो जायगी। तब तक तो मैं इस दिन को 'दीपावली' न पुकार कर लक्ष्मी पूजा के दिन या कार्तिकी अमावस कहना ही प्रिय अनुभव करता हूँ।

हे जगद्‌नारायण इस अमावस को उजेली कर
हे भारतलक्ष्मी इस अमावस को उजेली कर
हे प्रत्येक भारतवासी की आत्मा, इस अमावस को उजेली कर॥

केलौग-पैक्ट

मनुष्य जाति ने अनादिकाल तक पारस्परिक झगड़ों का निर्णय करने के लिए युद्ध का प्रयोग किया है पर अब उसे युद्ध की विकरालता का ज्ञान हो गया है। गत महायुद्ध के कारण आज तक — १० वर्ष बाद तक भी — यूरोप की स्थिति बहुत खराब है। यातायात, विनिमय, व्यापार और व्यवसाय को धक्का पहुंचता है, मुद्रा पद्धति को ठेस पहुंचती है, आर्थिक स्थिति खराब हो जाती है। इस प्रत्यक्ष फल को देखकर संसार में नई धारा चली है। वह युद्ध के स्थान पर किसी अन्य वस्तु को निर्णायक बनाना चाहती है। राष्ट्रसंघ की स्थापना में Arbitration और conciliation के सिद्धान्तों को माना गया है पर मनुष्य का दिमाग यहीं तक न ठहरा — उसने दूसरी ओर राह पकड़ी। अब मनुष्य समाज के हृदय में युद्ध के प्रति इतनी घृणा का भाव उत्पन्न हो गया है कि वह युद्ध को गैरकानूनी करार देना चाहता है। १९२२ के मई मास में ३० राष्ट्रों ने मिल कर यह प्रस्ताव पास किया कि वे कभी आक्रमणक (aggressive) युद्ध नहीं करेंगे। १९२४ के सितम्बर मास में राष्ट्रसंघ की एसेम्बली ने एक प्रोटोकल स्वीकृत किया। इसमें युद्ध के स्थान पर पंचायत को पारस्परिक झगड़ों का निर्णायक बनाया गया। १९२५ में लोकार्नो-पैक्ट पास हुआ। इसमें फ्रांस, जर्मनी और बेल्जियम ने शपथ ली कि वे आपस में कभी युद्ध न करेंगे। सब झगड़ों का निर्णय पंचायत से करवावेंगे। १९२७ में हवाना में "पान-अमेरिकन-कांग्रेस" ने युद्ध को राष्ट्रीय-नीति के तौर पर बहिष्कृत किया था। परन्तु १९२८ की २७ अगस्त को पेरिस में दुनिया के १५ राष्ट्रों ने एक पैक्ट — जिसमें युद्ध को गैरकानूनी करार दिया गया था — पर हस्ताक्षर किए। रूस, टर्की आदि दो तीन राष्ट्रों को छोड़ कर शेष सब राष्ट्र इस "अन्तर्राष्ट्रीय-युद्ध-संन्यास-सन्धिपत्र" पर हस्ताक्षर कर चुके हैं। कहा जाता है कि संसार के इतिहास में

ईसा की उत्पत्ति के बाद यदि किसी अन्य काल की ओर इशारा किया जा सकता है तो वह यह सन्धि-पत्र है। अब प्रश्न उपस्थित होता है कि जिस पैक्ट को इतना अधिक महत्व दिया जा रहा है - उसका स्वरूप क्या है? हम उसे अपने पाठकों के लाभार्थ नीचे देते हैं।—

(i) संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के राष्ट्रपति
(ii) ग्रेटब्रिटेन, आयर्लैण्ड और समुद्रपारवर्ती ब्रिटिश जनपदों के राजा तथा भारत के शाहंशाह
(iii) जर्मन-साम्राज्य के राष्ट्रपति
(iiii) इटली राष्ट्र के नरेश
(v) फ्रांस जनतन्त्र के सभापति
(vi) जापान-राष्ट्र के शाहंशाह

अत्यन्त गम्भीरता पूर्वक यह अनुभव करते हैं कि वे अत्यन्त उच्च आसन पर आसीन हैं; इसलिए उनका एक बड़ा भारी कर्तव्य है - और वह कर्तव्य यह है कि आजकल इन देशों में जो सौख्य शान्ति मय सम्बन्ध हैं, वे यथावत् बने रहें। यही पर्याप्त नहीं है आवश्यकता इस बात की भी है कि (उपर्युक्त छः राष्ट्रों के अधीश्वर) संसार के किसी भी राष्ट्र के बीच लड़ाई न होने दें, इस बात की इच्छा प्रकट करते हैं कि वे अपने कार्य द्वारा यह प्रकट करदें कि वे भविष्य में लड़ाई को राष्ट्रीय नीति का आवश्यक साधन बनाने की ओर निन्दा करते हैं और वे आगे लड़ाई का परित्याग करके अन्तर्राष्ट्रीय युद्धों को शान्तिमय उपायों से निपटा लिया करें।

इस बात के लिए आशान्वित हैं कि उनके उदाहरण से प्रोत्साहित होकर संसार के अन्य सब राष्ट्र इस मनुष्यता पूर्ण उपाय में योगदान करेंगे और इस वर्तमान सन्धि की शर्तों के अनुसार कार्य करते रहने से (सब राष्ट्र) अपने अपने जनसमूह को इस सन्धि की लाभकारी शर्तों के अन्तर्गत लाने का प्रयत्न करेंगे और इस प्रकार संसार के सब राष्ट्रों को वे युद्ध-सन्यास के सद्योग को पूर्ण सफल बनाने के लिए जुट सकेंगे।

यह निश्चय करते हैं कि एक सन्धि की जाय और इस काम के लिए उन्होंने अपने अपने प्रतिनिधि इस प्रकार नियुक्त किए हैं:—

(i) संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के राष्ट्रपति
(ii) ग्रेटब्रिटेन, आयर्लैण्ड और समुद्रपारवर्ती ब्रिटिश जनपदों के राजा तथा भारतवर्ष के शाहंशाह

(iii) जर्मन साम्राज्य के राष्ट्रपति
(iv) इटली राष्ट्र के नरेश
(v) फ्रांस जनतन्त्र के सभापति
(vi) जापान-राष्ट्र के सम्राट्

इन प्रतिनिधियों ने निम्नलिखित सन्धि की शर्तें स्वीकृत की हैं :—

सन्धिपत्र की प्रथम धारा—

"इस सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर करने वाले राष्ट्र अपने अपने जनसमूहों के नाम पर अन्तर्राष्ट्रीय विवादों को [illegible] के लिए लड़ाई के आश्रय लेने की घोर निन्दा करते हैं और वे राष्ट्रीय नीति के तौर पर एक दूसरे के प्रति युद्ध के प्रयोग करने का सर्वथा परित्याग करते हैं।

द्वितीय धारा—

"इस सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर करने वाले राष्ट्र इस बात की प्रतिज्ञा करते हैं कि वे प्रत्येक विवादग्रस्त विषय का समाधान का निर्णय सिवाय शान्त उपायों के और किसी भी प्रकार नहीं करेंगे, फिर चाहे वह झगड़ा या विवाद किसी भी तरह का क्यों न हो और उसका आविर्भाव चाहे जैसे भी क्यों न हो।

तृतीय धारा—

"यह सन्धि प्रस्तावना में लिखे राष्ट्रों के शासन-विधानों के अनुसार स्वीकृत होगी। जब इन राष्ट्रों की स्वीकृति वाशिंगटन के स्टेट डिपार्टमेंट [illegible] के पास पहुँच जायगी, तब से यह कार्यरूप में परिणत होगी।

"कार्यरूप में परिणत करने के बाद भी आवश्यक समय तक संसार के अन्य राष्ट्र भी इस पर हस्ताक्षर कर सकते हैं।

"१९२८ की २७ अगस्त को पेरिस में हस्ताक्षर हुए।"

हमने अपने पाठकों के सम्मुख सन्धिपत्र के स्वरूप को रख दिया है, अब इसके ऐतिहासिक स्वरूप पर विचार करेंगे। १९०८ की १० फरवरी को फ्रांस और अमेरिका के बीच [illegible] सन्धि की थी। इसका उद्देश्य यह था कि यदि कभी दोनों राष्ट्रों में कोई विवाद या झगड़ा उपस्थित हो, तो उसे एक कमीशन तय कर दिया करे। दोनों एक दम लड़ाई के लिए तैयार न हो जावें। इसे "रूट कन्वेंशन" कहा जाता है। इसकी अवधि १९२८ की २७ फरवरी तक थी। फ्रांस ने देखा कि सन्धि का कार्यकाल समाप्त होने वाला है इसलिए एक नई सन्धि करनी चाहिए।

उन दिनों अमेरिका में युद्ध को गैरकानूनी करार देने की ओर लोगों का ध्यान गया था। सिनेटर बोराह इसका प्रवर्तक था। इसलिए 1-4-27 को फ्रांस के परराष्ट्र सचिव श्री ब्रियां ने असोशिएटेड प्रेस द्वारा अमेरिकन जनता के सामने यह प्रस्ताव रखा कि फ्रांस खुले तौर पर अमेरिका के साथ युद्ध को गैरकानूनी करने की संधि करना चाहता है। यदि इस प्रस्ताव को अमेरिका स्वीकार कर लेता तो फ्रांस को बहुत लाभ था। उसे किसी भी युद्ध में अमेरिका का डर न रहता - यद्यपि अन्य राष्ट्रों का हो सकता था। फ्रांस ने कई मध्य यूरोपीय देशों से सैनिक-संधियां की हुई थीं - उनमें अमेरिका दखल नहीं दे सकता था। यदि राष्ट्रसंघ फ्रांस को आक्रमणकारी भी उद्घोषित कर दे तो भी अमेरिका फ्रांस का विरोध न कर सकता था - क्योंकि अमेरिका संधि के पाश में बंधा था। इन लाभों को देख कर फ्रांस का यह प्रस्ताव किया गया था, पर अमेरिका का परराष्ट्र-विभाग भी सीधा-सादा न था। उस ने अपने मार्ग में इन अड़चनों को देखा - इसलिए उसने फ्रांस के प्रस्ताव को स्वीकृत नहीं किया। पर इसके स्थान पर फ्रांस से कहा कि दो राष्ट्रों की राष्ट्रों की युद्ध-सम्बन्ध-संधि के स्थान ... यह बहुत से राष्ट्र इसमें सम्मिलित हों तो अच्छा हो। फ्रांस ने किसी परोपकार के भाव से प्रेरित होकर तो अपना प्रस्ताव रखा न था इसलिए वह कैलाग के प्रस्ताव को मानने में ननुनच करने लगा। उसका कहना था कि अमेरिका सब प्रकार के रक्षणात्मक युद्धों को भी - युद्धों को गैरकानूनी करार देना चाहता हो पर फ्रांस ने कई राष्ट्रों से ऐसी संधियां की हुई हैं कि जिनसे बहुत राष्ट्रों पर आक्रमण होने की अवस्था में सहायता देने के लिए बाधित हो। इन संधियों के आधार पर यूरोप की शान्ति स्थित है। यह संधिपत्र उन संधियों को नष्ट करता है - अर्थात् यूरोप की शान्ति को भंग करता है - इसलिए फ्रांस अमेरिका के प्रस्ताव को स्वीकृत करने में असमर्थ हो। दोनों देशों में लिखापढ़ी जारी रही। फ्रांस ने भी अपना एक अलग संधिपत्र बनाया। इसमें रक्षणात्मक युद्धों को उचित समझा

गया था। उसका कहना था कि यदि कोई राष्ट्र युद्ध त्याग ... पत्र पर हस्ताक्षर करने वाले राष्ट्र पर आक्रमण कर दे तो आक्रान्त राष्ट्र को यह अधिकार होना चाहिए कि वह अपनी रक्षा के लिए युद्ध कर सके। इसके अतिरिक्त उसका कहना था कि केवल बड़े राज्य ही नहीं अपितु सब छोटे राष्ट्रों को भी इसमें सम्मिलित करना चाहिए। जब तक सारे राष्ट्र एक साथ इस सन्धि को स्वीकृत न करलें, इसे कार्यरूप में परिणत न किया जाय। यदि एक राष्ट्र इस सन्धि को तोड़ दे, तो अन्य राष्ट्रों को भी इस सन्धि से मुक्त होने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए। फ्रांस के सन्धि पत्र में इन बातों का स्पष्ट तया उल्लेख था। इसका अभिप्राय यह है कि फ्रांस सन्धि पत्र को एक मात्र कागज का टुकड़ा - जिसका कुछ मूल्य नहीं - के रूप बनाना चाहता था। अमेरिका ने फ्रांस के प्रस्ताव पर कोई ध्यान न देकर सब बड़े राष्ट्रों के पास अपना सन्धि पत्र भेज दिया। ब्रिटेन को भी यह भेजा गया था। वहां से उत्तर आया कि फ्रांस और अमेरिका के प्रस्तावों में कोई मतभेद नहीं है।

ब्रिटेन का कहना था कि संसार के कई ऐसे प्रदेश हैं, जिनकी रक्षा करना ब्रिटिश-साम्राज्य की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। इन प्रदेशों में किसी दूसरे देश के हस्तक्षेप को ब्रिटिश सरकार सहन नहीं कर सकती। यदि उन पर आक्रमण होगा तो ब्रिटेन उस प्रदेश की रक्षा के लिए सदा तत्पर रहेगा। यदि ब्रिटिश सरकार को इन प्रदेशों में पूर्णतया हस्तक्षेप करने का अधिकार दिया जाय तो वह इस सन्धि को स्वीकार करेगी। जब यह उत्तर अमेरिकन परराष्ट्र-सचिव श्री कैलोग के पास पहुंचा तो उन्होंने इसे सन्तोषप्रद समझा। अमेरिका स्वयं शान्ति का वास्तविक अभिलाषी नहीं है - यह सब ढकोसला था वह अपने पैक्ट को सबसे स्वीकृत कराकर शान्ति का दूत बनना चाहता था। इसके अतिरिक्त वह मुनरो द्वारा स्थापित सिद्धान्त को तोड़ना भी नहीं चाहता था। - इसलिए उसने अपने एक भाषण में स्पष्ट तौर पर स्वीकार किया कि प्रत्येक राष्ट्र अपनी

रक्षा के लिए उचित उपायों का प्रयोग कर सकता था। उसने स्पष्ट शब्दों में संरक्षण (Reservation) की घोषणा की। अब किसी भी देश का कोई झगड़ा या हस्तक्षेप करने से उसका कुछ बिगड़ता तो था नहीं। इसके अतिरिक्त हस्ताक्षर न करने से दुनिया में बदनामी होने का डर अवश्य था। इसलिए १५ राष्ट्रों ने इस पर हस्ताक्षर कर दिए और आगे दो एक राष्ट्रों को छोड़कर शेष सब ने इस पर हस्ताक्षर कर दिए थे।

इस पैक्ट से प्रत्येक देश को लाभ था। छोटे राष्ट्र समझते थे कि राष्ट्रसंघ का कोई भी निर्णय तब तक बाध्य नहीं किया जा सकता जब तक उसमें अमेरिका सम्मिलित न हो। वे समझते थे कि फ्रांस और ब्रिटेन अपने स्वार्थ के लिए राष्ट्रसंघ का उपयोग करते हैं। यदि अमेरिका राष्ट्रसंघ में आजाय तो इनकी कुछ न चले और इस झगड़े से हम छोटे देश भी कुछ लाभ उठा सकें। इसलिए वे इसके हिमायती थे। इस संधिपत्र का जन्मदाता अमेरिका किसी निःस्वार्थ भाव से संसार की सेवा करने में लगा था। उसके भी अपने स्वार्थ थे। वह सारे संसार में अपना आर्थिक साम्राज्य स्थापित करना चाहता था। दक्षिण तथा मध्य अमेरिका के राष्ट्र तो उसके पंजे में थे ही, यूरोप को भी वह अपना शिकार बनाने की सोचने लगा। उसका यही उपाय था। संसार में सबसे अधिक धनी देश अमेरिका है। इन देशों में अपने धन की खपत [illegible] उसके लिए आवश्यक [illegible]। सब राष्ट्र उससे आर्थिक सहायता लेते हैं। गत महायुद्ध के समय उसने मित्र-राष्ट्रों को आर्थिक सहायता दी थी। ब्रिटेन और फ्रांस उसके ऋणी [illegible] हैं। आर्थिक साम्राज्यवाद के जाल को बिछाने के लिए इस प्रकार के ढोंग की आवश्यकता थी। इंग्लैण्ड को भी इस संधिपत्र से अनेक लाभ थे। इस समय सारे संसार में सब से बड़ा साम्राज्य ब्रिटेन का था। यदि कोई राष्ट्र अपना साम्राज्य बढ़ाना चाहेगा तो वह अवश्य ब्रिटेन की कीमत पर होगी। उसे ब्रिटेन से युद्ध

करना पड़ेगा। यदि वह अपने विशाल साम्राज्य की रक्षा करना चाहता है तो उसके लिए आवश्यक है कि वह युद्ध की राष्ट्रीय नीति के तौर पर निन्दा करे। इसका लाभ यह है कि इस समय तक ब्रिटेन ही सबसे अधिक शक्तिशाली नाविक देश रहा है। इस समय ब्रिटेन और अमेरिका में नौ-प्रतिस्पर्धा जारी है। उसे शान्त करने के लिए इस प्रकार के पैक्ट की आवश्यकता थी। इसके अतिरिक्त इस समय [illegible] से ब्रिटेन का प्रभाव [illegible] ले इंग्लिश देशों की मित्र [illegible] उसकी पुनः स्थापना में सहायक हो सकती थी। ब्रिटेन और अमेरिका में दक्षिण अमेरिका के सम्बन्ध में झगड़े होते रहते हैं- उनके सुलझाने में मदद मिल सकती थी। जर्मनी को भी इस पैक्ट पर हस्ताक्षर करने से [illegible] ही थी। उसके शस्त्र छीने जा चुके हैं। वह निःशस्त्र हो चुका है। सम्मान का स्वप्न दूर हो चुका था। उसके लिए शान्ति ही आवश्यक है। इससे ही उसकी स्थिति सुधर सकती थी। इसीलिए उसने सबसे पहले [illegible] पैक्ट को अपनाया था। सन्धि-पत्र की कैलॉग द्वारा की गई व्याख्या से फ्रांस भी सन्तुष्ट है। किसी राष्ट्र को कोई नुकसान नहीं तो पैक्ट पर हस्ताक्षर करने में [illegible] हानि है।

अब तक हमने पाठकों के सम्मुख [illegible] उसके इतिहास और उसकी स्वीकृति के [illegible] का उल्लेख किया था पर अब प्रश्न यह रह जाता है कि क्या इससे कुछ लाभ भी हो सकेगा क्या दुनिया से लड़ाई उठ जायगी? इस प्रश्न का वही [illegible] सा उत्तर है न इससे लड़ाई का अन्त होना है और न किसी [illegible] पूर्ण कार्यक्रम का प्रदर्शन। इस पैक्ट में अनेक दोष हैं। इस पैक्ट में युद्ध को गैरकानूनी ठहराया गया है। पर विभिन्न राष्ट्रों में जो पारस्परिक झगड़े उठ खड़े होंगे- उनका कुछ भी इलाज नहीं बताया गया है। युद्ध की निन्दा करना उचित है [illegible] उसके स्थान पर किसी स्थानापन्न की नियुक्ति होना आवश्यक थी। इस पैक्ट में इस बात का सर्वथा उल्लेख नहीं कि राष्ट्रों के पारस्परिक झगड़ों को कौन सुलझाए? इस सबसे बड़ी अन्तर्राष्ट्रीय पंचायत राष्ट्रसंघ था। अमेरिका उसका प्रभुत्व स्वीकार नहीं कर सकता। राष्ट्रसंघ या

या तदतिरिक्त संस्था का पैक्ट में उल्लेख नहीं किया गया – जो कि उत्पन्न झगड़ों का निर्णय करता। पैक्ट में कोई-झगड़ा-पर कुठाराघात किया गया है पर कारण- युद्ध को उत्पन्न करने वाले कारणों - पर नहीं। इसके अलावा इस पैक्ट में आत्मरक्षार्थ युद्धों का विधान किया गया है, पर प्रश्न यह है कि अमुक युद्ध आत्मरक्षार्थ है या नहीं - इस का निर्णय कौन करेगा? अब तक कोई भी राष्ट्र इस बात को स्वीकार नहीं करता कि उसने आक्रमक युद्ध किए थे सभी का यह रोना है कि उन्हें अपनी स्थिति पर आशंका थी, इस लिए अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए ही उन्हें इस उपाय का आश्रय लेना पड़ा थी। जब तक आक्रमक और आत्मरक्षार्थ किए गए युद्धों की स्पष्ट परिभाषा नहीं की जाती तब तक इस सन्धि पत्र का कोई लाभ नहीं था।

यदि वास्तव में ये राष्ट्र शान्ति के उपासक हैं तो इन्हें अपनी सेना कम कर देनी चाहिए शीघ्रता से निःशस्त्रीकरण की ओर अग्रसर होना चाहिए था। यहां अवस्था ही दूसरी थी निःशस्त्रीकरण के स्थान पर जोर शोर से शस्त्रीकरण हो रहा था। अमेरिका ने तीन अरब डालर का नौसेना के बनाने का प्रोग्राम पास किया था। अमेरिकन राष्ट्रपति कूलिज का कहना है कि राष्ट्रीय नीति के तौर पर युद्ध त्यागना और निःशस्त्रीकरण में कोई सम्बन्ध नहीं है, क्योंकि इस भय से दूसरे देश भी अपना काम कर रहे हैं। फ्रांस भी बड़ी तेजी से नौसेना बढ़ा रहा था एक अरब के खर्चे से वह सम्पूर्ण समुद्री किनारे पर जहाजों की कड़ी बांध देगा। इंग्लैण्ड भी चुप नहीं था वह नौसेना में अपने प्रतिस्पर्धी अमेरिका को पछाड़ना चाहता था इसलिए वह चुपचाप फ्रांस से भी सन्धि कर रहा था। कहने का अभिप्राय यह है कि ये सब देश बेईमान हैं। मुंह में राम बगल में छुरी वाली कहावत चरितार्थ हो रही थी। जो अमेरिका तीन ~~अरब डालर~~ शान्ति का नाम लेकर तीन अरब डालरों से जहाज बनाने का प्रोग्राम प्रारम्भ करना चाहता है, आवश्यकता पड़ने पर व्यापारी जहाजों को जंगी जहाजों के रूप में परिणत करने के लिए बाधित करता है, जो ऐसी,

निकारागुआ तथा दक्षिणी अमेरिका को अपने पंजे में किए हुए है, क्या उसे सच्चा शान्ति का दूत समझना बुद्धिमानी है? जो इंग्लैण्ड पैलिस्टाइन, इराक, मिश्र, और हिन्दुस्तान में सैन्य बल से शासन कर रहा है, जो सींगापुर में जहाजी बेड़ा बना रहा है, उसकी ईमानदारी में विश्वास करना [illegible] को धोखा देना है। जो फ्रांस सारे यूरोप की अशान्ति का कारण है, सैनिक सन्धियां करता है, सैनिक शक्ति बढ़ाता है, जर्मनी पर अत्याचार करता है उसकी सच्चाई पर विश्वास करना अपने को पागल साबित करना है। जो इटली सदा साम्राज्य का स्वप्न लिया करता है, जो जापान मंचूरिया [illegible] दांत गाड़े हुए है, इसकी शान्ति-उपासना पर [illegible] विचार करना मूर्खता है। राष्ट्र संघ धूल में मिल जायगा। इससे किसी उद्देश्य की सिद्धि न होगी। राष्ट्र केवल मात्र शान्ति [illegible] एक पग भी यदि सच्ची शान्ति की स्थापना करनी है तो निम्न बातों का होना आवश्यक है। —

(1) अन्तर्राष्ट्रीय कानून.

(2) युद्ध को गैरकानूनी करार देना.

(3) Compulsory conciliation

(4) पंचायत

(5) जो राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय नियमों को [illegible] या युद्ध का आश्रय ले उसका पूर्ण बहिष्कार।

(6) निःशस्त्रीकरण।

निरशस्त्रीकरण

प्राचीन काल से लेकर अर्वाचीन काल तक मनुष्य जाति ने अपने झगड़ों का फैसला युद्ध करके ही किया है। आजकल प्रत्येक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र से अपनी रक्षा करने के लिये जलीय स्थलीय और आकाशीय शक्ति का उपयोग करता है। प्रत्येक सरकार के आन्तरिक और बाह्य संगठन का यह मुख्य सिद्धान्त बन गया है। देश की आन्तरिक अव्यवस्था को रोकने के लिये पुलिस का प्रबन्ध है। दूसरे देशों के आक्रमण से अपनी रक्षा करने के लिये हथियार हैं। इन हथियारों पर प्रजा का अतुलित धन खर्च होता है। पर साधारण जनता का युद्धों में कभी हाथ नहीं होता। जनता शान्तिप्रिय हुआ करती है। प्रत्येक राष्ट्र के कुछ महत्वाकांक्षी लोग अपनी महत्वाकांक्षी की पूर्ति के लिये देश के जन और धन को बलिदान कर देते हैं। गत महायुद्ध में यही हुआ। फ्रांस, रूस, जर्मनी, और इंगलैण्ड इन सब देशों के कुछ ही महत्वाकांक्षी लोग दूसरों का पराभव कर अपनी साम्राज्य लिप्सा पूर्ण करना चाहते थे। इन लोगों ने आक्रमणों को छूट दी। आक्रमणों का वर्णन आती होता था। दूसरे देशों के प्रति जनता में विष उगला जाने लगा। उनके भय अविश्वास और आतंक का भूत खड़ा हो गया। अब शान्तिप्रिय जनता ने भी इन लोगों का साथ देना शुरू किया। प्रायः कहा जाता है कि शस्त्रीकरण इस लिये किया जाता है कि कोई राष्ट्र हम पर हमला न कर सके पर अब तक जितने युद्ध हुए हैं वे सब के सब आक्रमणकारी (Aggressive) ही थे। संरक्षणात्मक (Self-defensive) नहीं। वास्तव में इन अस्त्र शस्त्रों से ही जितनी रक्षा का भाव लगाया जाता है — इस संसार को भय, त्रास का और आतंक का आगार बना रखा है।

निरशस्त्रीकरण क्यों हो —

१. कहा जाता है कि शस्त्रीकरण का उद्देश्य महत्वाकांक्षी राजाओं के आक्रमणों से अपने देश की रक्षा करना है। शस्त्रीकरण को युद्ध का विरोधी समझा जाता है पर बात इसके सर्वथा विपरीत है। शस्त्रीकरण वास्तव में युद्ध मिटा सकता नहीं। क्योंकि युद्धोपयोगी औजार जब आयुध में हो जाते हैं उसी तरह जहाँ शस्त्र हुए कि उनकी झंकार आरम्भ हुई। युद्ध देवी का तांडव आरम्भ हो जाता है। गत महायुद्ध इसका वास्तव में बड़ा प्रमाण है।

२. दूसरा हेतु यह है कि शस्त्रीकरण में बहुत अधिक रुपया खर्च होता है। पर साल अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, इटली और जापान ने २ अरब डालर के लगभग शस्त्रास्त्र पर खर्च किया है। गत महायुद्ध में धन का बहुत अधिक अपव्यय हुआ है। अर्नेस्ट बोगर्ट का कहना है कि सृष्टि के आदि से लेकर युद्ध आरम्भ होने तक जितना सोना और चाँदी निकला है उससे १०० गुना धन इस युद्ध में हुआ है। यदि इतना धन शिक्षा, व्यवसाय, और कृषि आदि पर खर्च किया जाता तो जनता का कितना कल्याण होता।

३. युद्ध के बाद जो नवीन देश बने हैं उन्होंने अपनी रक्षा के लिये शस्त्रास्त्र बनाने शुरू,

निजाम जैअगानी

कर रखते हैं। इससे सत्ता और विशेषतया यूरोप का वायुमण्डल भय, आशंका, अविश्वास और आतंक मय बन जाता है जो कि शान्ति की प्राप्ति के लिये अहितकारी है।

४. जब तक किसी भी राष्ट्र के पास अस्त्र-शस्त्र हैं तब तक सदा अविश्वास बना रहेगा, कमजोर देश को हमेशा डर रहेगा कि कहीं बलवान राष्ट्र युद्ध छेड़ न दे जाय। इस प्रकार एक दूसरे की होड़ से अस्त्र-शस्त्रों की वृद्धि होती रहेगी कमी नहीं। इसी का परिणाम है कि आज जगत् में 1913 से कहीं अधिक अस्त्र शस्त्र विद्यमान हैं। सी डी बर्न्स कहता है कि आज कल महायुद्ध से पहले की अपेक्षा कहीं अधिक सैनिक हैं, युद्ध और अस्त्र शस्त्र जहाजों का निर्माण हो रहा है। इनमें भी प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है। यह प्रतिस्पर्धा और संघर्ष सदा ही शान्ति में बाधक है।

५. शस्त्रास्त्र बनाने का काम धनी लोगों का है। यदि युद्ध होते रहें तो अधिक होकर इनसे लाभ लेते रहेंगे तब इनको मुनाफा होगा — अपनी कुटिल पंथी में रहेंगे। [illegible] हैं ये लोग [illegible], सोल्जर और प्रजा को अपने वश में किये रहते हैं। आज कल की साम्राज्यवादी सरकारें पूंजीपतियों के इशारे पर नाचती हैं। इनका पूरा [illegible] आर्म्स इण्डस्ट्री का धन्धा है। इन्हीं लोगों के हाथ में अखबार हैं। ये अखबार प्रजा के विरुद्ध उगलते रहते हैं और प्रजा को अपने पक्ष में मिलाने का प्रयत्न करते हैं। पूंजीपतियों के प्रचार से नासमझ होकर लोग युद्धों में कूद जाते हैं और भोली भाली जनता भी इसका समर्थन करते हैं।

६. जब तक देशों के पास शस्त्रास्त्र रहेंगे तब तक स्वतन्त्रता समानता और भ्रातृ-भाव का स्वर्ण युग इस जगत् में आ ही नहीं सकता। साम्राज्यवादी लोग हमेशा अपने लाभ के लिये दूसरों पर हमला करते रहेंगे। आर्थिक साम्राज्यवाद ने अफ्रीका, एशिया, और दक्षिणी अमेरिका को परतन्त्रता में जकड़ दिया है।

= निःशस्त्रीकरण का अभिप्राय =

निःशस्त्रीकरण का एक अभिप्राय यह हो सकता है कि शस्त्रास्त्रों को बिल्कुल उड़ा दिया जाय। अपने देश के आन्तरिक मामलों में भी उनका उपयोग न किया जाय। दूसरा मत यह हो सकता है कि शस्त्रीकरण के आधुनिक दौड़ को रोकने के लिये कोई निश्चित अनुपात निर्धारित कर दिया जाय। पर निःशस्त्रवादी लोग दूसरी शर्त को कदापि स्वीकार न करेंगे क्योंकि शस्त्रीकरण का मतलब यह होगा कि फिर युद्ध छिड़ जाय। व्यावहारिक राजनीतिज्ञ लोग अपनी अनुभूत कठिनाइयों के कारण इनके द्वारा प्रथम निर्णय को नहीं मानेंगे।

- प्रधान शक्तियों की नीति —

अमेरिका अब मनुष्यों के समान सिद्धान्तों को मानने वाला नहीं है। वह साम्राज्यवादी बन गया है। उसने नभ-यानों की ओर ध्यान देना प्रारम्भ कर दिया है। सेना की वृद्धि और मरम्मत तथा अपटूडेट बनाने के लिये की गई अरब डालर सीनेट ने स्वीकार किये हैं। 1938 से अमेरिका ने नई पद्धति का सहारा लिया है जिसके अनुसार शस्त्रास्त्र तथा युद्ध से सम्बन्ध रखने वाले सब प्रकार के व्यवसाय आदि युद्धों के समय सरकार के अधीन होंगे।

- इंग्लैण्ड —

ब्रिटेन की नौ शक्ति बहुत प्रबल है। इस समय अमेरिका इसका मुकाबला कर रहा

है कि निःशस्त्रीकरण सम्भव है। वह क्रूजर को कम करना नहीं चाहता क्योंकि उसका कहना है कि व्यापारिक मार्ग और उपनिवेश मैण्डेटस तथा अन्य भारत आदि देशों की रक्षा के लिये वह अपनी नौ शक्ति को कम नहीं कर सकता। उक्त हित राष्ट्रसंघ में भाषण देते हुए आस्टन चेम्बरलेन ने स्पष्ट कह दिया था कि ब्रिटेन पहले अपने साम्राज्य की रक्षा देखेगा फिर दूसरों की। सर रोबर्ट सेसिल - जो कि जिनेवा में ब्रिटेन के प्रतिनिधि होकर गये थे - ने अपने पद से इस्तीफा देते हुए कहा था कि ब्रिटेन ने जो कुछ कुछ कान्फ्रेन्स के मार्ग में रोड़े अटकाये हैं तो सेना के साथ ही साथ वायवीय शक्ति को बढ़ाने के लिये भी उद्यत कर रहा है।

- फ्रांस और इटली -

वाशिंगटन की कान्फ्रेन्स में इन की शक्ति बांध दी गई है। अतः वे और अधिक कम करना नहीं चाहेंगे।

युद्ध अनिवार्य था —

वर्तमान जगत की नीति को देखते हुए यह कहना मूर्खता होगी कि पूर्ण निःशस्त्रीकरण कर दिया जाय। शस्त्रीकरण को रोकने के लिये हमारे पास अनेक साधन ही हैं। किसी देश की आबादी, मानव शक्ति और अर्थ को देखकर इस का निर्णय करना उचित है। क्योंकि प्रत्येक राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय निश्चय को मान कर भी गुप्त तैयारी और भर्ती कर सकता है। हम ऊपर लिख चुके हैं कि शस्त्रीकरण का अभिप्राय जलीय स्थलीय और वायवीय शक्ति की अभिवृद्धि या बढ़ना है। हम कोई निश्चित अनुपात नहीं रख सकते। यदि एक देश द्वीप है तो उस के लिये स्थलीय सेना की महत्ता न होगी। वह तो नौ और वायवीय सेना पर ध्यान देगा। इसी प्रकार एक स्थल राष्ट्र स्थलीय शक्ति की ओर अधिक ध्यान देगा। वायवीय सेना और शस्त्र तो सब के लिये मुख्य हैं। इसी लिये प्रधान राष्ट्रों में होड़ लग रही है। इस के साथ ही यदि किसी देश की आबादी अधिक है और व्यवसायिक उन्नति बहुत अधिक है तो भी वह देश, यदि साधारण अवस्था में उसकी बहुत कम सैनिक तय्यारी है - युद्ध के समय अपनी कमी पूरी कर सकता है।

इस समय वायवीय शक्ति की वृद्धि हो रही है वह दो प्रकार की है (1) व्यापारिक (2) युद्ध सम्बन्धी। विज्ञान के आविष्कारों के कारण थोड़े ही समय में बदलते व्यापारिक वायुयान युद्धयानों के रूप में बदले जा सकते हैं। यही अवस्था नौ शक्ति की भी है। इस में भी व्यापारिक और लड़ाकू जहाज हैं। व्यापारिक जहाजों को शीघ्र ही लड़ाकू जहाजों में बदला जा सकता है। जब महायुद्ध में ब्रिटेन के व्यापारी जहाज लड़ाके बन गये थे।

कई बार रसायन शास्त्र सफलता पड़ने पर इस माल निर्माण करने वाले भी बनाए जा सकते हैं।

इनके अतिरिक्त राजनीतिज्ञ लोग भी अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में अपने देश की अनुकूलता रखने के लिये उधेड़बुन में लगे रहते हैं।

प्रयत्न —

युद्ध के बाद अमेरिकन राष्ट्र प्रति हार्डिङ्ग के निमन्त्रण पर वाशिंगटन में निःशस्त्रीकरण परिषद् का अधिवेशन हुआ। इसमें अमेरिका-

विजय-वैजयन्ती

ब्रिटेन अमेरिका जापान ने अपनी नौ सेना का अनुपात 5:5:3 रक्खा। सबमेरिन और डिस्ट्रोयर की गिनती रोका गया। इन शर्तों को तोड़ कर बढ़ाये, इस के बाद जिनेवा प्रोटोकल का निर्माण किया गया। पर मजदूरों के शासन काल के समाप्त होते ही इस की इमारत गिर पड़ी।

यूरोप की शान्ति की रक्षा के लिये जिनेवा प्रोटोकल का निर्माण किया गया। इसके कौंसिल की सन्धियों को स्वीकृत किया गया और सीमा और रक्षा की गारंटी दी गई। [illegible] झगड़ों को निपटाने का काम हेग के न्यायालय को दिया और राजनैतिक झगड़ों को हल करने का काम [illegible] शान्ति कमीशन का था।

राष्ट्र संघ ने भी निःशस्त्रीकरण और शान्ति में हाथ बटाया। [illegible] आदि सिद्धान्तों का परित्याग कर दिया गया। इन की सुरक्षा की गारंटी। [illegible] कोई भी सन्धि संघ के [illegible] के देखे बिना जायज नहीं मानी जा सकती। यदि किसी राष्ट्र पर कोई आक्रमण करे तो उस की सुरक्षा का भार संघ पर आता है। अन्तर राष्ट्रीय पुलिस का निर्माण हुआ। इसीतरह इन झगड़ों के फैसला करने का काम संघ ने अपने ऊपर ले लिया।

समस्या का हल —

कानून से युद्ध इस लिये नहीं हटते क्योंकि संसार में [illegible] है। पर वास्तविक बात तो यह है कि मनुष्यों में जब तक उनके पूर्वजों की पाशविक प्रवृत्तियां विद्यमान हैं तभी तक उन्हें लड़ने के लिये प्रेरित करती हैं। अपनी [illegible] को सफल बनाने के लिये शस्त्रास्त्रों का सहारा लिया जाता है। अब जब यदि संसार में शान्ति स्थापना करनी है तो शस्त्रों के [illegible] मूल पर आघात करना चाहिये। मनुष्यों में इस प्रकार की शिक्षा का प्रचार करना चाहिये जिस से कि वे सब को मानवीयता की दृष्टि से देखें। उन्हें संसार का नागरिक बनना होगा, अन्य देशों के व्यक्तियों को उदार [illegible] कर संसार की एक [illegible] सरकार बनानी पड़ेगी। जिनके हाथ में पूर्ण शक्ति हो जो उनके नियमों को न माने उससे लड़ाई [illegible] बनावे। पर ठीक है कि [illegible] में इस प्रश्न को अवश्य उठाया गया है पर हम देखते हैं कि प्रत्येक राष्ट्र स्वतन्त्र ही होना चाहता है वह युद्धों को शान्ति का साधन समझते हैं। इस लिये वे शीघ्रता से इस ओर अग्रसर न होंगे।

मंजरी

१. महापुरुष

[illegible] भालू को कलन्दर नचाया करते हैं; परन्तु सिंह घोर जंगलों में प्रतिष्ठा-पूर्वक रहता है। दीपक बहुत से हुआ करते हैं; परन्तु सूर्य एक ही हुआ करता है। हरी-श्यामल भूमि को लोग जोतते हैं - पैरों से रौंदते हैं परन्तु उत्तुंग-पर्वत पाषाण होने पर भी अभिमान पूर्वक सिर उठाए खड़ा रहता है। संसार में साधारण जीव अपने क्षुद्र प्राण, क्षुद्र सुख-दुःख और क्षुद्र विलासों के लिए ही पड़े रहते हैं, परन्तु बीच बीच में ही भस्म रमाए हुए, [illegible] वालों वाले और भूखे सिंह सन्यासी आकर उन्हें नए तत्त्व, नई नीति और नए धर्म की दीक्षा दे जाया करते हैं। अत्याचार की खुली हुई तलवार उनके सत्य की ज्योति को और भी अधिक फैला देती है। कारागार का अन्धकार उनकी महिमा को और भी अधिक उज्ज्वल करता है। जलती हुई आग की लपटें उनकी कीर्ति को और भी अधिक प्रसार करती हैं।

२. मृत्यु

यह जीवन तो बहुत ही थोड़े समय का है परन्तु मृत्यु तो सदा के लिए है।

मृत्युरूपी समुद्र पर जीवन लहरों की भांति बहुत ही थोड़े समय के लिए स्पन्दित होता है और फिर शान्त हो जाता है। जीवन को तो तुम माया या भ्रम कह सकते हो परन्तु मृत्यु अटल है - ध्रुव है। चिरकाल तक रहने वाली संज्ञाहीन निद्रा में यह जीवन चिन्तित मस्तिष्क के स्वप्न के समान आता और स्वप्न के ही समान चला जाता है।

युद्धक्षेत्र प्रेमियों के सुख से सोने की सेज नहीं है, वह मृत्यु की लीला-भूमि है।

३. [illegible]

भूत विद्वान है, भविष्यत् कवि। भूत माता है, भविष्यत् पत्नी। भूत सदा [illegible] की तरह स्नेहपूर्वक गले लगाकर रोता है, मस्तक पर आशीर्वाद की वर्षा करता हुआ रोता है, भविष्यत् केवल देखता है - तलाश करता भी

समकालीन यूरोप के अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध

राष्ट्रों के पारस्परिक सम्बन्ध किसी कानून द्वारा नियमित नहीं किए जाते। उनके पारस्परिक सम्बन्धों में मुख्य तत्व आत्मभूता, आत्मरक्षा और आत्मवृद्धि हैं। प्रत्येक राष्ट्र यह चाहता है कि उसकी रक्षा हो, उसे कोई दूसरा दबा न बैठे। आत्मरक्षा ही अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को निर्धारित करने का मुख्य तत्व है। अब तक अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों को सुलझाने का उपाय रहा है — एकमात्र युद्ध। यद्यपि वर्तमान काल में अन्तर्राष्ट्रीय कानूनों का निर्माण हो गया है, फिर भी राष्ट्रों में इतनी सेना नहीं आ गई है, कि वे उनके अनुसार कार्य कर सकें। जहां उनके स्वार्थों को धक्का पहुंचता है वहां पर वे अन्तर्राष्ट्रीय कानूनों को तोड़ने में तनिक नहीं हिचकते। जर्मनी ने बेल्जियम की उदासीनता को प्रमाणित करने वाली सन्धि को "रद्दी कागज" का टुकड़ा कह कर फाड़ दिया। इंगलैण्ड - जिसने अन्तर्राष्ट्रीय कानून को भंग करने के कारण जर्मनी के विरुद्ध जेहाद बोला था - भी यूनान और फारिस की उदासीनता की कोई परवाह नहीं करता और अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए आक्रमण करता और उन प्रदेशों में से सेना भेजता है। कहने का तात्पर्य यही है कि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध का फैसला युद्धों द्वारा ही किया गया है।

वर्तमानकालीन युद्धों का मुख्य कारण आर्थिक आवश्यकता है। व्यवसायिक-क्रान्ति के बाद कारखानों के लिए कच्चे माल की आवश्यकता हुई। कच्चे माल से तैयार किए गए सामान को खपाने के लिए कोई मार्केट चाहिए। इस प्रकार दोनों प्रदेशों को - जहां से कच्चा माल प्राप्त होता है, और जहां पक्के माल की खपत होती है - प्राप्त करने के लिए प्रयत्न प्रारम्भ हुए। जहां कहीं किसी ने रोक डाला या कि सामान युद्ध छिड़ गया। आर्थिक हितों की पूर्ति के लिए सेना का उपयोग होता है। इस प्रकार के साधनों और उपायों का आविष्कारक यूरोप ही है। उसी ने सबसे पूर्व और सबसे अधिक नरसंहार और लूटमार जैसे अमानुषिक कृत्य किए हैं। इस लूटमार के लिए सतत प्रयत्न करने वालों में केवल स्वेच्छाचारी राज्य ही सम्मिलित न थे किन्तु स्वतन्त्रता, समानता, और भ्रातृत्व की दुहाई देने वाले प्रजातन्त्र राज्यों ने भी बढ़ कर हाथ बंटाया। आज हम उसी यूरोप के वर्तमानकालीन अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों पर विचार करने का यत्न करेंगे।

इंगलैण्ड —

संसार के मानचित्र पर दृष्टि डालने से पता लगता है कि वह चौथे से अधिक लाल रङ्ग से रंगा हुआ है। यह लाल लाल रङ्ग ब्रिटिश शासन का सूचक है। इंगलैण्ड ही अभी तक सबसे बड़े साम्राज्य का निर्माण कर सका है। संसार की राजनीति में ब्रिटेन की सबसे अधिक प्रधानता है, परन्तु यूरोप की राजनीति से यह एक प्रकार से अलग ही है। इसकी परराष्ट्र नीति निम्न आधारभूत सिद्धान्तों को दृष्टि में रख कर चलाई जाती है —

(i) यह एक द्वीप है,

(ii) एक द्वीप है और साथ में व्यवसाय से समृद्ध है इस लिए माल की खपत के लिए इसे बाजारें (Markets) की आवश्यकता है

(iii) ब्रिटेन अपनी पैदावार पर केवल $1\frac{1}{2}$ मास

गुजार कर सकता है। अतः स्वभावतः उसे उदर पूर्ति के लिए दूसरे देश पर आश्रित होना पड़ता है।

IV व्यवसाय-प्रधान देश होने के कारण कारखानों के लिए कच्चे माल की आवश्यकता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि ब्रिटेन की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का आधार व्यापार है। अपने व्यापार की रक्षा के लिए इसने उन सब स्थानों को अपने वश में रक्खा है, जो एशिया - विशेषतः भारत और अफ्रीका की तरफ जाते हैं [मुख्य तया एशिया और अफ्रीका ही ब्रिटेन के बाजार हैं] ये स्थान हैं जिबराल्टर माल्टा, साइप्रेस, स्वेजकैनाल। यद्यपि हम ऊपर कह आए हैं कि ब्रिटेन यूरोप की पौलिटिक्स से पृथक ही रहता है तो भी जहां ब्रिटेन के स्वार्थ को धक्का पहुंचने की सम्भावना होती है वहां ब्रिटेन सतर्क रहता है।

फ्रांस -

यूरोप की राजनीति में फ्रांस का बड़ा भारी हाथ है। यह इंगलैण्ड की तरह पृथक एक द्वीप तो है ही नहीं इसलिए यूरोप की हलचलों के साथ इसे सम्बन्ध रखना पड़ता है। महाद्वीपीय राजनीति का प्रायः यह उसूल रहा है कि जिस देश की सीमा हम से मिलती हो वह देश हमारा शत्रु है और शत्रु देश के साथ जिस देश की सीमा मिलती है हमारा मित्र है। इसी लिए गत महायुद्ध से पूर्व फ्रांस जर्मनी का जानी दुश्मन था और रूस का परममित्र था। युद्ध के बाद से यद्यपि जर्मनी की अवस्था अधिक शोचनीय हो गई है, तो भी फ्रांस और जर्मनी में परस्पर वैमनस्य है। इस समय रूस के स्थान पर फ्रांस का परममित्र पोलैण्ड है जिसकी सीमा जर्मनी से मिलती है। कारण स्पष्ट है। प्रत्येक राष्ट्र यह चाहता है कि उसकी शक्ति वृद्धि भी हो और यह तभी हो सकती है जब कि वह पड़ोसी राष्ट्रों पर आक्रमण कर इनके प्रदेश छीन कर अपने में मिला ले। इस प्रकार जिन राष्ट्रों से उसकी सीमाएं मिलती हैं प्रायः वे उसे शत्रु ही समझा करते हैं।

यद्यपि फ्रांस को इंगलैण्ड की तरह साम्राज्य विस्तार में सफलता नहीं मिली तथापि भूमध्य महासागर पर उसकी विशेष स्थिति होने के कारण उसने "असभ्य अफ्रीकन लोगों के उद्धार" का परम पुण्य को संचित कर लिया है। अब उत्तरीय अफ्रीका के देशों के सम्बन्ध में इटली और फ्रांस का झगड़ा है। दोनों के स्वार्थ टक्कर खाते हैं।

इटली -

इटली स्वभावतः भूमध्यसागर का शासक होना चाहता है। यूरोप के मानचित्र को देखने पर स्पष्टतया पता लगेगा कि उसका धड़ भूमध्यसागर और एड्रियाटिक सागर के मध्य में है। व्यापारिक और सैनिक दोनों दृष्टियों से यह सागर उसके लिए महत्वपूर्ण है। फ्रांस का भी इस सागर में बड़ा व्यापार होता है इस लिए वह सागर पर इटली के एकाधिपत्य को स्वीकार नहीं कर सकता। यदि भूमध्यसागर पर इटली का अधिकार हो जाय तो इंगलैण्ड इसे कभी सह नहीं सकेगा। क्योंकि उसका अपने एशियाई और अफ्रीकन उपनिवेशों से सर्वथा सम्बन्ध टूट जायगा — उसे इटली की कृपादृष्टि पर ही जन-निवृत्ति के लिए बाधित होना पड़ेगा।

जब से इटली में मुसोलिनी का राज्य हुआ है तब से उसने अपनी जन संख्या की वृद्धि के लिए प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया है। जो लोग अविवाहित हैं या जो विवाह करके भी सन्तानोत्पत्ति नहीं करते उन पर टैक्स लगाया गया है। मुसोलिनी की इस स्कीम के अनुसार २० वर्ष में २ करोड़ मनुष्यों की वृद्धि हो जायगी। एक तो इटली में वैसे ही इटली के क्षेत्रफल से अधिक जन संख्या है, दूसरे वह भावि युद्ध की आशंका से और भी अधिक आबादी बढ़ाने का प्रयत्न कर रहा है। अपनी बढ़ी हुई आबादी के रहने

के लिए, उनके पालन पोषण के लिए, इटली राष्ट्र संघ से उपनिवेश मांगता है। उसकी दृष्टि टर्की के समीप, मैसोपटामिया और उत्तरीय अफ्रीका के प्रदेशों पर है। क्योंकि इससे वह खनिज द्रव्यों से परिपूर्ण सीरिया पर अधिकार करना चाहता है। इससे अधिक उसकी दृष्टि उत्तरीय अफ्रीका के प्रदेशों पर पड़ती है। मुसोलिनी ने गत वर्ष जो ट्रिपोली आदि की यात्राएं की हैं वे इसी बात की सूचक हैं। उत्तरी अफ्रीका के प्रदेशों में फ्रांस और इटली दोनों के स्वार्थ टक्कर खाते हैं। इटली टैन्जियर को अपने अधिकार में करना चाहता है, पर फ्रांस इस बात को सह नहीं सकता। यदि फ्रांस के हाथ से टैन्जियर चला जाय तो वह मोरक्को में अपना प्रभाव नहीं रख सकता। टैन्जियर में फ्रांस के साथ साथ अंग्रेजों के भी कई स्वार्थ हैं। वे भी अपने स्वार्थों के कारण इटली के मार्ग में बाधक रहेंगे।

रूस-

पूंजीपति सरकारें कहा करती हैं कि रूस हौआ है और वह संसार की शान्ति में बाधक है। लेकिन वह रूस ही था जिसने निःशस्त्रीकरण-परिषद में इस आशय का प्रस्ताव रक्खा था कि सब राष्ट्र सर्वथा शस्त्रों को छोड़ दें। यह प्रस्ताव करते हुए भी रूस में बाधित सैनिक शिक्षा का प्रचार है। इसका कारण यह है कि सब पूंजीपति सरकारें इसे नष्ट कर देना चाहती हैं। इंग्लैण्ड उनमें सब से मुख्य है। फिर भी उसने काफी सेना को कम कर दिया है। पूंजीपति राष्ट्र रूस से किसी भी प्रकार का सम्बन्ध रखना पसन्द नहीं करते इसी कारण संयुक्त राज्य अमेरिका के परराष्ट्र सचिव श्रीयुत किलौग ने अपना शान्ति-पैक्ट रूस के पास भेजना ठीक नहीं समझा।

पूंजीपति सरकारें कहा करती हैं कि जारशाही और साम्यवादी रूस में कोई अन्तर नहीं है। दोनों की महत्वाकांक्षाएं एक सी हैं— मंगोलिया और मन्चूरिया में शान्तिपूर्ण प्रवेश, फारिस और अफगानिस्तान पर प्रभाव। यदि ध्यान पूर्वक देखा जाय तो सच्ची बात यह है कि रूस इन साम्राज्यवादी सरकारों के प्रभुत्व को सहन नहीं कर सकता। वह तो सबको "आत्मनिर्णय" करने का अधिकार वास्तविक अर्थों में देना चाहता है। यदि ऐसा न होता तो वह क्यों १९०७ की एंग्लो-रशियन सन्धि - जिसमें उत्तरी फारिस पर रूस का आधिकार स्वीकृत किया गया था - को रद्द कर देता? क्यों न वह इंगलैण्ड की तरह अपने अस्त्रशस्त्रों से डरा कर अपने प्रभावक्षेत्र में लाने का प्रयत्न करता? रूस इस दुनिया में एक बड़ी भारी क्रान्ति चाहता है जिसमें पूर्णस्वामित्व (Full Sovereignty) जनसाधारण के हाथ में हो। इसके लिए वह सदा प्रयत्न करता है।

युद्ध क्षत राष्ट्र -

गत महायुद्ध में जर्मनी, आस्ट्रिया, हंगरी और बलगेरिया मध्यशक्तियों के नाम से कहे जाते थे। वार्सेले, ट्रियनन, सैन्टजर्मन और न्यूइल्स की सन्धियों के परिणाम स्वरूप इनकी अवस्था बहुत ही हीन कर दी गई है। जर्मनी से अल्सेस और लोरेन के प्रान्त छीन लिए गए। राइन नदी का प्रदेश ऋण चुकाने के लिए फ्रांस के कब्जे में है। उसका अपर साइलेशिया छीन लिया गया। पूर्वी प्रशिया का [illegible] प्रदेश पोलैण्ड के हाथ चला गया। उसके सारे उपनिवेश छीन लिए गए। स्थलीय, जलीय और आकाशीय सेनाएं बहुत कम कर दी गईं। एक प्रकार से जर्मनी को निःशस्त्री करण कर दिया गया। अब जर्मनी ने पर्याप्त सीमा तक अपनी अवस्था सुधार ली है। जर्मन प्रजा शान्तिप्रिय है इसी कारण इस निर्वाचन में साम्यवादी लोगों का प्रभुत्व हो गया है।

जर्मनी की तरह उसके अन्य साथियों की भी यही अवस्था हुई है। आस्ट्रिया और हंगरी की बहुत बुरी अवस्था है। उनके पास कोई बन्दर नहीं - इस लिए उनके व्यापार मारे गए हैं। ये दोनों राष्ट्र जर्मनी से मिलना चाहते हैं, पर सन्धियों के कारण

मिलाने में असमर्थ हैं।

शान्तिप्रिय राष्ट्र –

महायुद्ध के बाद जो सन्धियां हुई हैं उनसे कई राष्ट्रों की सृष्टि हुई है और कइयों को अधिक प्रदेश भी मिले हैं। फिनलैण्ड, लेटविया, लिथुआनिया आदि रूस से जुदे हैं। पोलैण्ड अपने चारों ओर शत्रुओं से घिरा हुआ है, यह कहा जाता है। कहते हैं कि जर्मनी अपने प्रदेश को पोलैण्ड से छीनना चाहता है। पर प्रश्न यह है कि क्या जर्मनी के पास इतनी ताकत भी है? इसी तरह रूस का भय दिखाया जाता है। पर वह तो साम्यवादी राष्ट्र है। इन भयों का शोर मचा कर पोलैण्ड ने फ्रांस और रूमानिया से सैनिक सन्धियां कर ली हैं। पर वास्तविक बात यह है कि रूस साम्यवादी है साम्राज्यवादी नहीं। इसलिए वह सदा पूंजीपतियों के नाश का यत्न करेगा। इंगलैण्ड और फ्रांस ने रूस के पड़ोस में [illegible] प्रबल शत्रु खड़ा करना चाहा है ताकि वह [illegible] [illegible] में लगा रहे और हमें तंग न करे।

जैकोस्लोवेकिया

आस्ट्रिया और हंगरी के साम्राज्य में से बना है। यह राष्ट्रसंघ का सदस्य है। इसने रूमानिया और युगोस्लाविया के साथ मिल कर लिटिल एन्टेन्टे स्थापित किया है। फ्रांस भी इसके साथ सैनिक सन्धि से बंधा है।

रूमानिया को तीन ओर से डर है। उसने युद्ध के समय बुलगेरिया का प्रदेश छीन लिया था। हंगरी इस अपना बताता है। दक्षिण में बलगेरिया से झगड़ा है। मानिया के पास दाब्रुजा का प्रदेश है जो वास्तव में इसे पर बलगेरिया का होना चाहिए। उधर रूस से डर है। बेसरबिया के सम्बन्ध में दोनों का झगड़ा है। हंगरी के विरुद्ध रूमानिया भी लिटिल एन्टेन्टे में शामिल हुआ है। रूस से रक्षा करने के लिए इसने पोलैण्ड से सन्धि कर रक्खी है। बलगेरिया अपनी ही रक्षा नहीं कर सकता दूसरे की क्या करेगा?

युगोस्लाविया में अन्दर ही अन्दर बहुत गड़बड़ है। [illegible] बाहरी शत्रुओं से भी डर है। इस लिए इसने फ्रांस और पोलैण्ड से सैनिक सन्धियां कर रक्खी हैं। मैसीडोनिया पर बलगेरिया के साथ सलोनिका बन्दरगाह पर ग्रीस के साथ फ्यूम पर इटली के साथ [illegible] की घाटी पर अलबेनिया के साथ और बैनट पर हंगरी के साथ युगोस्लाविया का झगड़ा है। हंगरी के विरुद्ध उसने जैकोस्लोवेकिया और रूमानिया से और इटली के विरुद्ध फ्रांस से सन्धि कर रक्खी है।

अब तक पाठकों को इस बात का पता लग गया होगा कि किस प्रकार यूरोप में अब भी वैमनस्य है, कूटनीति का बोलबाला और सदा [illegible] सम्भावना बनी रहती है। इस अविश्वास वैमनस्य और अशान्ति का कारण बताते हुए इटली के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्रीयुत [illegible] ने कहा था कि

सब कुछ मुसोलिनी जैसे सर्वाधिकारी और [illegible] लोगों के कारण ही है। पर यदि ऊपर से दृष्टि हटा भी ली जाए तो भी हमें काफी मसाला मिल जाता है जिससे इस अशान्ति का कारण पता लग जाता है। [illegible] ही इसकी जड़ है [illegible] जिसने सबसे पूर्व स्वतन्त्रता और भ्रातृभाव का [illegible] दिया था आज वही फ्रांस यूरोप की [illegible] अशान्ति का कारण है। युद्ध में जर्मनी हारने पर भी फ्रांस का भय नहीं [illegible] – उसने सिर्फ उस [illegible] [illegible] ही [illegible] छोड़ा परन्तु उसके खिलाफ पोलैण्ड से सन्धि की। जर्मनी के डर के कारण लिटिल एन्टेन्टे का निर्माण किया। अमेरिका और इंगलैण्ड के सम्मुख [illegible] [illegible] की असमर्थता दिखा कर फ्रांस ने पोलिश लोगों को सहायता करने के लिए अरबों [illegible] धन भेजा वहीं फ्रांस स्वयमेव भी बहुत अधिक मात्रा में सैनिक व्यय कर रहा है। इस प्रकार फ्रांस ने सारे यूरोप में अविश्वास और सन्देह का [illegible] भर कर अन्तर्राष्ट्रीय समस्या को बहुत ही कठिन कर दिया है।

आजकल भूमध्य द्वीप अत्यन्त अशान्त स्थान है। जर्मनी के विरुद्ध अपनी रक्षा करने के प्रयत्न में फ्रांस ने इटली को भी अपना दुश्मन बना दिया। इटली और फ्रांस की शत्रुता तो थी ही, अब फ्रांस के बाद

विनय वैजयन्ती

गुरुकुल
वैदिक महाविद्यालय

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

(४) हस्तलिखित

वर्ष ६ } संपादक: श्री सर्वमित्र शास्त्री { अंक १

सत्य का पुजारी

मैं जिस दिन सत्य का पुजारी बनूंगा। वह दिन कब आयेगा जब मैं अपनी सत्यनिष्ठा के लिये लिबिल मुनि की तरह अपने दोनों हाथ कटा कर भागीरथी के तीर पर सत्य की साधना के लिए आसन जमा लूंगा।

सत्य की राह कितनी कठिन है। सत्य के लिए शिवाजी के गुरुदेव दादा जी नाक साफ किये जीवन जिता गये। सुकरात मुनि ने एक प्याला पिया - सत्य के दीवाने दयानन्द ने आठ बार विष खाया - ओ! मुझ में तो आधा प्याला पीने की भी सामर्थ्य नहीं।

मुझे तो आज के इन दियों के उजाले में बहुत शर्म आती है। ओ - मैं सचाई के बिना नंगा हूं कहां जाकर माँ-बाप को दिखाऊं। ओह दीपमाला आज सबको नग्न बना दो।

सत्य का राही

जीवन-गीत

एक प्रसून
उर्वी के आंगन में
सहस्र पंखड़ी खोल कर
इन्दु कला की तरह खिला।
उसने, निज परिमल से
वन कुंजों को सुवासित किया
मधु मक्षिका को मधु दिया
रसिकों को सौरभ से मत्त किया
कवि के हिय में गीत उपजाये,
तत्वज्ञानी को विचार स्फुरित कराये,
और अंत में - देव पूजा के लिए
जन्म दाता से जुदा होकर -
निज जीवन दे दिया !!
प्रभु ऐसा जीवन दो !!

(२)

एक वृक्ष ने -
घनी छाया रची
गृह विहीन को आश्रय दिया
ग्रीष्म संतप्त को ठंडक दी
शीतल पवन फैला कर
जग को आनन्दित किया
और स्वयं प्रचंड शीत में
ठिठुर कर देह तजी।
फिर उसी शुष्क देह को
माघ की शिशिर मयी निशा में
अग्नि सात करके

दुर्गा पूजा.

(१)

आज दुर्गा पूजा का दिन है। चारों ओर बहुत तरह की तैयारियां हो रही हैं। मन्दिरवालों ने भी आज दुर्गा को खूब सजाया है। लोग भी आज सज धज कर आ रहे हैं। लोगों को आज नये रेशमी कपड़े पहिने हुवे और खूब बाल सम्हाल संवारे हुवे देखकर सीतानाथ ने भी अपने को आदी २ सजाने की ठानी। यों तो वे थे ही धनी घराने के और साथ ही बड़े ठाठ बाठ से रहते थे मगर आज दुर्गा की पूजा थी सब के सामने भी तो जाना था। परन्तु सिर्फ एक ही बात की कमी थी, और वह यह कि वे बदसूरत थे। रंग सांवला, आंखें मंझोली परन्तु अन्दर की ओर गड़ी हुई, नाक चपटी तथा मोटी और भी खाले थे। चेहरा लम्बोतरा था। कद के भी बहुत लम्बे न थे, फिर भी वे अपने को किसी से कम न समझते थे।

दर्पण से उन का अटूट प्रेम था। वही उन के दुख सुख का एक मात्र सहारा था। शायद इसके बिना उन्हें बहुत बेचैनी हो यह विचार कर वे सदा उसे अपनी जेब में रक्खा करते थे।

आज भी उसी को निकाल कर कंघे से बाल संवारने लगे। कभी अपने बालों को इधर करते कभी उधर। मगर अपनी सूरत के लिये आज उन्हें कोई ढाला पसन्द न पड़ता था। आखिर करते २ उन्हों ने अपने बालों को ऐसे क्रम में कर लिया, जो कि कम से कम उन्हें बहुत अच्छा लगता था। बाल संवार कर शीशा देख कर कहने लगे — "बस भाई! दुनिया में ऐसा मुखड़ा शायद ही कहीं हो।" बालों का मामला ठीक कर के उन्हों ने अच्छे २ कपड़े पहिने। रेशमी धोती, रेशमी कुरता उस पर रेशमी नीला कोट, टोपी तो वे बंगाली होने के कारण पहिनते ही न थे। जुराबें, फुल बूट डांट कर बैठ गये, हाथ में एक रेशमी रूमाल था। बस क्या कहते, देखते ही बनता था।

नहीं मेरे बाल बिगड़ तो नहीं गये। दूसरों को मैं कैसा लगूंगा। इन विचारों के आने की देरी थी कि शीशा फिर सामने आ गया। और लगे अपना मुखड़ा निहारने। देखते ही मुख खिल गया। खिल खिला कर हंस कर कहने लगे कि वाह! इसका नाम है, खूब सूरती। प्रतिबिम्ब में अपने मुख को भी वैसा ही कहता देख कर कहने लगे, देखो तो मेरा प्रतिबिम्ब ही मेरे मुख की बड़ाई कर रहा है।

२.

सीतानाथ! मन्दिर में चलोगे कि नहीं? यह कहते हुवे उन के दो मित्र अन्दर आये। जल्दी से उन्हों ने अपना रूमाल तथा शीशा जेब के हवाले किया, परन्तु रूमाल जेब के ऊपर लटक रहा था।

सीतानाथ — (खड़े होकर) - आइये साहिब! बैठिये।

नन्दकुमार तथा शिवप्रसाद बोले कि भाई समय होने वाला है। परन्तु इस पर हमारे मित्र सोचने लगे कि अच्छा ही तो है आज देर में पहुंचेंगे। लोग मेरी शकल देख कर कहेंगे तो सही कि दुनिया में खूबसूरती इस का नाम है। (प्रकट) तो क्या हुआ? अभी चलते हैं।

नन्दकुमार — (रेशमी रूमाल लटकता देख कर) अजी! यह क्या है? बस कहते ही उसने मित्रता होने के कारण जेब में हाथ डाल दिया। पर यह क्या! उन के हाथ में तो एक और ही चीज़ आ गई। उन्हों ने बिना सोचे इन दोनों चीज़ों को निकाल ही लिया।

नन्द० - यार! यह क्या? मेरी समझ में तो अगर मैं आप से एक बात कहूं तो आप बुरा न मानियेगा।

सीतानाथ मन में सोचने लगे कि शायद शकल की बड़ाई करेगा। और क्या? (प्रकट) अच्छा, कहिये।

नन्द० - आप की शकल --- (हंस कर बीच में ही रुक गया)

सीता० - कहिये, क्या हर्ज है कि कामदेव को भी मात करती है।

नन्द० - नहीं साहिब! मैं यह नहीं कहना चाहता। अच्छा फिर अब आप सुनने को उत्सुक हो रहे हैं, तो सुनाता ही हूं।

ओ३म्

दिवाली.

(ले० श्रीयुत [illegible])

अमावस की दीवाली! तूने अपने प्रकाश से अपने आप को अवश्य प्रकाशित किया है किन्तु तेरे निचले अन्धकार ने आज घोर अमावस पर एक और काला पर्दा पड़ा है। तेरा प्रकाश जहां उदारहृदय वाले मनुष्यों के दिल के अन्धकार को दूर करता है वहां उस अन्धेरे में हजारों मनुष्यों के दिलों को पाप कर्म में प्रेरित करता है। जिस जहां एक और राम की विजय कथा की दुन्दुभि इस अनन्त नील नभोमण्डल [illegible] फाड़ती है जहां राम के कुशल पराक्रम [illegible] उड़ाई जाती है वहां दूसरी ओर जुआरी [illegible] लोगों के ऊपर भी धन की अनन्त वर्षा होती है। दोनों ओर परस्पर विरोधी दृश्य हैं किन्तु दोनों का एक प्रकार की प्रसन्नता में सदृश होता है। तेरे में प्रसन्नता और दुःख धन और दरिद्रता प्रकाश और अन्धकार पाप और पुण्य का विचित्र मिलाप होता है इसलिये दिवाली आ हम तेरा स्वागत करें और या तुझ से विमुख होकर बैठ जायं।

× × ×

तू असीम सम्पत्तिशालिनी है यह तेरे हृदय व [illegible] में एक एक दीपक अपने चमकीले हुए चिराग से बताता है। हजारों वर्षों से तू इसी तरह का हार पहिनती है। तेरी [illegible] में विशेषसुन्दरता है [illegible] उसका [illegible] कहीं नहीं मिलता। तू एक प्रसन्नता की गङ्गा है जिसमें पापी और पुण्यवान् सुखी और दुःखी एक ही प्रकार का स्नान कर सकते हैं।

× × ×

यह तो तेरे ऊपर का वर्णन है नीचे जहां द्विगुण अन्धकार अपना राज्य जमाये बैठा है वहां पाप की इतनी भर ऐसी घटायें इकट्ठी हुई हैं कि वे अब तेरे इस प्रकाशमय आनन्द को अपनी उन्हीं गहरी कालिमा में छिपाने के लिये चल रही हैं। क्या दृश्य दिखाई देता है एक [illegible] घोर अन्धकार दीपकों को [illegible] हुई अन्धकार की छाया के साथ आन्धी के वेग के समान [illegible] है पता लगता है कि तमाम भूमण्डल इसी गहरे अन्धकार के समुद्र में डूब जायगा। यह दिवाली यह टिमटिमाती हुई दीपमाला बुझ जायगी। यह आनन्द एक घोर दुःख में परिणत हो जायगा।

× × ×

दिवाली! इस अन्धेरे का कारण होगा तेरी [illegible] का प्रकाश और इस घोर दुःख का कारण होगी तेरे में मनाई जाने वाली प्रसन्नता।

दिवाली की रात तू फिर वही अपने अमावस के घोर अन्धकार में [illegible]

+ + +

सम्पादकीय निवेदन

प्रिय पाठक गण !

"आर्य सिद्धान्त" के द्वितीय वर्ष का तृतीय अङ्क आपके सन्मुख उपस्थित है। हमने इसे अपनी ओर से सर्वाङ्ग पूर्ण करने का यत्न किया है — इस में हम कहाँ तक सफल हुए है यह आप ही बता सकते हैं।

सभा के निर्णय के अनुसार यह अङ्क इस वर्ष का अन्तिम ही अङ्क है इसलिये हम आप से अब पर्याप्त समय के लिये विदाई चाहते हैं। गत वर्ष — पत्र निकाले जाने के प्रस्ताव की स्वीकृति के बाद - आर्य सिद्धान्त का एक ही अङ्क निकल सका था। इस वर्ष हम प्रतिमास नियम पूर्वक पत्र को प्रकाशित करते रहे है। हमने यत्न से पत्र की पृष्ठ संख्या बढ़ाने के साथ २ पत्र को अधिकाधिक उपयोगी बनाया है। इस के अतिरिक्त इसे सुचारु बनाने के लिये चित्र कला की ओर भी कम ध्यान नहीं दिया है। हमें इस बात का गर्व है कि पत्र उन्नति करता हुआ — इस समय तक कुल के उच्च पत्रों में स्थिति प्राप्त कर चुका है और इस में कोई सन्देह नहीं कि यदि भगवान् की कृपा से यह इसी तरह से प्रकाशित होता रहता तो कुल के सब पत्रों से उत्कृष्ट शीघ्र ही हो जायगा।

यह सब होते हुए भी हम अपने पाठकों को अभी निराश नहीं करना चाहते — हम इस बात का यत्न करेंगे कि सभा अपने पूर्व निश्चय को शिथिल कर के — हमें पुनः पत्र प्रकाशन की आज्ञा दे। हां इतना अवश्य होगा कि पत्र की पृष्ठ संख्या में कुछ न्यूनता करनी पड़ जायगी — परीक्षा से किसे भय नहीं लगता ?

अन्त में हम अपने सहयोगी पत्रों से भी विदाई लेते हैं। हमें पूर्ण आशा है कि प्रेमी पाठक हमें भूलेंगे नहीं।

— सम्पादक

ॐ

वन्दे मातरम्

विजय-वैजयन्ती.

संयुक्त

दैनिक - साहा विदाल्या.

वर्ष ८ म

अंक ५ म.

(४)



जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ॥.

प्रधान संपादक श्री. ३जनीन्

* वीर भोग्या वसुन्धरा * * * *

विजय-वैजयन्ती

* ऋषि-उत्सव. २६ अक्तूबर २० बुधवार.

युगप्रवर्तक के चरणों में-

दिनकर के अवसान के साथ, दीपों की उजियाले के मध्य तुमने सदा के लिये आंखें मूंद ली। इस दिन की पुण्य स्मृति अभी ताजी है यद्यपि आधी शताब्दि में कण कण उसका होगये। तुमने आंखें मूंद ली पर वह ज्योति जो अलखनन्दा की बर्फीली पहाड़ी चोटियों पर और शिवरात्रि के दिन प्राप्त की थी - और भी उज्वल प्रकाश से जगमगा उठी, इसने नास्तिक गुरुदत्त के हृदय-अन्धकार को दूर ही नहीं किया, प्रत्युत वह ज्योति आज सारे भारत के अन्धकार को दूर कर रही है। जिधर देखो तुम्हारी जगाई ज्योति का प्रकाश दीखता है। अन्धकार भटकते हुए तुम्हारी ज्योति को पाने के लिये प्रसार कर रहे हैं। इस ज्योति के प्रकाश में हम आज अपने बन्धनों को काट रहे हैं। बिखरी हुई परिवर्तन कारी किरणें क्रान्ति की ज्योति चारों ओर अपने भास्वर प्रकाश से प्रदीप्त होरही ज्योति उनके उद्गम स्थान, उनके स्रोत तुमको प्रणाम है।

× × × × ×

तुम्हारी छाप जिस पर पड़ी, वह तुम्हारे रंग में रंग गया। वह अनोखा रंग सबसे अधिक चमकीला और अमिट साबित हुआ। जिस पर तुम्हारी दृष्टि पड़ी वह इस लोक का नहीं रहा, वह साधारण मनुष्य नहीं रहा, मानवीय से दैवीय उसकी आत्मा होगई उस गहरे रंग की छाप आज स्मृति की चीज होगई। वह मानवीय दुर्लभ तुम्हारा सत्संग और देवोपम तुम्हारी दृष्टि तरुण भारत को नसीब होगी? तुम्हारी करुणा कोर के प्रताप पं. गुरुदत्त पं. लेखराम और हमारा शहीदे अमर कीर्ति शहीदे आज कुलपिता भगवान् के चमकते रत्न होगए। भारतीय सभ्यता और संस्कृति की सजीव प्रतिमा सिद्ध हुए। तुम सदृश ही अनोखे धुन के पक्के, दुनिया से निराले साबित हुए। क्या उस रंग और छाप के हम भी अधिकारी होंगे?

× × × × ×

इस हाल का दृश्य देख कर, सहसा तुम्हारा स्मरण हो आया, गंगा के पावन तट पर 'पाखण्ड खण्डिनी पताका' उड़ाते हुए तुमने अपना सर्वस्व त्याग दिखाया

विजय वैजयन्ती

'छोड़ेंगे वस्त्र स्वाहा' के लंगोटी के सिवाय सब कुछ स्वाहा कर दिया। वह अलौकिक त्याग, वह देवोपम स्वाहा आज भी हम को चकित कर रहा है। वह 'पारदर्शी(?) वस्त्र की पताका' और अलौकिक त्याग ही तुम्हारे अनुयायियों को साहस के कार्य में प्रेरित करती है और सफलता लाभ कराती है। वह दिन तुम्हारे ही जीवन के परिवर्तन का नहीं था. पर भारत और संसार में युग परिवर्तन के आगमन की सूचना देने वाली थी। वह त्याग और वह साहस हमारे लिए आज भी आदर्श बने हुए हैं, और हमको साहस और त्यागपथ की ओर प्रवृत्त कर रहे हैं। जब समुद्र की विरोध रूपी उत्ताल तरंगे तुमको अपने अन्दर विलीन करने के लिए, अपने गंभीर अन्तराल में छिपाने के लिए, परस्पर होड़ बद कर अपनी सारी शक्ति से यत्न कर रही थीं और तुम अविचल भाव से, अचल हिमाचल के समान खड़े हुए, इनकी क्षुद्रता पर निर्बलता पर उपेक्षा भाव से मुस्करा रहे थे। वह युगपरिवर्तनकारी तुम्हारी मूर्ति हमारे हृदयों में सदा बसी रहे।

x x x x x

कर्मयोगिन्! तुमने धारा पलट दी। गंगा का रुख बदल दिया। संसार से मुक्त योगी लोग सघन वनों में, तुमसे पूर्व रहते थे। संसार के कोलाहल से दूर रहते थे। सांसारिक लोग जी रहे हों या मर रहे हों इसकी उनको नहीं चिन्ता नहीं थी। संसार की हवा का स्पर्श उनके योग को भ्रष्ट करने वाला था, मुक्ति पथ का बाधक था। पर तुम हम लोगों में रहे। हमारी मंगल कामना के लिए लोक कल्याण के लिए अपने मुक्ति सुख को त्याग दिया। तुमने हमारे दुःख को अपना दुःख समझा। हमारी चिन्ता को अपनी चिन्ता जानी। तुमने मुक्ति के सुख के बजाय देश के दुःख में दुःखी होना अधिक पसंद किया. वह तुम्हारी मंगलमयी लोक कल्याण कारिणी मूर्ति सदा हमारे हृदय-प्रदेश विराजती रहे।

x x x x x

भोगवाद और प्रकृतिवाद के संसार में आध्यात्मिकता की पताका को उड़ाते हुए आये। भारत अपनी आध्यात्मिकता के लिए जी रहा है। भारत की विशेषता 'विद्या' और 'अविद्या' के मिलाने में है। तुमने 'विद्या' और 'अविद्या' दोनों को अपनाया। संसार में दोनों का स्थान है। एक के अभाव से मनुष्य है। इहलोक और परलोक दोनों हमारे सुखी हों, दोनों सुधरें। इन दो विरुद्ध उलझनों मार्गों के संगम स्थान को तुमने ढूंढा है। संसार के प्रत्येक भाई भाग को इन दोनों में से किसी एक की ज़रूरत है। तुम्हारी पारदर्शी बुद्धि ने इस मार्ग को ढूंढ निकाला उस पारदर्शी बुद्धि का हम में उदय हो

x x x

शेष पृष्ठ १४ पर

विदाई.

विदाई की अन्तिम घड़ी आगई हैं यह इतनी जल्दी आजायगी यह कल्पना पहिले हमने न की थी। यह ४ वर्ष का काल स्वप्न समान गुजर गया। आज हम देहली पर खड़े आपसे विदा मांगते हैं।

हम आप भाईयों और इस कुलभूमि को इस जीवन में भूल सकेंगे? इन वाटिका के खिले फूलों से हंसना सीखा है, फूलों और फलों से लदी झुकती डालियों से विनम्रता का पाठ सीखा है, पतित पावनी गंगा की तरंगों से चांचल्य पाया और उसकी गति से सातत्य गति पाई। विस्तृत अन्तरिक्ष और अनन्त गगन से उदारता का पाठ पढ़ा, गगन चारी विहगावलि ने संगीत-शिक्षा दी, पुष्पों से सज्जित लता ने माधुर्य का भाव भरा, अंचल हिमाचल ने धैर्य और स्थिरता का पाठ पढ़ाया, वन्य जन्तुओं ने निर्भय बनाया. आप भाईयों के निर्मल-स्निग्ध-स्नेह ने विश्व बन्धुत्व का पाठ पढ़ाया क्या इनको हम भूल सकेंगे?

निरन्तर ४ वर्षों से 'विजय वैजयन्ती' के साथ हमारा सम्बन्ध है। हमारे सामने बहुत से आदर्श और योजनायें थीं। हम कुछ को कार्यान्वित कर सके और कुछ को भावी उत्तराधिकारियों के लिए छोड़ चले हैं। हम कुल में इसको 'इन्स्टीट्यूशन' बनाना चाहते थे। सफल हुए या नहीं, यह आप जानते हैं। हमारा क्षेत्र स्वच्छ था। हमें प्रतियोगिता का भय न था, हम एकाकी थे इसकारण जितना अधिक शुद्ध और उपयोगी उस समय बन सकता था, उतना हम नहीं बना सके इसका हमको पूरा ध्यान है। हमने अपना कर्तव्य समझ कर ही टिप्पणी करने से नहीं चूके। इसमें हमने अपने व्यक्तित्व का या अपने वैयक्तिक सम्बन्धों का विचार नहीं किया। अपने विचारों को छिपाया नहीं। पत्र की नीति और परम्परा को कायम रखने के लिये हमने कुछ कसर नहीं रखी। इसका हम आपको यकीन दिलाते हैं। यदि हमारी किसी आलोचना से, हंसी से, टिप्पणी से, किसी को दुःख पहुंचा हो - जो कि हमारा कभी उद्देश्य नहीं रहा, उसके लिए हम विनीत हृदय से क्षमा प्रार्थी हैं।

'विजय वैजयन्ती' को इस रूप को देने में जिन्होंने हमारे साथ एक प्राण और एक मत होकर काम किया, उन सहयोगी भाईयों को धन्यवाद देना उनकी सहायता का मूल्य घटाना है। किसका नाम ले किसका न लें। सभी ने समय आ पड़ने पर हमारा साथ दिया। आज हमारा हृदय आभार और कृतज्ञता से झुका है। मंगलमय भगवान् उनको सहायता का पात्र बनाये रहे। अन्त में हम इस अंक के साथ 'विजय वैजयन्ती' से और आप से विदाई लेते हैं। अब के आप के दर्शन दूसरे रूप में ही होंगे अपनी आलोचना में हमें स्मरण रखियेगा.

'वन्देमातरम्'

विजय वैजयन्ती

उसी पत्र से आगे

(तुमने हमारी विचार-धारा को पलट दिया है। रत्नों की खोज में भटकते देख, तुमने हमें हमारा खजाना बता दिया। हमको प्यास से व्याकुल देख कर तुमने बताया जल का स्रोत हमारे ही घर में है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति तथा भारतीय साहित्य में भारत की आत्मा और प्राण बसते हैं। राष्ट्रीयता के ये ही आधार हैं। हम अपनी सभ्यता और साहित्य को भूल चुके थे हमको नवीन युग के अनुपयुक्त समझते थे। जल पर आई काई को देख कर ही हम जल को छोड़े जा रहे थे। उसकी मिठास, उसकी जीवनी शक्ति का हमें ज्ञान नहीं था। खजाने के सन्दूक को आभा रहित और जंग लगा देख कर ही छोड़े जा रहे थे। हम नहीं जानते थे कि इसमें रत्न भरे पड़े हैं जिनको संसार देख कर चौंक उठेगा और उसको पाने के लिए प्राणों का उत्सर्ग कर देगा. इसकी प्रभा और चमक अक्षुण्ण है। तुम्हारी गम्भीर गर्जना ने हमारा मार्ग बदल दिया और अपनी वस्तुओं का मूल्य पहिचाना है। हमारा यह स्वदेश-प्रेम सदा नया होता रहे)

× × × ×

संसार के समाज शास्त्री समाज की रचना में नई व्यवस्था लाना चाहते हैं। तुमने भी वर्ण व्यवस्था की योजना पेश की है। बोलशेविज्म और वर्ण व्यवस्था की योजनाएं संसार के सामने हैं। तुम्हारी परीक्षा (योजना की) अभी बाकी है। जिस दिन हम स्वतन्त्र होंगे उस दिन हम इसकी परीक्षा करेंगे विश्वास रखना

× × × ×

(युग प्रवर्तक! आज तुम्हारे चरणों में हम सादर और विनीत भाव श्रद्धाञ्जलि समर्पित है। तुम्हारे पथ के पथिक हैं। तुम्हारा बाना हमने पहिना है)

दीक्षा गुरो! अन्त में हम फिर विनीत भाव से तुम्हारे विश्व पूजित चरणों में प्रणाम करते हैं।

गगनाङ्गण में--

<u>जारहे हैं</u> - काले हुए दिये बुझ गये, दिवाली के पटाखों की आवाज शान्त होगई, आतिशबाजी की धूमधाम खतम होगई, गुब्बारे की उड़ान के साथ किया गया हर्षोल्लास समाप्त हो गया, दीपमाला की हलचल का अन्त हो गया। इसके साथही हमारे सम्पादक व पत्र के कार्यकाल का भी अन्त हो गया। आज हम सम्पादक पत्र 'विजय वैजयन्ती' आप स्नेही भाइयों कुलवासियों तथा इस कुलभूमि से भी, इस नाते से विदाई ले रहे हैं। यह विदाई एक साल के लिये नहीं; पर अगले साल के लिये है। 'विजय-वैजयन्ती' के साथ हमारा जो सम्बन्ध है, स्थिर है शाश्वत है। किसी न किसी रूप में रहेगा। 'विजय-वैजयन्ती' में जो ठीक समझा लिखा। राष्ट्रीय पथ से कभी विचलित न हुआ। इसका हमें सन्तोष है। कर्तव्य की कठोर खांडे की धार पर चलते हुए हमने अपने स्नेही भाइयों और सहयोगियों की नाराजगी तक को सहा है। जिस दिन श्री पं. अमरनाथ विद्यालंकार ने म. वा. व. सभा का मंत्रित्व ग्रहण करते हुए विजय वैजयन्ती का सम्पादन किया उसी दिन दोनों की पुरानी बातों पर सदा के लिए पर्दा पड़ गया था। पर दिल में घर की हुई भावनायें जल्दी नहीं मिटती। ये दोनों पत्र कुछ यारों के अन्दर से सौंपे गये थे। पहिले स्वतंत्ररूप से 'महाविद्यालय दैनिक' को प्रकाशित किया। हमारा विचार दोनों को स्वतंत्ररूप से सम्पादित करने का था। पर हमने अवस्था और शक्ति के परे की बात समझी। दोनों को मिलाना उचित समझा। इकट्ठे तक संयुक्त पत्रों का हमने सम्पादन किया। यह हमारे लिए गौरव की बात है। कुछ भ्रम अब भी कुछ दिलों में शेष है इसलिए ये पंक्तियां हमको लिखनी पड़ीं। आज हम इन दोनों से विदा मांगते हैं। आप स्नेही भाइयों से भी विनीत भाव से विदाई चाहते हैं; कुलमाता से भी विदाई मांगते हैं। आज हमारा हृदय आभारों और कृतज्ञता से भरा हुआ है। हमारी उत्तराधिकारी 'विजय वैजयन्ती' की परम्परा और नीति संरक्षण में सफल हों यह हमारी कामना है। आज 'विजय-वैजयन्ती' का जो रूप है वह हमारे पुरुषार्थी सहयोगी भाइयों का फल है। हम निमित्त मात्र हैं। यदि आप स्नेही भाइयों का उत्साह दान न मिलता तो हम कुछ न कर सकते। मंगलमय भगवान से प्रार्थना है कि कुलमाता का आशीश, आप स्नेही भाइयों की मंगल कामनायें और भारत वासिनी मूर्ति का सरल पवित्र स्नेह हमारे साथ रहे। इस रूप में न मिलना न होगा। वन्दे मातरम्।

<u>दीपमालिकोत्सव</u> - कल दीपमालिकोत्सव बड़े शान से मनाया गया। सचमुच दीपमालिकोत्सव हो रहा था. पंडाल के चारों ओर दीपमाला को जगमगाते देख मालूम होता था कि आकाश से तारकावलि उतर आई है। पण्डाल की सजावट भव्य थी। इसके लिए पुरुषार्थी सरल चित्त भाई श्री केशवदेव और भाई श्रीधर-

जी के सहयोगियों का प्रयत्न सराहनीय है। हमारे पाठक इनको धन्यवाद देने में हमारे साथ होंगे।

सभापति के आसन पर श्री चन्द्रमणि जी विद्यालंकार थे। सभा में की वक्तृतायें उसी पुराने रंग में थीं। राम के वैयक्तिक गुणों का बखान, वर्तमान भारत की अवस्था पर रोना पुरानी बातें हैं। मालूम नहीं हम कब इसको राष्ट्रीयता रंग में रंगेंगे उसके राष्ट्रीय चरित्र का अध्ययन करेंगे। श्री शंकरदत्त और श्री चन्द्रकान्त की वक्तृताएं उल्लेखनीय थीं।

रात को गुब्बारे छोड़े गये। कोई गुब्बारा जला नहीं यह सन्तोष की बात है। इन प्रयत्नों की सफलता पर गुब्बारा बनाने वालों को बधाई। दो गुब्बारों का एक साथ जाना सचमुच हमारे लिए कम से कम नई बात थी। नीचे से अलग थे ऊपर से जुड़े हुए एक छोटा सा पुल प्रतीत होता था इनको यहां प्रवेश करने वाले श्री दिलीप मधुरका-दया हैं। आतिशबाजी न छूटने ~~[illegible]~~ बहिष्कार आन्दोलन ~~[illegible]~~ का परिणाम था। बहिष्कार आन्दोलन ने दिवाली की रंगत फीकी कर दी। अग्नि क्रीड़ा भी नहीं हुई। दीप-मालिकोत्सव सानन्द और सफलता के साथ समाप्त हो गया। कुलपति जी को बधाई।

<u>कवि सम्मेलन</u> - आज प्रातःकाल पं. चन्द्रमणि जी विद्यालंकार के सभापतित्व में मनाया गया। उपस्थिति न्यून थी सब थके हुए थे सभापति तक थके हुए थे। पुराने कवि सम्मेलन की प्राचीनता का यह मुकाबिला न कर सकता। न [illegible] के बाहुल्य के साथ टक्कर ले सकता था, यह अपनी विशेषता के लिये हुआ था। छोटी २ वक्तृतायें और अल्प काल में समाप्ति यही आकर्षक है। इस लिए सफलता में सन्देह नहीं किया जा सकता। मन्त्री महोदय को बधाई।

<u>प्रस्थान दिवस</u> - शरद ऋतु में विजय यात्रा के लिये क्षत्रिय लोग बाहर निकलते थे। इस यात्रा से पूर्व अपनी अधिष्ठातृ देवता की पूजा करते थे। हमारा दल भी भी कल विजय यात्रा के लिए प्रस्थान यात्रा कर रहा है। प्रस्थान समारोह धूम धाम से होना चाहिये। यह समारोह इनके दिलों का तथा इनके साहस और उत्साह को दुगना कर देगा। हमारी मंगल कामनाओं और कुलमाता की आशीषों के साथ गये अवश्य विजयी होंगे। हमें विश्वास है कि इन खिलाड़ी भाइयों को समारोह और शान के साथ विजय यात्रा के लिये भेजा जायगा। शारद सुषमा इनकी यात्रा मंगलमय बनाये।

<u>प्रबन्ध सम्पादक</u> - इन चार सालों में हमारा सहयोग प्रबन्ध सम्पादक श्री [illegible] जी ने जिस प्रकार से दिया है उसको हम ही जानते हैं। हम से ज्यादा चिन्ता आप को थी। आपने अपने कर्तव्यपालन से ही हमारे सामने आदर्श नहीं रखा पर हमारे निराश होने पर उत्साहमय प्रेरणा भी आप सदा करते रहे हैं। यदि आप न उकसाते तो कई बार 'विजय-वैजयन्ती' न ठीक समय पर निकल सकती और कई बार निकलती भी न। आपने छोटे से छोटे से काम को प्रेम और लगन से किया। सब कामों को एक समान समझा। आज के भी 'विजय' हमारे साथ

विजय-वैजयन्ती

'विजय-वैजयन्ती' से विदा मांगते हैं। 'विजय-वैजयन्ती' के साथ उनका सम्बन्ध हमारे से भी गहरा और अधिक है पर अब आपका अप्रत्यक्षतः संबन्ध रहेगा। इसका हमें दुःख है। आज आप भी इस कार्यभार से छुट्टी चाहते हैं। हम उनके [illegible] आभारी हैं, किन्तु शब्दों में धन्यवाद देते सूझता नहीं। मंगलमय भगवान् 'विजय वैजयन्ती' को सदा उनकी सहायता का पात्र बनाये रहें।

खद्दर आन्दोलन — गुरुकुल के खद्दर आन्दोलन के प्राण भी श्री पं. देवशर्मा जी विद्यालंकार पधारे हुए हैं। आपने चुपचाप अपनी पुरानी लगन के साथ खद्दर प्रचार का कार्य प्रारंभ कर दिया है। हम व्यक्तिशः खादी आन्दोलन में विश्वास नहीं करते। यह सत्य है कि किसानों को फुरसत के समय काम मिल जायगा गरीबों की रोटी का सहारा हो जायगा। पर इस यान्त्रिक युग में हमें भी अपने देश को यान्त्रिक युग के अनुकूल बनाना होगा। यदि हम अपने देश को कृषिप्रधान न रख कर व्यावसायिक बनाना चाहते हैं वरना हम संसार की प्रतियोगिता में नहीं ठहर सकेंगे। आर्थिक विनाश जिस प्रकार अन्य देशों में हुआ है उस प्रक्रिया से हमारा देश बच नहीं सकता। श्री पद्मनाभ पिल्ले की 'भारत की आर्थिक स्थिति' हमारे सामने है। हम उद्धरणों से पाठकों को परेशान नहीं करना चाहते कि किस प्रकार भारत में यान्त्रिक व्यवसायों की मांग बढ़ रही है। फिर भी यह प्रयत्न स्तुत्य है राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरित करने वाला है इसलिये हम स्वागत करते हैं पर साथ ही यह अन्धविश्वासों प्राचीन रूढ़ियों तथा विश्वासों को मजबूत भी करने वाला है। हम इस प्रयत्न की सफलता चाहते हैं।

आर्य कांग्रेस सप्ताह — दयानन्द के जन्म दिवस के साथ 'आर्य कांग्रेस सप्ताह' प्रारंभ हो गया है। यह सप्ताह जीवन शक्ति संचय करने का है। अपनी आत्मरक्षा और समाज की रक्षा के लिये तैयार होने का है। हम इस सप्ताह के बारे में इतना कहना चाहते हैं कि गाये जाने वाले गीत ऐसे हों जिनको बहुसंख्यक गा सकें। वह Marching Song भी हों जिससे पता लगे कि जिन्दा कौम के जिन्दा दिल तरुण गा रहे हैं। ओ३म् के झण्डे के साथ समाज के संस्थापक और शहीदों के चित्र हों। आशा है हमारी ये पंक्तियां व्यर्थ न जायेंगी।

अतिथि — श्री फणीन्द्रनाथ बोस महा भारत संस्था के सभ्य हैं। महान् भारत की सभ्यता के अनुशीलन को जिन सज्जनों ने अपना लक्ष्य बनाया हुआ है उनमें से आप एक हैं। दो व्याख्यान आपके हो चुके हैं। क्या हम लोग भी अपना जीवन नितान्त किसी खास दिशा की ओर लगाने के लिये उद्यत होंगे? आप अब तक शान्तिनिकेतन में थे पर आपने वहां से अपना सम्बन्ध त्याग दिया है। हम आपका स्वागत करते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय.

विद्युत् और गैस की प्रतियोगिता :—

[illegible] पर लोग शायद नहीं [illegible] कि गैस को रोशनी के लिये इस्तेमाल किया जाना शुरू हुआ था, उस समय [illegible] ने कहा था कि गैस का [illegible] [illegible] पर है। विद्युत रोशनी को अधिक [illegible], और बहुत [illegible] [illegible] के [illegible] के कारण [illegible] [illegible] कि [illegible] रोशनी [illegible] गैस [illegible] [illegible] नहीं [illegible]। [illegible] बहुत [illegible] करते थे कि [illegible] [illegible] के [illegible] का [illegible] होने पर गैस से रसोई [illegible] [illegible] हो जायेगी। [illegible] [illegible] नहीं हुई।

[illegible] [illegible] [illegible] गैस [illegible] [illegible] के साथ नहीं [illegible] [illegible] विद्युत शक्ति और विद्युतरोशनी [illegible] [illegible] की [illegible] [illegible] है और [illegible] में [illegible] है। गैस कम्पनियों ने [illegible] [illegible] है।

[illegible] [illegible] [illegible] है, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नहीं जैसा पहले [illegible] [illegible]। विद्युत रोशनी के क्षेत्र में [illegible] स्थापित कर लिया है, परन्तु गैस ने रसोई के क्षेत्र को छोड़ा नहीं है, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है। परन्तु अभी हाल की उन्नति ने पुरानी प्रतिद्वन्द्वियों को [illegible] है। "[illegible] Commerce" इन उन्नतियों का इस प्रकार [illegible] करता है :—

[illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] गैस [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रहा है। [illegible] [illegible] विद्युत के प्रतियोगिता [illegible] [illegible] हो गई है [illegible] [illegible] बहुत कठोर हो [illegible]। [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] गैस बहुत [illegible] [illegible] में लाई जाती है। [illegible] [illegible] [illegible] में [illegible] और [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] स्थान में जो सुविधाएं हैं [illegible] [illegible] से प्राप्त हो जाती हैं।

अभी हाल की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] की उन्नतियों ने इस प्रतियोगिता को और [illegible] कर दिया है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है, बहुत से [illegible] [illegible] [illegible] में इस [illegible] [illegible] हुई है। [illegible] [illegible] [illegible] और शीत [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] गैस [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] रही है।

[illegible] [illegible] के [illegible] के [illegible] के लिए [illegible] [illegible] है [illegible] कारण [illegible] कोई [illegible]। दूसरी ओर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रहा है और [illegible] [illegible] [illegible] अपनी स्थिति रखने के ही साथ नहीं [illegible] [illegible] में भी भली भांति [illegible] के [illegible] है। [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible] हो रहा है [illegible] [illegible] बहुत [illegible] है।

भारतीय-प्रवाह.

आर्य्य-कॉंग्रेस :—

आर्यसमाज अपने जन्मकाल से विरोधों का सामना करता आ रहा है। एक का अन्त ही विरोधों के बीच हुआ। आर्यसमाज की हस्ती को मिटाने के लिए अब तक प्रयत्न किये जा चुके हैं, पर भगवान् का हाथ सदा समाज पर रहा है। विरोधियों ने पहले इसे और अधिक कठोर [illegible] तथा [illegible] विपत्ति की कसौटी पर समाज कई बार कसा जा चुका है और उत्तीर्ण हुआ है। आज उस पर विपत्ति का तूफान उठ पड़ा है। सरकार और भारतीय मुस्लिम समाज दोनों इस पर आक्रमण कर रहे हैं। समाज का दृश्य इन [illegible] से देख रहा है। [illegible] हो रहा है। [illegible] आर्यसमाज अपनी रक्षा के लिए शक्ति संगठन पर [illegible] हैं। आर्यसमाज अपनी शक्तियों को संगठित करने के लिए [illegible] और [illegible] निश्चित करने के लिए ४, ५, ६ नवम्बर को आर्य कांग्रेस करने जा रहा है। इसके सभापति का आसन भाई परमानन्द जी को सौंपा गया है। भाई जी एक [illegible] हिन्दू-मुस्लिम [illegible] के [illegible] हैं। [illegible] आर्यसमाज [illegible] हो जावेगा।

आर्यसमाज हिन्दू जाति का रक्षक है। [illegible] सिद्ध करने वाला है। इसने हिन्दू जाति को जीना सिखाया है। समाज धैर्य और शान्ति के साथ आगे बढ़ेगा, अपनी नीति आक्रमणकारी नहीं रक्खेगा। पर प्रश्न यह है कि किस मार्ग का अवलम्बन करेगा, इसी पर सबकी दृष्टि लगी हुई है। सरकार अखबारों और व्याख्यानों का जितना गला घोंट सकती है यह [illegible] आन्दोलन जोर शोर से प्रकट कर रहे हैं। [illegible] उस का मुकाबला करना होगा और प्रत्यक्ष आक्रमण करना होगा। मुसलमान संगठित प्रयत्नों से [illegible] हैं। समाज की शक्तियों को संगठित करने की आवश्यकता है। इन्हीं समस्याओं पर विचार करने के लिए आर्य-कांग्रेस [illegible] है। [illegible] के वीर सैनिक आगे ही बढ़ेंगे पीछे न हटेंगे यह सब का दृढ़ विश्वास है। विघ्न-बाधायें इन के पग को और भी पीछे न कर सकेंगी। हम सर्वशक्तिमान् सर्वेश्वर भगवान् से प्रार्थना करते हैं कि वे सफलता दें॥

भारतीय-वृत्त.

— श्री सुभाष चन्द्र बोस शिलाङ्ग से लौट कर शीघ्र ही अपने राजनीतिक कार्य में लगने वाले हैं।

— खबर है कि हाल के खेदजनक साम्प्रदायिक हमलों के कारण, बंगाल सरकार अस्थायी ट्रिब्यूनल्स बनाने वाली है।

— श्री मानक चन्द्र की हत्या के अभियोग में श्री फिरोज पर डेरा गाजी खाँ के इजलास में मुकद्दमा चल रहा था। आज चार असेसरों में से तीन ने — जिनमें एक मुसलमान है — अपराधी बताया। और दो मि० नूरुद्दीन ने अभियुक्त निर्दोष बताया। जज फैसला २८ को सुनायेंगे।

— खादी [illegible] की [illegible] सर्वजाति की बैठक ता० २८ जनवरी को काशी में हुई।

— पंजाब की मैट्रिक्युलेशन की परीक्षा २८ मार्च १९२८ से आरम्भ होगी।

— नेल्लोर से एक बड़ा ही हृदय-विदारक समाचार आया है। वहाँ के हिन्दू सभा के सभापति तथा मद्रास हाईकोर्ट के वकील श्री मुत्तय्यर विश्वनाथ राव की हत्या हो गई। आप चार साल से निरन्तर हिन्दुओं की — शुद्धि किया करते आते हैं। आप मद्रास से नेल्लोर वापस जा रहे थे तब हत्या की गई है। आप के १४ घातक घाव लगे हैं। हत्या करने का भी प्रयत्न किया गया पर सफलता नहीं हुई। उपाय के कपड़े पर तेल छिड़क कर आग लगाने की भी योजना की गई थी। क्या मुसलमान समाजों के नेता सत्य, अहिंसा का पाठ पढ़ना पसन्द करेंगे?

— श्री आनन्दी प्रसाद दुबे आगामी यू.पी. कौंसिल के अधिवेशन में जो २९ से आरम्भ होगा — ये प्रस्ताव पेश करने वाले हैं कि काकोरी केस के अभियुक्तों में से प्राणदण्डितों की सजा फांसी से हटाकर कैद कर दी जाय और इस केस के कैदियों से विशेष बर्ताव किया जाय। क्या कोई भारतवासी भी उसका विरोध करेगा? प्रस्ताव पास हो तो ही होगा? और सरकार स्वीकार करेगी?

— मद्रास की मजदूर सभाओं के लोगों की बेरोजगारी की जाँच के लिए कमेटी बनाई गई। कमेटी ने रिपोर्ट में उनको बताया है कि मद्रास सरकार ने लिखा है कि शिक्षा के उद्देश्य के सम्बन्ध में ठीक ज्ञान न होने और खेती को छोटा काम समझने से यह दुरवस्था है। इसके लिए उत्तरदाता कौन है?

विदेशीय-वृत्त.

— मजदूर दल के स्थायी सभापति श्री जार्ज लैन्सबरी मद्रास कांग्रेस में पधारेंगे।

— ब्रिटिश व्यवसाय की उन्नति के लिए मिल-मालिकों के नेताओं और ट्रेड यूनियन कांग्रेस की जनरल कौंसिल में बातचीत हो रही है।

— महाशय जी बर्केनहेड को भी स्वप्न में बैठकर स्वराज्य का हौआ सूझ रहा है। अभी उस दिन -नैलसन-दिवस- पर बोलते हुए आपने कहा कि भारत का हाथ पांव फैलाने का ध्येय है कि ब्रिटिश साम्राज्य का नाश करना।

— भारत के बाढ़ पीड़ितों की आर्थिक सहायता के लिए लार्ड हार्डिंज, लार्ड चेम्सफोर्ड और लार्ड रीडिंग ने एक अपील प्रकाशित की है।

— सोवियट सरकार ने निश्चय किया है, कि कुछ वर्षों के लिए मजदूरों से सात घंटे काम लिया जाय, मकानों की सुविधा के लिए ५ करोड़ रूबल दिए जाँय, किसानों और मजदूरों के कर घटा दिए जाय, किसानों को बुढ़ापे में पेंशन का प्रबन्ध किया जाय, राज्य और सेना सम्बन्धी अपराधों में किसी को सजा न दी जाय और कैदियों की सजा घटा दी जाय॥

स्थानीय-वृत्त.

— आर्य कांग्रेस सहर्ष के दो दिन गुजर गए।

— म. का. वि. सभा के स्थानापन्न मन्त्री श्री श्रीनिवास नियुक्त हुए हैं।

— श्री पं. साधु जी गुरुकुलीय, आर्य-कांग्रेस के सभापति निर्वाचित हुए हैं। आज आप समाजों के उत्सव कराने के लिए जा रहे हैं।

— आज खबर है कि प. देवशर्मा जी विद्यालंकार का व्याख्यान न होगा।

— श्री फणीन्द्रनाथ बोस का आज ऐतिहासिक व्याख्यान होगा। आज प्रश्न पूछे जा सकते हैं।

— आज से जोर शोर से तैयारी शुरू हो जायगी।

— आज होली दल विजयोत्सव के लिए प्रस्थान कर रहे हैं।

विजय-वैजयन्ती.

दिवाली के फ़टाके.

धूमधड़ाका खतम, हो हल्ला समाप्त। अपने राम को भी अलविदा। बस अब एक साल बाद मिलेंगे। 'लला फिर आइहों खेलन होरी।'

X X X

भूतपूर्व मन्त्री म. वा. व. स. ने जमियत-उल-उल्मा के समान फतवा निकाला है कि हम प्रधान-सम्पादक के सख्त से सख्त बरखिलाफ़ हो गये। नाहक सम्पादक जी बेचारे पीटे गये। मंत्री जी को मुखालफ़त ठानने का शौक चर्राया था तो हमसे ठानते। हम भी चमक जाते। आप तो चमक ही रहे हैं। हम तो उनके बाद भी मैदाने जंग में डटे रहेंगे। हम से ठनेंगे तो मजा भी आएगा –

"खून छनती है जब दीवाने मिलते हैं दो।"

X X X

हमारे कई यार सख्त महरूम हो गये हैं। टूर्नामेण्ट में जाने की उम्मीदों पर पाला पड़ गया है। वे अपनी निराशा यह कह कर जाहिर करते हैं कि हम तो जाना ही नहीं चाहते थे। हम चाहें तो अभी चले जावें। कई फ़रमाते हैं कि हमने कभी उम्मीद ही नहीं लगाई। ऐसे ~~कुकिस्मत~~ दुर्दैमारों से हम अपनी हमदर्दी जाहिर करते हैं।

X X X

बाजे वक्त अजीब चमत्कार घट जाती हैं। प्रथम, हॉकी दल के कैप्टिन साहब हैं जो प्राय: Extra players में टूर्नामेण्ट में जाते थे। ऐसे ही कई मंत्री हैं जिन के दर्शन पहिले कभी सभा में नहीं हुए। "दैवी विचित्रा गति:।"

X X X

दोमुँहा गुब्बारा क्या आया लोगों की कल्पना की हँडिया भी में तूफ़ान आ गया। कोई पजामा बताता है, तो कोई सल्वार; कोई धड़, तो कोई पुलबतीता है। कल्पना की घुड़दौड़ में अभी एक उपमा बाकी है। समय पर बता देंगे।

X X X

कई लोग चाहते हैं कि हम पर टिप्पणी न की जाय। यदि की भी जाय तो अनुकूल वरना अखबार फाड़ देंगे। ऐसे सज्जनों को हम सहिष्णुवर शिरोमणि (स्वामी दयानन्द जी की भाषा में) की उपाधि तड़ातड़ देते हैं।

X X X

सम्पादक जी को बहुतों ने आशा दिलाई, भरमाया; पर उन की आशा की पूर्ति नहीं की। सम्पादक तथा सम्पादक जी को छकाने वाले लेखकों कवियों को बहुत २ धन्यवाद। अपने राम भी यह विद्या जान जाते तो संपादक जी को तरसाते, परेशान करते, अन्त में छिप जाते।

X X X

आर्य कांग्रेस-सप्ताह प्रारंभ हो गया। उसे देख कर तो कोई नहीं कह सकता यह नई जान फूंक देगा। पता लगता था मुर्दे की अन्तिम सांस निकल रही है।

X X X

आर्यसमाज मूर्तिपूजा की ओर जा रहा है। सबूत- ओ३म् की पताका के सामने प्रणिपात करना है। कपड़े के सामने सिर झुकाना क्या मूर्ति-पूजा नहीं।

X X X

कवि लोग भी गल्ती करते हैं। सुनोगे? आज गा रहे थे "उजाड़ेंगे शहरों को जंगल बसा कर।" कोई कवि जी से पूछे "इस से लाभ"?

X X X

गुरुकुल अपने पिता का अनुरूप पुत्र है। इसमें जितने आन्दोलन चलते हैं थोड़े समय चल कर ~~[illegible]~~ समाप्त हो जाते हैं। ब्रह्मचारियों का भी हौसला पस्त और सोडावाटरी जोश ठण्डा पड़ जाता है। ~~क्या~~ यह अपने पिता की अनुरूपता नहीं तो और क्या है?

X X X

अब्दुल रशीद की अपील खारिज हो गई!

जगद्वन्द्य श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के घातक अब्दुल रशीद की अपील प्रिवी कौंसिल ने खारिज कर दी है। उसको शीघ्र ही फांसी दी जायगी। पर यह फांसी दिल्ली में न दी जा कर ~~[illegible]~~ पंजाब में दी जायगी॥

(नेशनल प्रेस, ~~इंडिया~~ आफ इंडिया)

धन्यवाद — गतवर्ष प्रकाशक बीमार हो जाने के वजह से छूटे ४ अंक पाठकों को हम भेंट नहीं कर सके थे। इस वर्ष यद्यपि विलम्ब हो गया है तथापि इस अवसर के उपयुक्त ४ अंक हम भेंट कर सके यह हमें सन्तोष है। पत्र को नयनाभिराम बनाने में जिन्होंने योग दिया है उन श्री उपेन्द्र जी श्री चन्द्रगुप्त जी विद्यालंकार के हृदय से कृतज्ञ हैं। विजय-वैजयन्ती के इस अंक को जन्म देने वालों में श्री (जनार्दन) धर्मेन्द्र श्री रणजीत का नाम स्मरणीय है। इन दोनों भाइयों ने जिस तत्परता से कार्य किया है उसको हमारा दिल ही जानता है हम उनके निकट आभारी हैं। हम इस सहायता के लिए किन शब्दों में धन्यवाद दें। समाचार-संपादक श्री सत्यमित्र को हम भूल नहीं सकते। हम इन महानुभावों के निकट आभारी हैं व रहते हैं। हमें विश्वास है कि आगे भी 'विजय-वैजयन्ती' को अपनी कृपाकोर का पात्र बनाये रहेंगे। उसकी समय २ पर सुध लेते रहेंगे



तन की दुति स्याम सरोर लोचन कन्ज
की मन्जुल लोई हरै

अति सुन्दर सोहत धूरि भरे छबि भूरि
अनंग की दूरि धरै।

दमके दुतिया दुति दामिनी ज्यों किलके
कल बाल बिनोद करै

अवधेश के बालक चारि सदा मम मानस
मंदिर मे बिहरै॥



भाग-५ } सम्पादक- इन्द्रसेन ११श. { अङ्क-३

महर्षि स्तुति.

दयाधन! हे तव जय जयकार

भारत नहीं, किन्तु ऋषिवर! तव, ऋणी सकल संसार ॥
सघन अविद्या घनपटली में, लुप्त हुआ श्रुतिसार।
सदय हृदय से किया आपने, फिर उसका विस्तार ॥१॥
राग-रोष, कुल दोष-कोष का, किया आशु संहार।
परम पुण्य तव प्रेम मंत्र का, सब में हुआ प्रचार ॥२॥
जीवन ज्योति जगी जनता में, मिटे विविध विकार।
ज्ञानसूर्य की दिव्य प्रभा में, चिरके ज्ञान विचार ॥३॥
विश्वबन्धु श्री दयानन्द ने, किया परम उपकार
"श्रीहरि" ऋषिवर! के चरणों में, बार बार जयकार ॥४॥

"श्रीहरि"

मानव जीवन

परोत्कर्ष को देख कभी आमर्ष न करना,
दुख में मुख को म्लान सौख्य में हर्ष न करना।
विजय पराजय हानि लाभ में सम हो रहना,
विपति वज्र की चोट शान्ति से ऊपर सहना।
मानव जीवन महनीयता भूल नहीं जाना कभी
विषम विषय विषपान से मत निजमन बहलाना कभी॥

अमूल्य लाल

मणिमाणिक बहु रत्न सदन में,
जगमग जगमग जगते हों।
सुरपति सदन सदृश सुषमा से,
रङ्क सदन सम लगते हों।

राज राज की राजश्री वह,
रंजन मन का करती हो।
पुण्य अजिर में चाहे कमला,
विमला सदा विहरती हो॥१॥

ऋद्धि-सिद्धि ले चारु चमर को,
चाहे सदा डुलाती हों।
रति रम्भा सी नवल वधूटी,
मन्दिर में [illegible] हों।
कितने ही हों लाल बिना इक,
लाल शून्य संसार सभी।
मिलता है क्या नेत्र ज्योति बिन,
दिव्य दरश का सार कभी॥२॥

'श्रीहरि'



विजय-वैजयन्ती.
संयुक्त
दैनिक महाविद्यालय.

१३ कार्तिक १९८१ अभ्युत्थान २९ अक्टूबर १९२४

आचार्य के चरणों में.

दीपमाला के क्षणिक आलोक के माला के गगन में फैलने के साथ तुम्हारी देदीप्यमान महान् आत्मा की विशाल ज्योति की महती शिखाओं का उज्ज्वल प्रकाश अन्तरिक्ष में बिखर कर समग्र लोक को अपनी शुभ्र उजाले से आलोकित करने लगा। उस उज्ज्वल आलोक में जो विश्वास और श्रद्धा भरी गहरी सांस ली थी वह समस्त विश्व में व्याप्त समीर लहरी में मिल गई और दसों दिशाओं में "आत्मा की अमरता" का पुण्य संगीत छा गया। गगन में झिलमिलाती तारक माला और दिशाओं को आलोकित करने वाली क्षुद्र दीपमाला के टिमटिमाते प्रकाश में तुम्हारा चर्म-चक्षुगोचर जीवन दीप निर्वाण हो गया। इसको हम भूले नहीं। आज भी हमारे श्रद्धा से हृदय भक्ति विह्वल होकर उस दृश्य का स्मरण करते हैं जिससे एक गुरु का तार्किक और नास्तिक हृदय श्रद्धावान् और आस्तिक हृदय में परिवर्तित हो गया। आज हमारे हृदय अविश्वासी हैं, नास्तिकता के प्रवाह में बहे जा रहे हैं परन्तु भी उस अमर दृश्य को हमने अपने हृदय पटल पर अंकित कर रखा है उसका दर्शन हमें दुःख में सान्त्वना और आश्वासन विपत्ति में धैर्य और स्थिरता तथा गहन अंधकार में विद्युत् लोक के सदृश हमको मार्ग दिखाता है। उस दृश्य को स्मरण कर आज भी हमारा नतमस्तक हृदय तुम्हारे चरणों में झुक आता है।

× × × × × × ×

हिमाच्छादित तुषारमंडित सुवर्ण रंजित अलबेले नंदन की बर्फीली चोटियों पर कांटों से घिरे वाले सूर्य की लालिमा की छवि को धारण किये तुम्हारा भूख से व्याकुल दुःख पूर्ण गगन वदन को जिससे रक्तधारा स्रवित हो रही थी स्मरण कर आज हमारा खिन्न चित्त और दुःखी हृदय पुलकित हो उठता है। गर्व से हमारी छाती फूल उठती है पुण्यस्थली का प्रत्येक कण अपनी पवित्रता तुम्हारे चरणों के स्पर्श से प्राप्त कर रहा है जिसको स्मरण करते नमन करता उन्नत मस्तक विनत पुलकित तुम्हारे चरणों पर सहसा झुक जाता है। यह वही शैल शिखर है जिन पर खड़े होकर उषा की प्रथम किरणों के मध्य तुमने आत्मदर्शन किया था और पाई थी अनन्त शान्ति और ज्ञानालोक का अक्षय भण्डार और ... विश्वविमोहिनी माता का निश्चय

विघ्नहारी मनमोहक रूप और दर्शन किया था रिपुदल ने वीरों की अनन्त अजेय शक्ति का और संकल्प किया था अपने आपको मातृ-चरणों में अर्पण करने का उस पुण्य घड़ी का और पुण्य स्थली का आज भी हम स्मरण करते हैं। आज भी उन शिलाओं पर तुम्हारी 'विजय वैजयन्ती' उड़ रही है और हमको पथ दिखा रही है, उस चोटी तक पहुंचने की शक्ति हम में नहीं है, मां की अतुल अनुपम रूप देखने की सामर्थ्य हम में नहीं है। 'आत्मदर्शन' हमारी शक्ति के परे हैं, यह सत्य है; पर हमारी इच्छा नष्ट नहीं हुई न उत्सुकता मिटी है। हम तुम्हारे पदचिन्हों को सदा ढूंढते रहते हैं, हम की स्मृति की आग में हम तुम्हारे पदचिन्हों को देखकर प्रसन्न होते हैं और मार्ग में अग्रसर होने के लिए पाते हैं नई शक्ति, नव स्फुरण और नया जीवन और झुक जाता है हमारा माथा पुण्य यात्रा के पुण्य पथ पर नव शक्ति संपन्न हो कर अग्रसर होते हुए।

× × × × × ×

पुण्य तोया भागवती भागीरथी का पवित्र सलिल-प्रवाह अविच्छिन्न वेग से चिंतन काल से प्रवाहित हो रहा है और इसके तट पर सनातन काल से हिन्दू जाति जाग रही है पर गंगा ने न हिन्दू जाति ने ऐसा अपूर्व पत्र देखा था जो उसने आज से ५८ वर्ष पूर्व (१८२५ ई.) देखा. संसार ने देखा एक लंगोटी बंद सन्यासी शरीर पर विभूति रमाए, हाथ में 'पाखण्ड खण्डिनी' पताका लिए हुए (रखा है) और सुन रहा है, पर्वतों को चीरकर चट्टानों को चूर करके आती हुई गंगा की लहरों में वीणा दीना विनम्रा और धूल धूसरित माता का हाहाकार, दुखी ही उद्विग्न अशान्त मानव समाज का करुण क्रन्दन और प्रपीड़ित महिला वत्सला माताओं का मर्मान्त का विलाप तथा देखा पश्चिमाशा से आते हुए जल निधि पूर्व की ओर क्षत विक्षत हृदय भारत को (और उसको) पावन करते हुए बारह वर्ष की महान और कठोर तपस्या के अनुष्ठान का घोर संकल्प. आज भी वह रूप हमारी आँखों के आगे मूर्तिमान होकर नाच रहा है। तुम्हारी महत् साधना, दृढ़ संकल्प और कठोर तपस्या का कवच सुनाकर गंगा हमारे अंदर नवजीवन का संचार कर रही है, तुम्हारी उस उज्ज्वल विभूति को शीश पर धारण करने को उत्सुक है गंगा, तभी आज भी उछल उछल कर हमारे तुम्हारे चरणों में झुके शीशों पर विभूति लगाकर रक्षा का अभय कवच पहिना रही है।

× × × × ×

भारत की गौरव स्वरूपा भारती

भूत और वर्तमान राजधानी में १८७७ के साल में शाही दरबार लगा हुआ था। देश का दिमाग और हृदय वहां उपस्थित थे। सब तरह के विचारक और सब प्रकार के लोग दरबार की शोभा देखने आए थे, तुम भी पहुंचे थे, पर तुमको चिन्ता थी कि भारत में बसने वाली सब जातियाँ और भिन्न धर्मों के मानने वाले निवासी शान्ति से किस प्रकार रह सकते हैं, कौन सा ऐसा मार्ग है जिस पर चलकर सब कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हों और देशोन्नति के पथ में एक भाव और एक हृदय से आगे बढ़ें और चाहते थे एक योजना के निर्माण में जिससे देश की राष्ट्रीयता का विकास हो तथा चाहते थे संसार में फैले सब धर्मों का एकत्रीकरण करना। आज उसी दिल्ली में दंगों से घबरा कर ऐक्य सम्मेलन कर चुके हैं। तुम्हारी छाया वहां भी नज़र आई। उस को देखकर 'महान् विचारकों' के हृदय भी तुम्हारे चरणों में झुक गए।

× × × × ×

राजपूत वीरांगनाओं की वीरता गाथा को दिग् दिगन्त में सुनाने वाले चित्तौड़गढ़ के प्राचीर पर चढ़कर तुमने देखा देश की विशृंखलित विच्छिन्न शक्ति को, देश के गौरव-रत्नों के पुत्रों के चरणों पर लोटते हुए और देखा विजातीय शक्ति की सुनहली जंजीरों को अपने पैरों में, उस समय देखा विलुप्त विगत स्वाधीनता के शुभ स्वप्न को और तुम्हारी अन्तर्भेदिनी दृष्टि ने देखा हिमशैल के शिखरों के पीछे चमकती स्वाधीनता सूर्य की अरुणिमा को। इस युग में तुम्हारे किये गए स्तुत्य प्रयत्नों को स्मरण कर तुम्हारे देशवासियों का नत माथा भी ऊंचा हो जाता है और अविश्वासी युवक दल श्रद्धा से प्रेरित होकर अपनी प्राचीन सभ्यता और प्राचीन ग्रन्थों के अनमोल रत्नों को ढूंढने में व्यस्त हो जाता है।

× × × × × × ×

संसार की किसी भी शक्ति के सामने न झुकने वाला उन्नत तुम्हारा मस्तक नमते देखा विवाहिता चतुर्वर्षीया बालिका के सम्मुख और पुकारा उसे संसार के सबसे मधुर शब्द 'मां' से। यह घटना आज युवक दल अपने हृदय में अंकित कर मातृ-चरणों में आराधना में आगे बढ़ रहा है, तुम्हारे उस महान् आदर्श के सामने सब आदर्शों का स्वप्न लेने वाले भी अपना सिर झुका देते हैं।

× × × ×

तुम्हारे चरित्र गाथा के पारावार के अवगाहन की शक्ति हम में नहीं है न हम उन तलस्पर्शी अनमोल रत्नों को अथाह सागर से निकालने की सामर्थ्य रखते हैं। न हमारी टांगों में इतना बल है कि तुम्हारे बताए सुदूर परिस्थित ध्येय तक पहुंच सकें। हमारे अकुशल और निर्बल हाथों में इतना बल नहीं है कि तुम्हारी

उठाई वैदिक धर्म की पुण्य पताका और पाखंड खंडिनी पताका को थामे रहें। तुम्हारी बनाई योजनाएँ हमको अवश्य हार्दिक और आत्मिक प्रतीत होती हैं हम नन्दन-वन के पुष्प से लाए फूलों के रंग और गंध पर रीझ रहे हैं. यह सब सत्य है पर तुम्हारी स्मृति हमारे हृदय में आत्म सम्मान को जागृत करती है और संचार करती है हमारे हृदय में नवजीवन देती है नूतन शान्ति।

× × × ×

नवयुग के प्रवर्तक महात्मन् गत्युगमण? तुम्हारी दिव्य स्मृति सदा हमारे हृदय में जागृत रहे जिसको आलोक में अपना पथ सदा देखते रहें। तुम्हारी आधिभौतिक दिव्य मूर्ति संसार की विपत्तियों के सम्मुख खड़े रहने में सहायक हो। तुम्हारी तेजोमयी स्नेहमयी मूर्ति पुण्य पथ पर अविचल बनाए रखने में और देश की दरिद्रता को दूर करने में के लिए सदा उत्साहित करती रहे। तुम्हारी जलद गंभीर गर्जना हमको मोह और प्रलोभनों से सदा दूर रखे और बताती रहे सदा सत्पथ की ओर और रोकती रहे हमको सदैव पाखंड के समर्थन करने से।

× × × × × ×

पूज्य आचार्य! आज तुम्हारे चरणों में हम श्रद्धा और हाथ लाए हैं हमारे संकीर्ण अनुदार हृदय विश्व शान्ति का प्रसाद नहीं पा सके हैं, न विश्व मन्दिर में चढ़े हुए फूलों को पा सके हैं जिनको अर्पण कर अपने को धन्य समझें। फिर भी इस पुण्य स्मृति के दिन तुम्हारे चरणों में ये विनीत नीरस पुष्प भक्ति भाव से अर्पित हैं

× × × × × ×

कुलपिता

का

हृदयोद्गार.

मैं गुरुकुल की स्वामिनी सभा को धन्यवाद देता हूँ जिसने इस भूमि में मेरा आत्मिक पुनर्जन्म हुआ उसको अन्तिम नमस्कार करने का अवसर मुझको दे दिया। पिता दयानन्द ने मुझे घोर नास्तिकता की चौड़ी सड़क से हटाकर श्रद्धा और धर्म के सीधे मार्ग पर चलाया परन्तु गुरुकुल भूमि ने अपने गर्भ में सुरक्षित रखकर जहाँ मेरे आधीन ब्रह्मचारियों को आत्मबल प्रदान किया वहाँ मेरी भी काया पलट दी। जिस भूमि में मैं सचमुच द्विज बना वही मेरी मातृ भूमि है।

जिस खड्ड के नीचे २० वर्ष तक मैंने [illegible] सभा का आनन्द लिया था जिस कल्पवृक्ष के नीचे मेरे ब्रह्मचारियों ने अपने हृदय की उठती हुई मलिनताओं को प्रायश्चित्त कर आँसुओं से धो डाला जिस वृक्ष की शीतल छाया के नीचे बैठ धर्म और देश की उन्नति के लिए यज्ञ की चिन्ता होती रही उसके चरणों में बैठ कर मैंने सदा के लिए अपने प्रेम का परित्याग मातृभूमि से किया। फिर महाविद्यालय भवन की ऊँची अटारी पर चढ़कर हिमालय के चरणों में गंगा को लहराते हुए देखा और २३ वर्ष के अनुभवों को लेकर पवित्र स्थान के साथ जोड़कर वह चित्र सदा के लिए अपने हृदय पर अंकित कर लिया।

गुरुकुल भूमि में एक वायुमंडल बन गया था जो आज के विरोधी आक्रमण सभी विरोधियों के झकोरों ने भी सर्वथा पूरा नहीं किया। ईश्वर करे इस समय के शिक्षक और छात्र गुरुकुल के आत्मिक पवित्र भावों को फिर से अनुभव ले कर जागृत करें। और जिस उद्देश्य को लेकर गुरुकुल ने जन्म लिया था उसको किसी अंश में पूरा करने का यत्न करें।

अन्तिम शब्द.

लीजिए, समय आ गया अब "विजय वैजयन्ती" विषय निर्वाचन के साथ २ इस अंक के साथ अन्त होती है। इस बीच में अपनी अल्प मति और तुच्छ शक्ति से जो कुछ हो सका उसको आपके सामने उपस्थित करने में कोई उपाय उठा नहीं रक्खा। जिन परिस्थितियों जिन दिनों में हमको आपके सामने उपस्थित होने का अमूल्य अवसर प्राप्त हुआ उससे आप परिचित हैं। उनको ध्यान में रखकर हमारी तुच्छ सेवाओं पर विचार कीजिए और फिर सम्मति बनाइए। इस अवसर में हमसे असावधानी से एवं वश बहुत सी भूलें हुई होंगी जिन का होना बहुत संभव है उसके लिए विनम्र भाव से आपसे क्षमा चाहते हैं।

हमारे मनोरथ पूरे नहीं हुए, हमारी कल्पनाएँ ऊँची नहीं उठीं, न हमारे स्वप्न सिद्ध हुए, इस अवस्था में आपकी आशाएँ सफल हुई होंगी, यह हमारे निकट सोचने का विषय ही नहीं रहता। पर फिर भी आपने जिस स्नेह से अपनाया है उसके लिए हम कृतज्ञ हैं। जो उत्सुकता दिखाई है उसको सदा हम अपने हृदय पटल पर अंकित रक्खेंगे और यह सदा हमको आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती रहेगी। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि अवसर हमको अगर मिलेगा हम आपकी सेवा में उपस्थित होने से न चूकेंगे। इसी प्रसंग में हम यह कह देना चाहते हैं कि 'वैजयन्ती' और म. वि. वै. मिलन अथवा "वैजयन्ती" स्वतंत्र और वैयक्तिक पत्र है, म. वि. वै. सामान्यतः और स्नेह का आलोक दोनों की चीज़ों को आना भावी के अधिकारियों पर निर्भर है.

जिन बंधुओं ने अपने हृदय के धैर्य अथक परिश्रम और अविरल लगन तथा मनोयोग पूर्वक अपनी संपूर्ण शक्ति से इसको इस रूप में आपके सन्मुख लाने का भगीरथ प्रयत्न किया है और स्वेच्छा भावना से अपने आपको 'विजय वैजयन्ती' के लिए अर्पित कर दिया था उनको किन शब्दों में आभार प्रदर्शित करें। हमारा हृदय मूक है और श्रीमान सिर झुका है परमात्मा बल दें कि हम सदा अपने ऐसे ही बंधुओं के सहयोग को प्राप्त करने के योग्य बने रहें।

अपने सहयोगियों और दिन रात के साथियों को किन शब्दों में धन्यवाद दें कोई यह नहीं सूझता हम जानते हैं उनको किसी बात की आवश्यकता नहीं है पर उनको क्या अर्पण कर कर्तव्य मुक्त हों यह नहीं सूझता। मंगलमय भगवान उनको शक्ति दें कि हमको वे सदा अपनाए रहें। अन्त में जननी जन्मभूमि और विश्व शान्ति के चरणों में नमन के साथ विदाई माँगते हैं।

"वन्दे मातरम्"

ऋषि को प्रणाम.

[श्री पाल रिचर्ड]

स्वामी दयानन्द निस्सन्देह एक ऋषि था सब पण्डितों ने उस पर पत्थर फैंके !

स्वामी दयानन्द निस्संदेह एक ऋषि था, उसने अपने में महान् पूर्व और महान् भविष्य को मिला दिया।

एक सच्चा ऋषि जो नष्ट हुआ निर्माण करने के लिए जो मृत्यु में और मृत्यु के रूपों को नष्ट करता है और जीवन के पुनर्निर्माण के लिए।

वह आया — तुम्हारी मूर्तियें तोड़ने के लिए, देवताओं को उनका स्थान दिलाने के लिए।

वह आया तुम्हारे कारागार तोड़ने के लिए तुम्हारे जाति बन्धन को तोड़ने के लिए तुम्हारी आत्माओं को बन्धन से छुड़ाने के लिए!

वह तुम्हारे समाधिस्थानों को खोलने आया। वह तुम्हारे राष्ट्र को पुनरुज्जीवन देने आया।

केवल एक ऋषि ऐसे काम कर सकता है और जब वे काम पूर्ण हो चुके हैं हमें ऋषि को प्रणाम करना चाहिए। जब वह प्रस्थान करता है।

आओ, हम ऋषि दयानन्द को नमस्कार करें जो दिवंगत हुआ है। और हम अपनी श्रद्धा सामने रखने उसके लिए जो आरहे हैं।

एक कुलपुत्र का हृदयोद्गार.

गुरुकुल की बाढ़ के पीछे देख कर मन मे सन्तोष और दुःख दोनों हुए। सन्तोष इस पर कि जहाँ बाढ़ ने अन्य कई स्थानों पर सर्वनाश कर डाला है वहाँ गुरुकुल में केवल कुछ एक इमारत का और थोड़े से माल का नुकसान हुआ जान सब बच गई और आज भी सिर छुपाने को स्थान है। दुःख इस बात पर हुआ कि वह ईंटे, वे छतें, वे रास्ते वे कमरे और वे पेड़ जो जीवन के अङ्ग और साथी बन चुके थे पानी के अर्पण होगये। और भी अधिक दुःख इस बात पर हुआ कि मैंने गुरुकुल के वर्तमान अधिकारियों को संतोष की अपेक्षा दुःख प्रकट करते ही अधिक देखा, और दूर की दृष्टि से यह भी देखा कि अविश्वासी हृदय अब प्यारी गुरुकुल भूमि पर भरोसा न करके उसे छोड़ देंगे और यह हरा भरा चमन, जिसमें जले हुए दिलों को शान्ति मिलती थी, कुछ ही वर्षों में कंटीला जंगल बन जायगा। उस समय मुँह से एक ठण्डी आह निकली और आँखों में से दो गर्म बूँदें टपक पड़ीं।

"श्रीइन्द्र"



दीपमाला.

[श्री ब्र. इन्द्रसेन जी १३ श्रे]

दीपमालिका का उत्सव बहुत पुराना है। हिंदू जाति में कई प्रथाएँ ऐसी हैं जो अब तक जीवित हैं। सहस्र शताब्दियों के अनन्त हिन्दू जाति में इस उत्सव को बड़े उत्साह तथा मनोरञ्जकता के साथ मनाया जाता है। अब भी वशिष्ठ राम लक्ष्मण आदि महापुरुषों का नाम बड़े गौरव तथा सम्मान से स्मरण किया जाता। निस्सन्देह इन्हीं अखण्डित प्रथाओं के कारण भारतवर्ष का प्राचीन इतिहास उपलब्ध हो सकता है। ये प्रथाएँ ही अलिखित इतिहास हैं। पाश्चात्य विद्वान् कितनी ही युक्तियाँ तथा प्रमाण रामायण के इतिहास न होने में पेश करें परन्तु ये जीवित जागृत संस्थाएँ, अविच्छिन्न प्रथाएँ अवश्य उसकी सत्यता तथा प्रामाणिकता की ही साक्षी देती हैं, वीबर का इसे केवल एक Myth प्राचीन साहित्य मात्र सिद्ध करना उसकी अनभिज्ञता को ही सूचित करता है। रामायण एक साहित्य है, ऐतिहासिक साहित्य है जो सत्य है, वास्तविक है जिसमें सन्देह करना व्यर्थ है।

वाल्मीकि (आदिकवि) की कवितामयी रचना से अनेक भारतीय विद्वानों ने भी इसे आलङ्कारिक ग्रन्थ बताने की चेष्टा की है। अन्य पुराण आदि मध्यकालीन कृतियों की तरह इसे भी किसी मध्यकालीन कवि की कृति सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। पं. सातवलेकर जी वैदिक साहित्य की दृष्टि से इस सारे इतिहास को आध्यात्मिकता में परिवर्तित करना चाहते हैं। राम का आत्मा तथा हनुमान का अर्थ प्राण करके एक आध्यात्मिक सृष्टि की ही कल्पना की है। परन्तु यह माननीय नहीं है। यह जातीय उज्ज्वल इतिहास के विलोप का साधन मात्र है दीपावली विजया दशमी, राम नवमी आदि त्यौहारों का अब तक चले आना यही सूचित करता है कि रामचरित एक सच्ची घटना है न कि कवि की कपोल कल्पना।

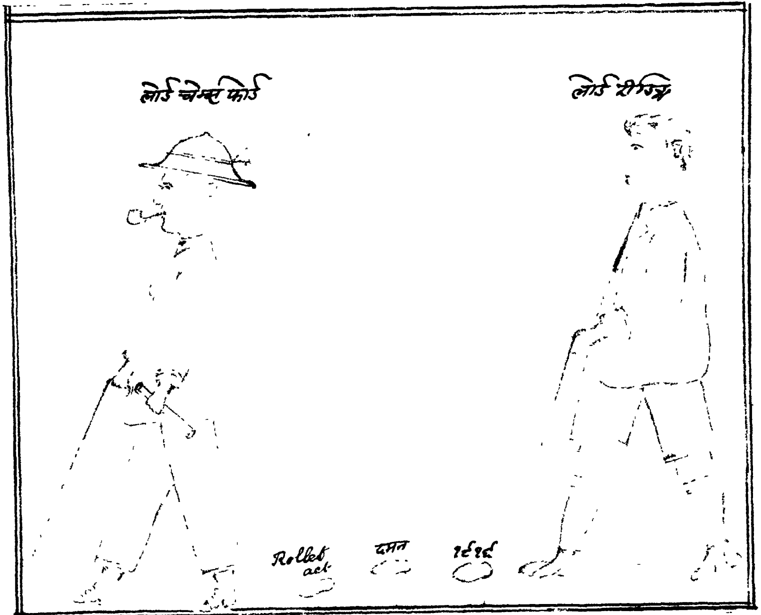
दीपमाला के सदृश अन्य त्यौहार भी हैं जो हिन्दू जाति के जातीय-जीवन को सुव्यवस्थित बनाए रखते हैं इन दिनों में हिंदू अपनी जातीयता को अनुभव करते हैं, अपने प्राचीन ऋषियों तथा राजर्षियों का स्मरण करते हैं और अपने ~~जातीय~~ जातीय-भवन के निर्माण में फिर से सचेष्ट हो जाते हैं ये उत्सव वास्तव में जातीय स्वतन्त्र सत्ता के आधार हैं।

किसी निराशावादी को दीपमालिका टिमटिमाते दीपक भारत की असहाय अवस्था पर आँसू बहाते प्रतीत हों, परन्तु लेखक को ये ज्योति के पुञ्ज दीप्ति के निकेतन, आशा की झलक को आगामी उज्ज्वल प्रभात को ही इङ्गित करते प्रतीत होते हैं। यदि लेखक को अपने भारतीय भूत [Past] का अभिमान है तो उसे अपने भारतीय भविष्य [Future] का उससे भी अधिक अभिमान है। नव उदीयमान सूर्य की पूर्व से बिखर की हुई अरुणिमा भूत के भास्कर की अरुणिमा से अधिक कान्तिमयी होगी अधिक उज्ज्वल एवं शुभ्र होगी। भारत का भविष्य अधिक उज्ज्वल है अधिक गौरव से होगा है भारत का भविष्य महान है।

दीपावली का उत्सव एक उत्साह का एक जागृति का उत्सव है। इसमें न केवल हिन्दुओं को अपितु मुसलमानों को भी हाथ बटाना चाहिए। यदि हम अपना जातीय भवन बनाना चाहते हैं तो हमें अपने मुसलमान भाईयों को विश्वास दिला देना चाहिए कि श्री राम न केवल हिंदुओं के वीर हैं प्रत्युत सारी जाति के हैं जिसमें मुसलमान भाई भी सम्मिलित हैं।

यदि सात करोड़ भारत पुत्रों का जन्म मरण, संपत्ति विपत्ति, सौभाग्य, दुर्भाग्य, सुख दुःख, एक ही मातृभूमि के साथ संबद्ध है तो कोई कारण प्रतीत नहीं होता कि वे क्यों न उस मातृभूमि के प्राचीन बुज़ुर्गों को अपना बुज़ुर्ग स्वीकार करें। श्रीराम मुसलमानों के भी हैं जैसे कि वे हिन्दुओं के हैं॥

लॉर्ड चेम्सफोर्ड के चरणचिन्हों पर लॉर्ड रीडिङ्ग.



फूलों का हार.

यो वै भूमा तत्सुखं नाल्पे सुखमस्ति.

ये सुन्दर जो भवमन्दिर में देवाडम्बर में आसीन
देते हैं प्रतारणा छलना प्रेमरत्न ले तुझ से छीन।
क्यों रे! हे! मन! प्रेममोल के हैं शतांश के भी बेजोग—
पशु उनसे विश्वास योग्य हैं निज को जो कहते नर लोग।
हे निराश मन मत निराश हो सुख निर्झर की ओर प्रयाण
कर तू। जहां अमरता नद कर शीतल करती है ये प्राण।
जो असार सारावभास इस जग में वंचित होते हैं—
प्रेम मोल दे कर छलियों को हो निराश निज रोते हैं——
जिस माया विहीन ममता से जितने प्रेम अश्रु ये दान
नराभास के चरणों में हाय! दिये हैं तूने प्राण
यदि उनमें से एक अश्रु भी उसी भाव से भोले प्रान
देते उस अनन्त प्रेमी के चरणों में, जीवन में दान।
तो तेरी ये प्रेम पिपासा अमृत उस निर्झर के नीर—
होती शान्त; और पाता तू अमर धाम उन के पद तीर
तज दे ये सतीत्व मेरे मन! पाने को आनन्द निधान
जाकर जहां निवर्तन होता नहीं वही घर मेरे प्राण!!
वंशी ध्वनि में वह 'लीला नट' देते हैं ये सन्देसे दान
अर्पण कर मन उन्हे भक्त तू! निश्चय पावेगा कल्यान!!!

"श्रीशारदेश कैलाश।"

शूर.

सोई शूर कहावे, जग में सोई शूर कहावे
जो विषयों के सारे दल को रण में जीत के आवे ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह के लश्कर में घिर जावे
आखिर तक लड़ते लड़ते ही रण में प्राण गंवावे ॥
कामदेव के बाणों से भी ज़रा नहीं घबरावे ।
धीरज धर के खड़ा रहे और मार मार गिरावे ॥
क्रोध की उठती ज्वालाओं की सारी आग बुझावे
प्रेम का शस्त्र उठा कर उसको रण से मार भगावे ॥
मोह मयी इन जंजीरों से अपनी देह छुड़ावे
ज्ञान के पैने शस्त्रों से जो, इनको काट गिरावे ॥
अपने मन के घोड़े को जो चाबुक मार सधावे
सधे हुए घोड़े पर चढ़ के रणभूमि में आवे ।
अपने गढ़ से सारे रिपुओं को जो मार भगावे
अपने गढ़ का राजा बनकर विजय ध्वजा फहरावे ॥

चोर चुराते हैं धन तेरा

जो हैं घर के ही अन्दर निसदिन करत बसेरा ॥
बाहर के चोरों पर तूने हाय बिठाया पहरा ।
जो घर के ही अन्दर रहते उनको क्यों ना घेरा ॥
तेरे घर के अन्दर छाया कितना हाय अंधेरा ।
उसमें ही छिपकर निसदिन ये हरते सर्वस तेरा ।
चोरों की चिन्ता में सुरत जगा के कर तू फेरा ।
चोर ही जो छिपे हैं घर में उनको क्यों ना हेरा ॥

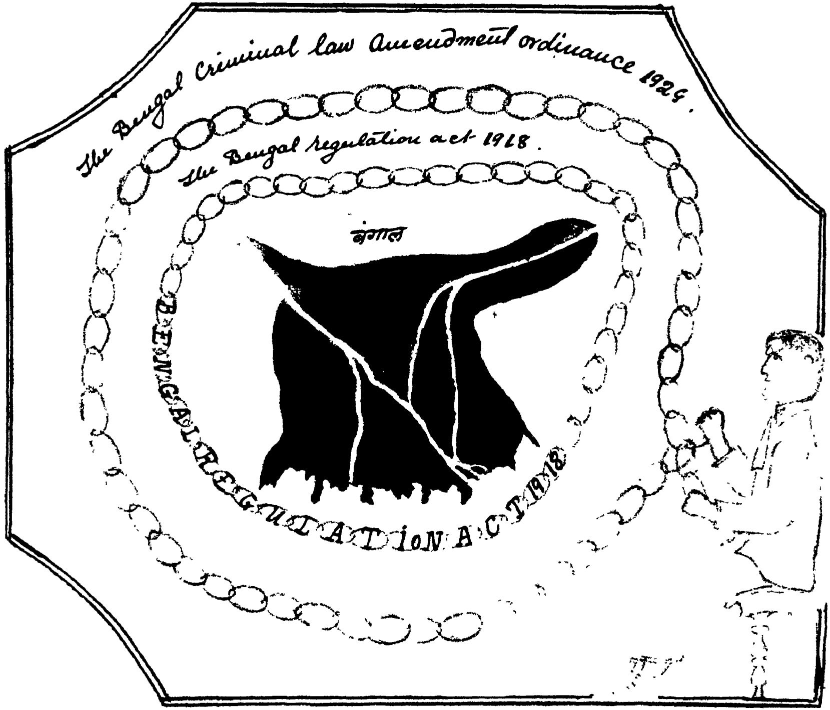
(गतांक से आगे)

उन्हीं दिनों देशज की धानी रंगवाली चुनरी के साथ
कलियों का काला पाजामा पहिना करती थी मैं नाथ।
चम्पा की अति सघन मालिका थी धम्मिल्ल पर शोभित खास
पृष्ठ देश पर आलम्बित थे केश कृष्ण तम बन कर पास
जिनमें 'मन-कुरंग' हे स्वामिन् उलझा था चंचल उस वर्ष
प्रथम बार जब यौवन नद में ज्वार उठी थी भर कर हर्ष
पड़ता है क्या याद नाथ ? वह मिलन चिनौची के उस तीर –
अधरों पर धर रजतपात्र को पीती थी जल हो गंभीर –
यौवन अंगों के द्वारों से झांक रहा था हो उद्दण्ड –
औ 'मुग्धता' निर्वासन का सुने खड़ी थी जीवन दण्ड।
जीवन में परिचय विहीन नव व्रीड़ा ने था किया प्रवेश।
हृदय अबाध्य युवक सम चिन्तित थे फिरने को नूतन देश।
उसी समय सहसा आये थे 'स्वर्णपात्र' ले तृषित कुमार।
करने को जलपान वहीं पर दैवयोग से पहली बार
किन्तु देख कर मुझे न जाने सह क्यों भी के मुसकान
निर्निमेष हो खड़े रहे थे।। तृषा मिटाते थे क्या प्राण ?
मेरी भी आंखें सहसा उठ देख आप की वह छवि मौन
डूब गईं थी लाज सिन्धुओं के क्या जाने गह्वर में कौन ?
विजनस्थल, । संध्या की वेला ; भरे मांग में थी सिन्दूर –
पहली बार अलौकिक लज्जा का उमड़ा था दुर्दम पूर
विमल कुमार ! याद पड़ता है ? प्रथम बार लेकर मम नाम
मोल लिया था मुझ दासी को स्वर में 'ओ: रे ! बेदाम !
"जेबुन्निसा मुझे भी पानी दे जाओ पीने को" नाथ।
यही प्रथम आदेश दान दे 'धन्य दिवस था' किया सनाथ

जिन कोमल पैरों से चल कर जिन आँखों से झांकी मार
साथ देने को आई थी पानी में रञ्जित कुमार!
किन्तु हाय जो छवि नयन में, मन में, प्राणों में थी नाथ!
मैं अभागिनी उसे वर्ष भर ढूँढ़ न पाई दीन अनाथ!!
प्राणनाथ! क्या दण्ड उसी का हाय! आज मैं पाये हूँ?
भूले हो तुम मुझे यद्यपि मैं वैसे ही अपनाए हूँ!! —
हाँ फिर; — लेते हुए हाथ से मेरे वह पानी का ग्लास
पीड़न की थी अधन्य तर्जनी! अधरों पर फूला था हास!
मैं भी मन ही मन हर्षित थी लज्जित सी 'ऊः' कह इक बार
आँख घुमाकर देख नतमुखी खड़ी हुई थी राजकुमार!
इसी समय "पद-पद-ध्वनि" शंकित मैंने किया त्वरित प्रस्थान
उसी सुभग सन्ध्या को प्यारे! पाया था अविचल सन्मान
हृदय जानता है उस रजनी निद्रा कैसी आई थी?
किस भावी सुख की चिन्ता में जागृत निशा बिताई थी
तब से कितनी बार प्राण निधि करते थे मेरा सम्मान
'स्मृतिमय मंजुवासना के संग प्राणों से बांधे थे प्राण'
पड़ता है क्या नाथ! याद जब प्रथम बार कबरी के मूल
अपने हाथों से गूंथे थे मालामय होने को फूल!!!

(अपूर्ण)

"श्री शारदेश कैलाश"


The Bengal Criminal law Amendment ordinance 1925.
The Bengal regulation act 1918.
बंगाल
BENGAL REGULATION ACT 1918

गगनाङ्गण में —

कल की दिवाली — कल की दिवाली विगत वर्षों की तुलना में पुराने कुल वासियों को बहुत फीकी मालूम होगी. शामियाना नहीं तना हुआ था न उसके पायों की कुर्सियों का घेरा लगा हुआ था यद्यपि न लेने से पूर्व बुझने लग गये थे, नवोढ़ों ने अपने पुराने गाने निकालों को फिर दोहरा दिया, गीतियों की तान सुरीली रही पर विशुद्धता न रही . . . . . बहुत बातें कहने को मिल जायेंगी पर जल विप्लव को स्मरण कर यदि विचार करेंगे तो उनको निराश होने का स्थान न रहेगा।

सहभोज के विषय में इस अवस्था में कुछ कहना अनुचित होगा वर्तमान स्वास्थ्य विभाग के अध्यक्ष जी की सम्मति में सब चीजें उत्तम और स्वादिष्ट थीं यह प्रमाण पत्र सहभोज की सफलता के लिए पर्याप्त है। भोजनोपरान्त श्लोक बोलने की परिपाटी चली आती है इस अवसर पर अन्ताक्षरी में यह परिवर्तित हो गई थी। श्री ईश्वरदत्त जी ने तत्कालीन चार महानुभावों ने सबको अन्ताक्षरी के मैदान में ललकारा श्लोकों का ताल अच्छा हुआ इस अवसर पर जो हुआ करता है वही हुआ विजय बहुसमाज की हुई इस विजय को लाठी की विजय कहा जाये उनके विजय में सन्देह नहीं है संभव है नियमों की उपस्थिति में यह दृश्य पलट जाता। दोनों दल कुल के निकट आदर की वस्तु हैं। इसके उपरान्त होने वाले शारीरिक कर्तव्य हुनरों की प्रदर्शनी और आतिशबाजी हुई यह सब जल विप्लव का प्रभाव है फिर V.J. कम्पनी ने अपने दो गुब्बारे उड़ा कर दिवाली की मर्यादा और परिपाटी की रक्षा कर दी।

स्नेह प्रदर्शन — प्रीतिभोज में श्री उपाचार्य जी के कथन से प्रेरित होकर कांगड़ी पाठशाला के छात्रों के लिए जो स्नेह युत हाथों से भाइयों ने अपने भाग में से मिष्टान्न दिया है उसका मूल्य शब्दों में नहीं आँका जा सकता उसका मूल्य भावों में है यह घटना कुल के इतिहास में स्मरणीय रहेगी हम आशा करते हैं कि ब्रह्मचारियों के हृदयों में दीनों के प्रति प्रेम सदैव उत्तरोत्तर बढ़ता रहेगा।

विपत्ति के बादल — कानों में कोई कह रहा है कि वर्तमान उपाचार्य जी पर सरकार की ओर से विपत्ति आ रही है कृपा की सैनिक गवर्नमेंट प्रेम दिये गये या न आन को भी सह नहीं सकती। देशप्रेम और महात्मा गांधी का नाम भी गवर्नमेंट को नेस्तनाबूद करने में समर्थ है ऐसी कल्पना हम नहीं कर सकते परन्तु सैनिक विभाग के लिए म. गांधी का नाम हौआ है जिसके कारण श्री पं. जी पर विपत्ति आने वाली है श्री पं. जी हम सब के परिचित हैं अतः उनके विषय में कुछ कहना अनुचित होगा

पुनरावृत्ति — लार्ड कर्जन का यह वाक्य अभी भारतीयों के कानों में गूंज भी न पाया था कि ब्रिटिश कुल, ब्रिटिश संस्थाओं और ब्रिटिश लोगों की रक्षा के लिए हमें भारतीयों को होना पड़ेगा कि भारत सरकार ने गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया एक्ट में नवम्बर १९२५ नाम का नया शासन लेकर देश की चारियों तथा नागरिकों की व्यक्तिगत जीवन और

संपत्ति की रक्षा करना अपना ध्येय बना कर चल पड़ी और समूचे बंगाल को इस पाश में बांध लिया चारों ओर बंगाल में धर पकड़ खाना तलाशियाँ शुरू हो गई। १५७ से अधिक आदमी पकड़े जा चुके हैं जिनमें कांग्रेस कमेटी के मंत्री और स्वराज्य पार्टी के मंत्री और कलकत्ता कार्पोरेशन के चीफ एक्जीक्यूटिव आफिसर भी शामिल हैं। वाइसराय अनुभव करते हैं कि बंगाल में ब्रिटिश शासन की जड़ों को उखाड़ कर फेंकने के लिए गुप्त समितियों का जाल गहराई तक फैल गया है। अवस्था इतनी भयानक है कि कानूनों (साधारण) से उसका अवरोध नहीं हो सकता इसको सिद्ध करने के लिए डे और ब्रूस की हत्या चारगांव की डकैती और [illegible] पूर्वी का प्रकाशन तथा बम फैक्टरी का पकड़ा जाना इत्यादि घटनाएँ भी गुप्त (आदि भी के इसी होते हैं जो कि भी है) एंग्लो इण्डियन पत्रों और ब्रिटिश अदूरदर्शी राजनीतिज्ञों के कथन का प्रमाण (कथन) है इसमें रौलेट एक्ट की भयंकरता विद्यमान है यद्यपि हाईकोर्ट में अपील के लिए गुंजाइश है। पर हाईकोर्ट से निर्दोष करार दिया व्यक्ति फिर भी स्वतन्त्रता (स्वतन्त्र जीवन) का पालन का सकेगा। अलीपुर के केस में लिए से छूटे अभियुक्तों की तरह पकड़ा न जायगा और स्वतंत्र नागरिक का जीवन व्यतीत कर सकेगा इसका विश्वास कैसे होगा? भारत रक्षा कानून की अपमान जनक धाराएँ शामिल हैं। संदेह युक्त व्यक्ति को हमेशा पुलिस की नजरों में रहना होगा अथवा अतिथि गृह के दरवाजे खुले हुए हैं ही बंगाल रेगुलेशन एक्ट १८१८ का यह एक पुत्र है सांप का बच्चा विषैला ही होगा इसमें कोई सन्देह नहीं बिना कानून को भी भद्र मनुष्य किसी भी साधारण कर्मचारी द्वारा पकड़ा जा सकेगा तलाशी लीला सकेगी मुकदमा बन्द कमरे में विशेष अदालत के तीन जजों के सामने होगा। युक्ति और वकील का प्रवेश होगा भी तो कोई लाभ न होगा। मार्शल लॉ का यह दूसरा रूप है इसकी नृशंसता भी इसमें विद्यमान है। यह को मल कानून है जिस को देख कर भारतीय इतिहास में गुजरे सब उत्पीड़न की कहानियाँ स्मरण हो जाती हैं। १९१८ की धर पकड़ का नज़ारा बंगाल में अब फिर घूम रहा है। राजनीतिज्ञ इसको रौलेट एक्ट का भाई समझते हैं। स्वाधीनता-प्रेमी स्वतंत्रता की पतपती शिखाओं पर कुठाराघात समझते हैं। वह अनुभव करते हैं कि बंगाल के पुरोगामी युवक दल के उत्साही दलों को कुचलने के लिए बनाया गया है स्वराजिस्ट इसको अपने पर आक्रमण समझते हैं और कहते हैं कि हमारे समूलोन्मूलन के लिए बनाया गया है पकड़े जाने वाले व्यक्तियों के नाम देख कर इसमें सन्देह (कोई) होता है। कांग्रेस कार्यालय और तार के दफ्तर मन्दिर भी पुलिस के कब्जे में हैं। इस कारण कांग्रेस और हिन्दू-समाज अपने ऊपर आक्रमण का ख्याल करे तो अनुचित न होगा क्या हम आशा करें कि देश की छिन्न विच्छिन्न समस्त शक्तियाँ मिलकर इसका प्रतिरोध करेंगी।

गुप्त समितियों का प्रसार का कारण असहयोग की विफलता वाइसराय ने स्वीकार की है दूसरे शब्दों में १९२०-२१ में हुए दमन और उत्पीड़न को गवर्नमेन्ट अनुचित समझती है सुधार क्योंकि ये गए थे १९१९ की शाही घोषणा के अनुसार

जिस आशा पर छोड़ गए थे उस पर भी पानी फिर गया है सुधार हमारे ही हल्ला से नहीं पर इन समितियों को शान्त करने के लिए दिया गया था पर हम जैसे इंग्लैंड ही शान्त न हुए तो स्वाधीनता का उपासक युवक दल कैसे शान्त होता? इस समय प्रभावोत्पादक शब्दों का उत्तम अवसर है क्या देशभक्त लार्ड बर्केनहेड की चैलेंज का उत्तर उन्हीं के शब्दों में देंगे? उत्तर दें या न दें कम से कम उन युवकों की पुकार तो और निश्चित न करें। सहानुभूति का स्रोत यदि उनका नहीं उमड़ता तो चुप रहें और देखें कि स्वतंत्रता का पुजारी युवक दल किस प्रकार गवर्नमेंट का मुकाबिला करता है। यदि हमारे में इतना बल और साहस नहीं कि हम वीर युवकों की सहायता कर सकें तो मौनता धारे रहें किसी और अपना सहयोग न दें भारतभूमि की बलिवेदी की ओर बढ़ने वाले वीरों का अभिनन्दन देवगण और स्वाधीनता के उपासक तथा भावी ऐतिहासिक करेंगे। हमें एक भी ऐसा शब्द नहीं मुख से निकालना चाहिए जिससे उनका बल कम हो और गवर्नमेंट का बल बढ़े। हमें विश्वास है कि देश के क्षुब्ध और आंदोलित हृदय को देखकर नेतागण अपना कर्तव्य निश्चित करेंगे। हमें निश्चय करें पान करें देश का यह अमूल्य बलिदान व्यर्थ न जायगा" रंग देती है हिना पत्थर पर पिस जाने के बाद कुचले और व्यथित हृदयों की आग की भट्टी में भस्मीभूत हो जाय तो क्या आश्चर्य?

उत्तम पाठ — मि. बाल्डविन ने अपने मन्तव्यों को इन शब्दों में सन्देश दिया है: — work to keep Britain for British. इन्हीं शब्दों को बदलकर हम कह सकते हैं कि भारत भारतीयों के लिए है इस को लक्ष्य कर काम करो। क्या अंग्रेजी बातों को आदर्श मानने वाले इस वाक्य को अपना आदर्श बनायेंगे।

■ **फल क्या होगा** । ब्रिटिश पार्लियामेंट के निर्वाचन की धूम खतम हो गई सब पार्टियां अपना जोर आजमा चुकीं। सब की आँखें फल की ओर हैं श्री बाल्डविन या श्री रैमसे मैकडानल्ड के गले में भाग्यलक्ष्मी वरमाला पहिनाती है। हम उनमें से नहीं हैं जो कहते हैं कोई हो हमें कोई प्रयोजन नहीं है हम मानते हैं भारत की स्वाधीनता हमारे हाथों में है पर बाहर का प्रभाव उस पर पड़ रहा है शीघ्र या विलंब कर उसका प्रभाव अवश्य पड़ता है। हमें संसार के साथ २ चलना है अपनी झोपड़ी में ही नहीं बैठे रहना अतः संसार की प्रगति किस दिशा में है इसका जानना हमारे लिए नितान्त आवश्यक है देश के वातावरण पर इन पार्टियों की विजय यह प्रभाव रखती है। मजदूर दल की विजय लिबरल राजनीतिज्ञों को आशा बंधा कर देश के स्वर्ण झंडे के तले आने से रोक सकती है फिर यह कहना "कोउ होउ नृप हमें का हानी" क्या उचित नहीं है।

निराशा — अवकाश प्राप्त हुआ दिवाली गुजर गई पर संजीवनी के जन्मोत्सव की कोई चर्चा सुनाई नहीं। जल विप्लव ने संजीवनी के कार्यकर्ताओं के साहसी हृदयों को भी तंग कर दिया

यह सचमुच संजीविनी के इतिहास में निराशाजनक घटना होगी क्या हम आशा करें कि यदि श्री मंत्री जनों सब को वोटदेवता के चरणों में अर्पण करने का संकल्प न करेंगे क्योंकि यह बलिदान बड़ा महंगा है यदि कर चुके हैं तो त्याग देंगे इसकी हमें पूरी आशा है।

नया रङ्ग — चीन की समस्या नया रंग पकड़ रही है अव्यवस्था और अराजकता का राज्य है पेकिंग गवर्नमेन्ट शक्तिशून्य है पेकिंग शहर का संबन्ध भी अन्यान्य स्थानों से टूट गया है इसके साथ ही साथ मंचूरिया गवर्नर की सहायता के लिए जापानी जहाज चल पड़े हैं श्री वू पाई फू की सहायता के लिए यदि अमेरिका और अमेरिकन सैन्य प्रस्थान करे तो हमें कोई आश्चर्य न होगा श्री सनयात सेन के नोटपत्र कहते हैं उन्होंने विदेशी हस्ताक्षेप के विषय में लिखा है — हमारा दिल कह रहा है कि यह युद्ध केवल दो महत्वाकांक्षी सेनापतियों का नहीं है अपितु बाजार की खोज करने वाले दो महान राष्ट्रों का पर्दे की पीछे युद्ध हो रहा है परमात्मा चीन को इस नई विपत्ति से बचाए इसी में चीन का कल्याण है। (रियासतों के बाद आए समाचारों से पता चलता है कि युद्ध का अन्त हो गया है.)

नये हाथ — महाविद्यालय सभा वर्धनी का आज से नए हाथों में आ रही है. पुरानी मूर्तियां अवकाश ग्रहण कर रही हैं नई मूर्तियां उनका स्थान ले रही हैं नया निर्वाचन इस प्रकार —

श्री शंकर दत्त जी मन्त्री
श्री राम स्वरूप जी उपमन्त्री
कार्यकारिणी के सदस्य —
श्री रघुवीर जी
श्री सत्यकाम जी
श्री चन्द्रगुप्त जी
श्री कृष्ण दत्त जी
श्री निरञ्जन जी

उपर्युक्त महानुभाव चुने गए हैं. हम इन को बधाई देते हैं आशा करते हैं कि नये कार्यकर्ता सभा की मर्यादा और शान कायम रखेंगे।

हम समझते हैं इन कार्यकर्ताओं के समय सब का इनको सहयोग प्राप्त होगा. विद्यार्थी सज्जन भी नए कार्यकर्ताओं का हाथ बटाएंगे.

इस वर्ष के लिए कुलमन्त्री वाग्वर्धिनी के भूतपूर्व मन्त्री श्री चन्द्रगुप्त जी और उपमन्त्री श्री रघुनाथ राव जी चुने गए हैं. आशा और विश्वास है कि नए मन्त्री कुल के वर्षों को विशेष समारोह से मनाएंगे तथा देने और सहयोग लगाए रखने में सफल होंगे.



वन्दना

मुनि-मन - मानस के मंजुल मराल राजै,
परम विसाल भाल बसत सुरेस के;
अंकुरित धुज-चारु चिन्हित सुदेस सदा,
हरत कलेस एक जीवन महेस के,

जनकसुता के कर-कंजन सों लालितहैं,
खण्डन कलुष सिर मंडन के सेसके;
मंगल-करन दुख-दारिद -हरन सदा,
ओजमय चरन सरोज अवधेस के ।

— प्रताप.

उमड़ता हुआ समुद्र

विजय-वैजयन्ती

संयुक्त

दैनिक - महाविद्यालय

३१ आश्विन १९८२ , १६ अक्तूबर १९२५ शुक्रवार

उमड़ता हुआ समुद्र

कल का दृश्य अपूर्व था उत्साह का समुद्र उमड़ रहा था , स्फूर्ति की चिनगारियों से आकाश व्याप्त था नूतन जीवन का प्रवाह प्रबल वेग से उमड़ रहा था सब के हृदय आल्हाद और उल्लास से भरपूर थे। वन्दे मातरम् के पुनीत संगीत के साथ कुल-गीत के संगीत की धारा मिलकर अपूर्व सामञ्जस्य उत्पन्न कर रही थी। मानव कण्ठों से निकले गीत के साथ नवोदित बाल सूर्य की किरणें , देवकण्ठों से निकला मधुर संगीत स्वर मिला कर अपूर्व संगीत की रचना कर रहा था। छोटा सा गाउन यद्यपि नरमुण्डों से खचाखच न भरा था पर उल्लास से भरा हुआ था। [illegible] की बयार घास की पत्तियों पर थिरक रही थी। अपूर्व चैतन्य था अनुपम भावुकता थी सजीवता की विचित्र मूर्ति चारों ओर घूम रही थी।

वीरराम का सम्मान वीरभारत [illegible] ही कर सकता है, अन्य नहीं। आजके नायक सब को सच्चा बनावें, हृदय को वज्र सा कठोर, दिल में आंधी सा साहस उठाता रहे। प्रतिनिधि [illegible] के समान दिल उल्लास से भरपूर हों, धैर्य की मूर्ति हो। समुद्र के बीच में स्थित चट्टान के समान विपत्तियों की लहरिकाओं को सहने वाली शिलाएं हों। झंझावात के समान प्रबल आत्मा हों। विजयी का सम्मान करने का अधिकार पराजितों को नहीं है। हां, वे पराजित सम्मान के पात्र हैं जो पराजय में भी विजय अनुभव करते हों पतन में भी उत्थान को ढूंढते हों, गिरकर उठना जानते हों। इस लिए प्रवाह की धारा को बन्धनमुक्त कर बहने दीजिए। इस समुद्र मन्थन से उत्पन्न नवीन जागरण को बनाए रखिए। यह साहस आप के अन्धकारपूर्ण मार्ग को भी आलोकित करता रहेगा। यह जागरण स्थायी हो।

पाप दूर करने की दवा —

℞

दुःख ------	५ तोला
निर्[illegible] ----	१५ तोला
पवित्रता ----	१२५ सेर
धैर्य -----	१० तोला
नम्रता ----	१२५ सेर
मैत्री -----	३० सेर

इन सब चीज़ों को अच्छी प्रकार इकट्ठा करके मज़बूत खरल में कूटो और उस में —

[illegible] ---- १ सेर

डालो। उस को नेकी की कढ़ाई में डालो। कढ़ाई को ईश्वर प्रेम की अग्नि पर उबालो। बारबार अच्छी प्रकार धार्मिक प्रार्थना और [illegible] हिलाओ इस से गर्व का मैल ऊपर [illegible] दी रहेगा नहीं इस प्रकार दिन में ३ बार करने से पाप का रोग दूर हो जायेगा।

— स्व हाजी मुहम्मद की डायरी से

गङ्गा-प्रवाह

विजय के नुसखे

(लेखक — गिरीश)

विजयार्थी लोगों के लिए कैलाश स्थित महादेव जी ने कृपा करके हमारी प्रार्थना पर कुछ विजय के नुसखे भेजे हैं जिनको हम सर्व साधारण के लिए नीचे प्रकाशित करते हैं।

× × ×

कुरसी दौड में विजय पाने के लिए खिलाड़ी को सावधानी के साथ एक कुरसी पर डटे रहना चाहिए हिलाने पर हिलना नहीं चाहिए। यदि कदम उठावे तो एक कदम चल कर फिर उसी पर आ डटना चाहिए। यदि यह सम्भव न हो तो खूब जोर से दौड़ना चाहिए और एक कुर्सी को अपनी दृष्टि में रखना चाहिए जब बैठने का समय आवे तो अगले को आगे धक्का देकर स्वयं उस की खाली कुर्सी पर बैठ जाना चाहिए। यह अकसीर नुसखा है। सफलता पर सन्देह करने वाले महादेव जी के तृतीय नेत्र से भस्म हो जाएंगे।

× × ×

चार टांग की दौड़ में सफलता पाने के लिए आपके अनुरूप कद के पतली टांगों वाले साथी ढूंढने चाहिएं। दौड़ते हुए रास्ते में मिलने वालों को एक आध हड़ भौलगा देनी चाहिए विजय फिर निश्चित है।

× × ×

चम्मच दौड़ में सफलता चाहने वालों को चम्मच मोड़ लेना चाहिए इससे चम्मच स्थित पदार्थ के गिरने की सम्भावना न रहेगी। जेबों में पहले से ही गोलियां भर लेनी चाहिए। यदि चम्मच स्थित पदार्थ गिर जाय तो चुपके से पांव के अंगूठे से उछाल कर या जेब से डाल लेना चाहिए। यह विजय की कुञ्जी है। जिसके पास रहेगी वह विजयी अवश्य होगा।

× × ×

अन्ध युद्ध में सफलता पाने के लिए आंखों पर पट्टी अपने अन्तरंग आदमी से बंधवानी चाहिए। यदि दीखना बन्द हो जाय तो कहना चाहिए पट्टी ज्यादः कसी हुई है ढीली कर दी जाय। थक जाने पर आराम लेना हो तो कह देना चाहिए कि पट्टी ढीली हो गई है। इससे मैं कई खिलाड़ी खेल से बाहर हो जाते हैं। यदि भगवान ने नाक ऊंची न दी हो तो नाक पर गद्दी रख लेनी चाहिए इससे अन्तर्दृष्टि प्राप्त होगी। यह दिव्य दृष्टि विजय दिलाने में सहायक होगी। यदि कोई शङ्का करे कि दीख रहा है तो अपने परिचित से एक और पट्टी बंधवा लेनी चाहिए। इन उपायों का जो विश्वास करता है उसके घर विजय लक्ष्मी निवास करती है।

धनंजय वैशम्पायन

गगनाङ्गण में—

स्वागत— दीवाली के त्यौहार पर जब १४ साल के बिछुड़े भाई राम और भरत मिले थे तब कुल भाइयों का परस्पर न मिलना सचमुच आश्चर्यजनक होता और एक अद्भुत घटना होती। पर हर्ष का विषय है कि कुल के छोटे भाई जो कुल की शोभा हैं और गौरव हैं त्यौहार मनाने में हाथ बटा रहे हैं। हम अपने इन भाइयों का हार्दिक स्वागत करते हैं।

विजयी वीर— कल की खेलों के विजयी वीरों का परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। सब वीर अपने खेल के सिद्धहस्त खिलाड़ी हैं। पहले से ही सम्भावना की जाती थी कि विजय का सेहरा उन्हीं के सिर बंधेगा। हम इन वीरों को सादर इस विजय पर बधाई देते हैं।

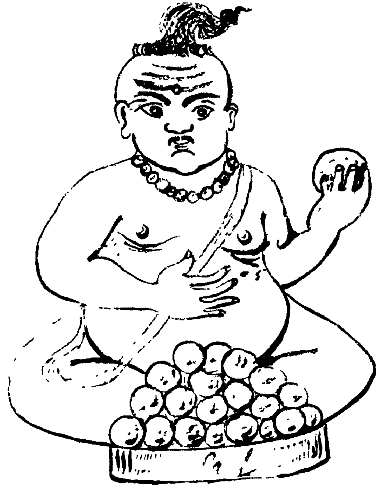
शोकजनक घटना— कल की खेलों में कई वीर घायल हुए हैं हम उन से हार्दिक समवेदना प्रकट करते हैं। इनके बीच में एक घटना अत्यन्त दुःखदायी हुई है, वह है श्री सुरेन्द्रनाथ का घायल होना। आपके अन्धयुद्ध में नाक पर सख्त चोट आई है। आप कई युद्ध क्षेत्रों के विजेता और गुरुकुल दल के मुखिया हैं। इस घटना पर हमें अत्यन्त दुःख है। भगवान् हमारे भाई को शीघ्र नीरोग करें।

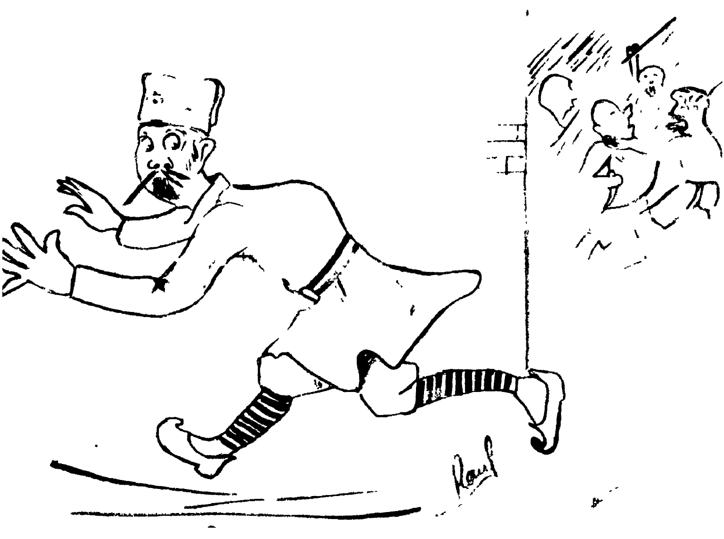
क्या यह नया भाव है— आजकल स्पोर्टिज़्म के भाव दृग्गोचर हो रहे हैं। कई उदार महानुभावों की दृष्टि में यह भाव नया है और हेय है। पर गुरुकुल का इतिहास बताता है कि यह भाव पुराना है, इस की जड़ें बड़ी गहरी गई हुई हैं। गत षाण्मासिक परीक्षा के बाद की खेलों में यह भाव तथा यह महाविद्यालय और विद्यालय का भाव पूरी ऊंचाई पर था। आज जो महानुभाव स्पोर्टिज़्म की निन्दा करते हैं उस के पहले वे बच्चों को विचित्र प्राणी समझते हैं वे ही इस भाव के समर्थक और प्रचारक थे। आज अवस्था बदल गई है क्षेत्र मर्यादित हो गया है इस कारण भाव और कल्पनाएं सीमित हो गई हैं। यह व्यक्तियों का दोष नहीं है अपितु व्यवस्था का दोष है। स्पोर्टिज़्म पर विस्तृत विचार आवश्यकतानुसार फिर करेंगे।

दरबार में— विगत ११ अक्तूबर को समस्त भारत वासियों ने सब भेद भावों को भूल कर अत्याचार पीड़ित प्रवासियों से सहानुभूति दर्शाने के लिए संसार के सर्वोच्च न्यायालय में - परमात्मा के दरबार में - अपनी फरियाद सुनाने के लिए समाज की ३३ कोटि कण्ठों से निकली ध्वनि से परमात्मा का हृदय पसीज जायेगा या गोरे लोग अपनी शरारतों से बाज आएंगे? क्या हम असमर्थ लोगों की प्रस्ताव बाजी से दक्षिण अफ्रीका के गोरे अपने मन्सूबे छोड़ देंगे? हमारे प्रभाव शून्य क्रोध से क्या दक्षिण अफ्रीका की गवर्नमेंट अपने निर्णयों से टस से मस भी होगी? क्या इस कातरवाणी से ब्रिटेन के साम्राज्य वादियों के हृदय पसीज उठेंगे! यदि नहीं तो इस प्रस्ताव जी से क्या लाभ? क्या उस दिन के एकता के प्रवाह में बड़े नेता प्रवासियों के प्रश्न को लेकर देश को अपने प्रवासियों के प्रश्न को लेकर देश के अपने हल करने पैदा करने के लिए सामान्य जन को तैयार करने के लिए राजपथों को छोड़ कर ग्रामों की ओर मुड़ेंगे? इसे विशेष है इस प्रश्न पर सम्पूर्ण भारत एक हो सकता है कि इस प्रश्न पर सम्पूर्ण भारत एक हो सकता है और अपने भेदभाव भुला सकता है, पर आवश्यकता है बल की भी गुणों को और अधिकारियों को भी ..... भारत की मान रक्षा और अपने भाइयों की ..... , भारत की मान रक्षा और अपने भाइयों की ..... के लिए तय्यार करना चाहिए। ..... की रक्षा के लिए तय्यार करना चाहिए। ..... उन अत्याचारों को ..... आवश्यकता है बताने की। फिर वे ..... संग्राम में ..... छोड़कर आवेंगे। [illegible]

[illegible]

[illegible]





फूलों का हार

फूलों का हार

रंग अपने देर क्या है रंग दे।

ओढ़ता था - मैल भर कर ही जिसे
साफ कर पाया अभी तक मैं था नहीं।
आज पलकों से उतारी मैल है
ला के देता हूं तुझे, तू रंग दे।

× × × ×

आंसुओं से मैल को अब साफ कर
आंख में दिल की छुपाया है इसे।
आ गया हूं आज तेरे द्वार अब
साफ कर लाया हूं अब तू रंग दे।

× × × ×

सावधानी से छिपा कर - सोच कर
दौड़ कर मैं आज पहुंचा हूं यहां।
रंग कोई और ना चढ़ने दिया
आज अपने रंग से बस रंग दे।

× × × ×

मानता हूं रंग यह अनमोल है
दाम क्या दूं खुद ही मैं बिक जाऊंगा।
मस्त होना चाहता हूं ओढ़ कर
बेखुदी का रंग बस तू रंग दे।

× × × ×

प्रयाण गीत (Marching song)

(श्री पंडित वागीश्वर जी विद्यालङ्कार)

हम बलवीर जननी की अतुल बलवीर हैं सन्तान।
बलवीर हैं रणधीर हैं गम्भीर हैं [illegible] ॥
वीर-प्रसू भारत का हमने है किया स्तनपान।
इस के तनय होने का हम करते महाभिमान ॥
इस के लिये सर्वस्व है, इस के लिये हैं प्राण।
इस का करे अपमान जो उस के लिये कृपाण ॥
भुजदण्ड ये उद्दण्ड हैं उत्साह हैं अखण्ड ।
मैदान में जो आवे उस का शेष है घमण्ड ॥
मज़बूत हम रजपूत हैं भारत के हैं सुपूत।
भय मानना हम से सदा हम भूत हैं मज़बूत ॥
मर जाएँगे कट जाएँगे रण से न हटेंगे।
भारत-ध्वजा फहराएँगे रण बीच अड़ेंगे ॥

खिलाड़ी

(श्री पं. धर्मदत्त जी वि.अ., सि.अ., कविराज)

ये खेल कैसी तू खेलता है इधर रुला कर उधर हंसा कर। टेक।
इधर बिदाई को जा रहे हैं, ये लोग आंसू बहा बहा कर।
उधर भी स्वागत को आ रहे हैं, लोग बाजे बजा बजा कर ॥ १॥
इधर तो मातम किया हुआ है, ये सारे घर को रुला रुला कर।
उधर वो कहते हैं लाल आया, अंधेरे घर को भी जगमगा कर ॥ २॥
इधर तो तू ही डरा रहा है, ये लाल आंखें दिखा दिखा कर।
उधर उन्हें तू हंसा रहा है, सुरीली तानें सुना सुना कर ॥ ३॥



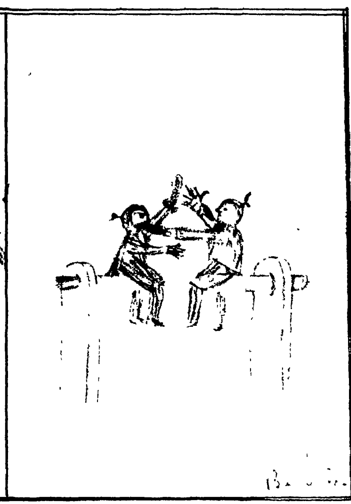
मेंढक दौड़



अन्धा युद्ध



चम्मच दौड़



तकिया युद्ध

[illegible]

इन्हें यूं तो तू [illegible] से है, रुलाता नश्तर लगा लगा कर।
औ दूसरे हाथ से उन्हें तू, हंसाता चुटकी लगा लगा कर॥5॥

विजय - गीत

(श्री पं. वागीश्वर जी विद्यालंकार)

विजय हो विजय हो मनावो मनावो।
विजय की ध्वजायें उड़ावो उड़ावो॥
पराजित हुवे शत्रु आये शरण में।
उन्हें बस अभय अब दिलाओ दिलाओ।
हुई शान्ति दुःख दूर सारे हुवे हैं।
खुशी के वे बाजे बजावो बजावो॥
विजय का दिवस आज आया सुहाया।
हृदय में विजय की उमंगें बढ़ावो॥
खड़े हैं वे झण्डे हमारी विजय के।
कि गर्वीली ये आंखें उन पर उठाओ॥
अगर आज दिक्पाल भी सिर उठावें।
तो नीचा उन्हें भी दिखावो दिखावो॥
मिले आज स्वाधीनता के उपासक।
हृदय से हृदय सब मिलावो मिलावो॥
विजय मातृभूमी कि सब मिल के गावो।
दशों ही दिशायें गुँजावो गुँजावो॥

क्यों ?

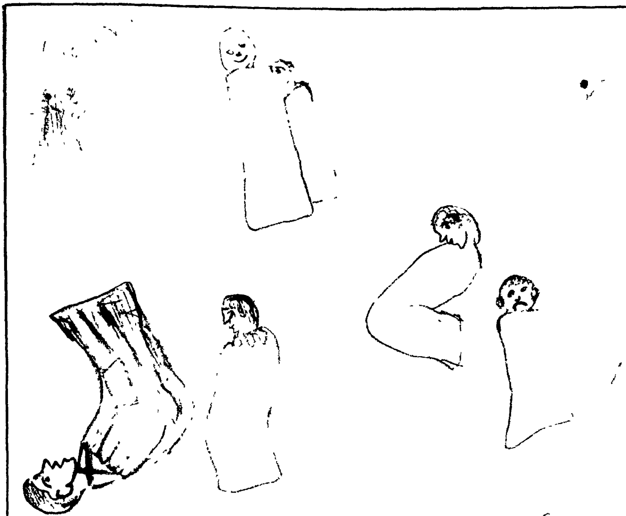
(श्री पं. धर्मदत्त जी सिद्धान्तालङ्कार विद्यालङ्कार)

बुलबुल मुझे बता तू क्यों चुलबुला रही है
क्यों बैठ कर गुलों पर तू गुल मचा रही है।
दिन रात अपनी मीठी तानें सुना सुना कर
बन कर तू बन की रानी किस को रिझा रही है।
वृक्षों की चोटियों से गर्दन उठा उठा कर
कोकिल कुहू कुहू से किस को बुला रही है।
गङ्गा तरङ्ग में तू किस के रंगी हुई यों
दिन रात एक सुर से गुणवाद गा रही है।
फूलों की रोज़ इतनी माला बना बना कर
ओ पुष्पवाटिका! तू किस पर चढ़ा रही है।
कुछ देर तो ठहर कर मुझ को पवन! बता जा
तू वेग से इधर किस ओर जा रही है।
गगन मुका के नीचे इक टिमटिमी लगा के
तू रातभर किसे यों ओ रात! ध्या रही है।
हम भी चलो चलें अब उस का ज़रा पता लें
दुनिया ही जिस से मिलने को तलमला रही है।

कितने ही नव विकसित कुसुमों पर मृदु हास सुहाता है।
पर भीतर उन के हृदयों को मधुप चूसता जाता है।
सदा झलकती जिन के मुख पर वह अनुपम मीठी मुसकान
हा! उन के भीतर दिल में छिप कर डसता कोई डंक समान॥

(पं. जगदीश्वर जी विद्यालङ्कार)

[illegible]



कोरा कूद



तीगेंदी

आत्म चरित

हम पांच बहिनें एक साथ एक ही घर में पली थीं। हम अपने माता पिता आदि आदि के विषय में कुछ नहीं जानती थीं। सब का अलग २ काम था। हमारे घर का रंग हरा था।

ऊपर नीचे चारों ओर हमें केवल एक ही यह रंग दिखा करता हम समझती कि हम सदा ही ऐसी रहेंगी यह हरा रंग भी ऐसा ही रहेगा।

× × × × × ×

हम धीरे २ बड़ी हुईं। हमारे हृदयों में एक अनिर्वचनीय नये भाव का उदय हुआ। अब हमें चांदनी रातों में जब कि ठंडी २ हवा चला करती उस समय जब कि हमारा विचित्र घर धीरे २ चन्द्रमा की किरणों पर झूलने लगता अपूर्व आनन्द का अनुभव होता। पास के बड़े २ वृक्षों की छाया में हमारा घर था जब पर पक्षी बैठ कर के एक गाना गाने लगते उस समय हमारे हृदय पुलकित हो जाते। हमारा भी मन गाने को करता पर यह देख कर कि हम गा नहीं सकतीं हमें बड़ा दुःख होता पर हम उस दुःख को भुलाने के लिए और जोर २ से झूलने लगतीं।

× × × ×

एक रात हम ऐसी ही झूल रही थीं कि सब से बड़ी ने जो कि ऊपर के किनारे पर रहती थी बड़े ज़ोर से कहा कि हमारे घर का रंग सुनहरा हो रहा है मेरे ही इधर से सुनहरा होना आरम्भ हुआ है, इस वाक्य के सुनते ही पांचों के मन में भिन्न भाव उत्पन्न हुए। बड़ी बहिन तो बड़ी खुश थी चाहती थी कि सब के कपड़े सुनहरे हो जाते। दूसरी ने समझा कि बड़ी बहिन को भ्रम हुआ है उसने बात अन सुनी कर के झूलने का आनन्द लेना आरम्भ किया। तीसरी ने कहा कि असम्भव हरा रंग बदल ही नहीं सकता चौथी उसी पक्षी का गाना सुनने में मस्त थी। मेरा हृदय एक आगामिनी विपद की आशङ्का से कांप गया।

× × × × ×

हमारे घर का रंग सचमुच सुनहरा हो गया सब कपड़े सुनहरे हो गये। ऊपर नीचे सब सुनहरा ही सुनहरा। हमारे भी रंग में बड़ी फ़र्क आ गया।

बड़ी बहिन के मन में न जाने क्या आया उसने सब से पूछना आरम्भ किया अब तुम बड़ी हो कर क्या करोगी। दूसरी ने जवाब दिया देखा जायगा। तीसरी ने कहा पंख पैदा कर के घर बनाऊंगी। चौथी ने कहा तुझे क्या पड़ी तू ही बता क्या करेगी हमें क्या करना है हम तो ऐसी ही झूलेंगी। मेरे से पूछा मैंने कहा सोचती हूं। बड़ी बहिन ने कहा—

मैं वह देखो वह दूर जितना ऊंचा गोला चमक रहा है वहां जाऊंगी। सब ने कहा चमकते न लगा मालूम है उसने कहा - "अच्छा"। मैंने कहा तुम वहां से न लौट सकोगी। हम सब ये बातें कर रही थी। मेरा सोचना भी खतम न हुआ था कभी सोचती परोपकार करूंगी। कभी सोचती ऐसे ही झूलूंगी। कभी सोचती किसी बाग में अपना रहने का स्थान बनाऊंगी। इतने ही में था मैं बहुत ओर से एक धक्का लगा कह से आग हुई, था मैं ओंधेरा होगया हमारा दम घुटने लगा थोड़ी देर बाद पता लगा कि हम एक लड़के की जेब में हैं और वह अपनी बहन से कह रहा था कि आज मटर की फलियां बनाने के लिए मां से कहेंगे।

* * *   * * * *

एक चमचीली थाली में हमारे जैसे पता नहीं कितने चार पड़े हुए थे एक लगातार तोड़े मरोड़े जा रहे थे हमारी भी बारी आई हम के कोर टूट गये बड़ी बहिन बोड़ बेग से उछली और अपनी उसी गोले की ओर। [illegible] फिर अपना नहीं पता कहां गई दूसरी ने भी अपनी मंजल की ओर [illegible] सीधी ओंधी [illegible] ही [illegible]। मुझे बड़ा दुःख हुआ कि मैंने अपनी जीवन रक्षा के लिए साथी के लिए [illegible] पर वह [illegible] लौटने वाली की [illegible] मानों मैं भा गई।

उसने सब बहिनों को छोड़ दिया. और अकेली ही आत्मरक्षा के मार्ग में प्रवृत्त हुई. वह [illegible] हुई जीवती थी. [illegible]

थोड़ी देर बाद मैं फिर [illegible] [illegible] जीवनी को पूरा करना चाहती है. [illegible] में [illegible] [illegible] देख रही थी. मैं [illegible] सब बहनों को छोड़ना चाहती थी बाहर [illegible] में छिप गई।

मुझे बड़ा दुःख हुआ बड़ा पश्चाताप हुआ कि मैंने अपनी जीवन रक्षा के लिये अपने स्वार्थ के लिये सब बहनों को छोड़ दिया और अकेली ही आत्म रक्षा के मार्ग में प्रवृत्त हुई। मैं सोच रही थी इसका प्रायश्चित्त क्या हो।

\+ \+ \+ \+

इस प्रकार 2 कर टुकड़ों ने वर्तन में उछल दी गई। कोई डरी हुई थी कोई रोती थी कोई गम्भीर थी कोई प्रसन्न थी कैसा हृदय ग्राही दृश्य था सब आपस में विदाई ले रही थी। मैंने सोचा कि मैं भी विदाई ले आऊं पर साहस न हुआ। मुझे बड़ा दुःख हुआ मैं क्यों विवश मालूम हो गई पर अब क्या हो सकता था। [illegible] असमर्थ दशा थी। इसी [illegible] नाश कर रही थी। धीरे धीरे सब-कुछ हो गई जैसे देखा कुछ जाने के बाद [illegible] पका।

हो जाता है जैसे आशा के बाद-
लियों का अभाव हो जाता है-
जैसे [illegible] हूँ, [illegible]
[illegible] हैं [illegible]
में इस [illegible] के बाद [illegible]
असल [illegible] में [illegible] हो
जाते [illegible]
[illegible] हुआ।

मेरी इच्छा हुई मैं भी दौड़ कर
अपनी बहिनों के साथ ही सर्वदा के
लिये शान्त हो जाऊं पर [illegible] की गड़
गड़ाहट से मैं डर गई और मेरे पैर
वहीं गड़ गये। मैं मूर्छित हो गई।

थोड़ी देर बाद मेरे सिर पर बड़ी ज़ोर
से एक आँसू का प्रहार हुआ मैं
बहुत से पतित चरित्रहीन आदमियों
के समान मुर्झाये हुये के साथ इस
खिड़की से बाहिर फैंक दी गई।

मुझे शान्ति नहीं थी मैं सोचा
करती जब तक अपने इस अन्याय का
जो कि मैंने बहनों के साथ किया है प्राय-
श्चित न कर लूँगी तब तक मुझे
शान्ति न होगी।

मैं सोचती हूँ मैंने व्यर्थ में
[illegible] अपनी [illegible]
[illegible] छोड़ दिया। [illegible]
[illegible] गई। उनकी तरह अपने जीव
न को [illegible]
[illegible] को उन [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] हुआ। [illegible]
[illegible]
[illegible]
मैं [illegible] करती हूँ।
[illegible]
[illegible] अब तो मैं [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

हूँ। मैंने परोपकार के लिये अपना खा-
ना पीना छोड़ कर इतनी डालियाँ,
इनके पत्तों का जो कि सब के सब इन्हीं
घर के सहारे ही हैं पालन किया है।
इनके घर बनाये हैं। इन्हीं में मेरी
बहिनों जैसी और बहिनें रहती हैं।
जिस दिन जब कि इस [illegible] सुगन्ध
हो जायगा उस दिन कोई लड़का इस
[illegible] को बलि के लिये ले जायगा
उस दिन मेरा प्रायश्चित्त पूरा
होगा। जानते हो यह पाप मैंने
क्यों किया था। मैं अपनी शान्ति
का फल देखना चाहती थी

वैचित्र्य चर्चा

<u>आरमंड ग्रोवर</u> — सारी दुनियाँ में सब से ऊंचा मनुष्य आरमंड है। उसकी ऊंचाई ७०½ इन्च है। जन्मते समय उस का भार २½ रतल था। १३-१४ मन के बुजन को उठा लेना इस के लिये बहुत सरल बात है। यह मांस बहुत नहीं खाता, शाक फल मूल विशेष प्रमाण में खाता है। उसकी काहीत का साथ देने के लिये दर्जी को एक बेटी सीढ़ी पर चढ़ना पड़ता है।

<u>मान्चेस्टर का धोबी</u> — मान्चेस्टर में धुवों के कारण ही धोबी को ३५ ½ लाख रुपये मिजूल खर्च होती है।

<u>जगत का सोना और चान्दी</u> — जहां तक इतिहास द्वारा जाना जा सकता है उस समय से लेकर सन् १९२० तक पृथ्वी से ११४ अरब रुपयों के मूल्य का सुवर्ण और चांदी निकाला गया है।

<u>अंग्रेजी भाषा</u> — सम्पूर्ण जगत में चौंतीस करोड़ लोग रहते हैं। जिन में से १६ करोड़ मनुष्य अर्थात् दुनिया के अंग्रेजी भाषा बोलते हैं। दुनियाँ के अखबारों में से ५० प्रतिशतक से अधिक अखबार अंग्रेजी में छपते हैं।

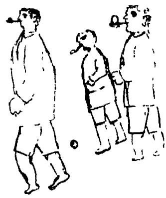
<u>सब से बड़ा विज्ञापन</u> —

सारे संसार में सब से बड़ा प्रकाशमय विज्ञापन मि० लाफवोर के पास है। वह ४२२ फुट लम्बा और ४० फुट चौड़ा है। वह जस्त के पत्रों की दीवार पर है। उस पर बड़े २ भाषा लिखे हुए हैं।

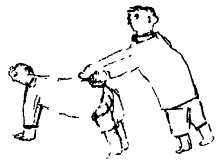
<u>सब से मंहगा फल</u> —

जगत में सब से मंहगा फल पेलेस्टाइन और यूनान के द्वीपों में उत्पन्न होता है। उस का नाम 'हेपरोग' है। यहूदी इस को बहुत पवित्र मानते हैं। और उसे अपने धार्मिक कार्यों में प्रयुक्त करते हैं। यह बहुत सुगन्धित होता है। एक एक फल के उत्पादन से महंगाई है। एक फल का मूल्य ७७ है।

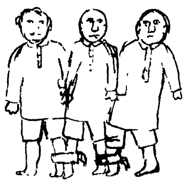
विजय बैंच रानी



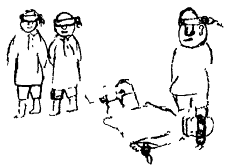
चम्मच दौड़



मेंढक दौड़



चार टागकी दौड़



अन्धा भैंसा



मछली दौड़

कल का देखा फल

खेलें	पुरस्कार प्राप्त कर्ता — प्रथम	द्वितीय	पु. मात्रा
कुरसी दौड़	भीमसेन १२	भीम ११	३) १म १) २य
चार टांग की दौड़	हरिवंश, नरेन्द्र, योगेन्द्र		३) ३) ३) [illegible]
चम्मच दौड़	हरिवंश	वेद प्रकाश	३) १म १) २य
मेंढक दौड़	समरसिंह, सुरेन्द्र		३), ३) [illegible]
झंडी दौड़	सुरेन्द्र का दल		४)
अन्ध युद्ध	जगदीश	हरिवंश	३) १म १) २य
तैरी दौड़	प्रकाश, भीमसेन		३), ३) [illegible]
लम्बी कूद	हरिवंश		३)
हड़प्पा कूद	हरिवंश		४)

भावी अन्तिम युद्ध (Final)
के योद्धा

तकिया युद्ध
- भीमसेन ११
- बलराम
- भीमसेन १२
- देवदत्त

बोरा युद्ध
- हरिवंश
- प्रकाश
- जनार्दन
- भीमसेन ११
- त्रिभुवनाथ
- जगदीश

छोटे भाइयों के साहस का फल —

कुरसी दौड़	वीरेन्द्र	यशराज
चम्मच दौड़	लक्ष्मण	
अन्ध युद्ध	दीनबन्धु	वीरेन्द्र
मेंढक दौड़	लक्ष्मण	
तीन टांग की दौड़	लक्ष्मण	

सूचना —

"नैपाल के अनुभव" पर श्री प्रोफेसर सांझी राम जी M.S.A. का महत्व पूर्ण व्याख्यान २० अक्तूबर मंगल वार को होगा।

मन्त्री
मार्गदर्शिनी सभा

विजय वैजयन्ती

गुरुकुलीय 'ओलिम्पस'

का

लेखा व दृश्य

(निजू संवाददाता द्वारा)

दीपमाला की खुशी में खेल अबतक जो हुए,
हाल उनका प्रेम से सज्जन जरा सुन लीजिए ॥

पन्द्रवी तारीख थी जब शुभ तारे छिप गए,
साथ चोरों के बिचारे म्लान कैरव गण हुए ॥

हर्ष से जब पल्लवम् के लाल मुख होगया,
नित्यकर्मों से तपस्वी राज फ़ारिग होगया ॥

सात बजने के अनन्तर खेल का घण्टा बजा,
रंग बिरंगी झण्डियों से फील्ड सुन्दर था सजा ॥

दर्शकों के झुण्ड पहले ही स्वयं थे आगए,
रह गए दो चार वे भी थे समयपर आगए ॥

मातृभूमि की पताका व्योममें फहरा रही,
हिन्द की गुजरी सुनहरी शान को दिखला रही ॥

थे मुखों पर दर्शकों के देखते उत्साह हम,
प्रेम से 'कुलगीत' गाया साथ 'वन्दे मातरम्' ॥

कुरसी दौड़

दौड़ कुरसी फिर हुई, थी एक कुरसी कम सदा,
बैठ जाते और लड़के एक बचता था सदा ॥

इस तरह हर बार बचता एक लड़का खेल में,
बारवीं के भीम ने जीता सभी को मेल में ॥

ग्यारवीं का भीमसेन था दूसरा माना गया,
इस तरह इस खेल का परिणाम था जाना गया ॥

चारटांग की दौड़

चारटांगों की हुई फिर दौड़ उस मैदान में,
थी चुस्ती था बस ह्विसल की देर के तामझाम में ॥

दौड़ के प्रारम्भ में कुछ लड़खड़ा कर गिर पड़े,
बीच में कुछ पहुंच कर फिर फील्ड में झुक के पड़े ॥

दौड़िए बिजली-चमकती या हरिण हैं भागते,
तीन साथी किस कदर हैं तेज मिल कर भागते ॥

ये रहें शायद प्रथम फिर इस दफा भी दौड़ में,
सोचते थे कुछ कि पिछड़े या खुदा ये दौड़ में ॥

देखते ही देखते लो ये वहां पर हैं खड़े,
हार इन के कण्ठ में ही फिर विजय के हैं पड़े ॥

इन्द्रनर, हरिवंश और योगेन्द्र इन के नाम हैं,
दौड़ में इस बार भी इन ने लिया इनाम है ॥



कुर्सी दौड़

चम्मच दौड़

बीस लड़के थे खड़े तैयार चम्मच दौड़ में,
कौन जीतेगा यही सब सोचते थे दौड़ में ॥

गोलियां कुछ की गिरीं कुछ बीच में ही रह गए,
देखिए रणधीर पहुंचा और बाकी रह गए ॥

क्या हुआ यह? गिर पड़ी गोली सबके तेजी न कर,
तैरकर देखा अहो [illegible] किनारे आन कर ॥

लक्ष्य पर हरिवंश देखो जा खड़ा है शान में
और लड़के रह गए थे दौड़ के मैदान में ॥

मेंढक दौड़

दौड़ में उतरी जहां पर मेंढकों की पंक्तियां,
कूदना आरम्भ कर कुछ खो रहे थे युक्तियां ॥

देखिए दो कूदते हैं किस तरह से तेज ये,
कौन जीते हैं? समर सुरेन्द्र माने गए ॥

झण्डी दौड़

झण्डियों की दौड़ में दो पारियां हैं देखिए,
एक में छोटे, बड़े हैं दूसरी में तेज थे ॥

जीत इनकी ही रहेगी सब समझने लग गए,
शब्द सीटी का सुना अब दौड़ने भी लग गए ॥

हाथ तेजी से बढ़ाकर ले रहे थे झण्डियां,
कुछ निकल जाते परे थे हाथ में ले झण्डियां ॥

अन्त में झण्डी उठा हरिवंश दौड़ा हाथ में,
सब समझते थे कि पहुंचा ले विजय को साथ में ॥

एक तो आगे चला था फिर विजय क्यों कर न हो,
[illegible] किन्तु होनी ना मिटेगी देखिए सुरेन्द्र को ॥

छूटकर पीछे हरिवंश सा जोह पहले जा रहा
फैसला यह ही हुआ, सुरेन्द्र दल जीता रहा ॥

प्रिय मैथानी

पहेलियां

एक थाल मोती से भरा, सब के सिर पर औंधा धरा।
चारों ओर वह थाली फिरे, मोती उस से एक न गिरे ॥१॥

× × ×

बाला था जब सब को भाया, बड़ा हुआ कुछ काम न आया,
खुसरो कह दिया उस का नाम, अर्थ करो नहीं छोड़ो ~~गांव~~ गाम ॥२॥

× × ×

सिर पर जटा गले में झोली किसी गुरु की चेली है,
भर भर झोली घर को धावे उस का नाम पहेली है ॥

× × ×

एक कहानी मैं कहूं, सुन ले मेरे पूत,
बिना परों वह उड़ गया, बांध गले में सूत ॥

हिन्दी साहित्य मण्डल का
कविता गल्प सम्मेलन
१८ अक्तूबर १९२५ रविवार को होगा

संस्कृतोरिविकास्य धर्मधारिणी सदस्याः सूच्यन्ते यदस्य शास्त्री
सार्थ सप्तवाद समये कार्यकारिणी समितिः।

मंत्री
शिवप्रसादः

'विजय प्रेस' में धर्मवीर के प्रबन्ध
से मुद्रित तथा प्रकाशित

शहर वालों की फरयाद :

फोड़े जानदी खबर सी जदों पहुँची, लोकी बहुत हुए बेकरार प्यारे
डाढे गज़ब दी बिजली पई आके, डांए मार रोए ज़ारो ज़ार प्यारे
खान पीन ते खुशी आराम भूले, लोकी छड बैठे कामकार प्यारे
दिलां मिनटां दे विच्च हड़ताल होई, सारे शहर विच्च इकोवार प्यारे

चेहरे जवां दे नाल मुरझान लग्गे, रंग होगया वांग बसार प्यारे
सारे लोक फिर होके कट्ठे आउंदे, पास हाकिमां करन पुकार प्यारे
लोकी निकल शहर तों बाहर जदों, लेन लगे सन पुलां तों पार प्यारे
अगों पुल ते खड़े फौजियां ने, रफलां कीतियां वेड़ तैयार प्यारे

ज़रा तरस न आया ज़ालिमां नूं, गोली छड दित्ती कड़ कड़ प्यारे
होए गए सन लोक इकसार पल्ला, जादा मौत दे हुए शिकार प्यारे
कुछ मोस ते कुछ जख़मी होए, मुड़ पिछां नूं हुए बेज़ार प्यारे
"नानकसिंह" पर लिखके कुझ बैठे, जेड़े लिखियां धर्म करतार प्यारे

मौजो-ताने

हम तो कहने को सिर्फ़ आंख हैं,
कर दिखलायेंगे और कोई और ॥
×
इन फकीरों का न शायर लेव
जब न मिलता है कोई आशकार ॥
×
एक तू ही सभी जगह रहता,
यह तो ठीक था यहां भी कोई और ॥
×
मर रहे हैं न निकली जाती,
किसने दिन का न जाना जीना और ॥
×
क्यों बचाता है तू हमें साकी,
तेरे [redacted] बंदे हैं कुछ नहीं है और ॥

राम-स्तुति.

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजि मन हरन भव भय दारुणम् ।
नवकंजलोचन कंजमुख करकंज पदकंजारुणम् ॥

कन्दर्प अगनित अमित छवि नव नील नीरद सुन्दरम् ।
पटपीत मानहुं तड़ित रुचि शुचि नौमि जनकसुतावरम् ॥

भजु दीनबन्धु दिनेश दानव दैत्य वंश निकन्दनम् ।
रघुनंद आनंद कंद कोसलचंद दशरथ नन्दनम् ॥

सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदार अंग विभूषणम् ।
आजानुभुज सर चापधर संग्राम जित खर दूषणम् ॥

इति वदत तुलसीदास संकर सेष मुनि मन रञ्जनम् ।
मम हृदय कंज निवास करु कामादि खलदल गंजनम् ॥
(वि. प.)

सुभाषित

हाथी के दांत के खिलौना बने भांति भांति बाघन की खाल तपी शिव मन भाई है।
मृगन की खालन को ओढ़त हैं योगी यती शेरी की खाल फेर पानी भरि लाई है।
साबर की खालन को बांधत सिपाही लोग मेंढा की खाल सोना-चांदन मढ़ाई है।
कहे कवि 'देवाराम' राम के भजन बिन मानुस की खाल कछु काम नहिं आई है॥

विजय वैजयन्ती

५ कार्तिक १९७७ वि. २० अक्टूबर २० ईस्वी

दशमी और असहयोग

विजय दशमी के दिन हमारे एक पूज्य भारतीय ने रावण पर विजय पाई थी - उन्हों ने समस्त जनता के सामने इसी आदर्श को रक्खा था कि भले ही हम कितने निर्बल हों किन्तु हमें यथा शक्ति पाप का नाश करना चाहिये।

महात्मा गान्धी ने पहिले पहल इस बात को सत्याग्रह के रूप में रक्खा था - वे कहते थे कि पाप के नीचे मत झुको - निर्भयता से प्राणों की अवहेलना करते हुए सत्य के लिये अपना आहुति तक दे दो।

इस समय जब कि हमें पिछले अनुभवों से यह पूरा निश्चय हो गया कि यह सरकार अत्याचारी तथा पापी है तो उन्हों ने असहयोग के नाद को भारत भर में फूंका है। वे कहते थे कि हम में इतनी अस्त्र शक्ति नहीं है जिससे कि हम इसका नाश करें, अतः हम भारतनिवासियों को इसी नीति के अवलम्बन करने का उपदेश देते हैं। ठीक है हमें कभी भी उन पापियों से जिनका कि हमें सत्यानाश करना चाहिये सहयोग किसी अंश में भी न देना चाहिये।

किन्तु प्रश्न इतना ही नहीं है आज बहुत से नेताओं का यह कथन है कि हम में अब उतनी शक्ति नहीं रही है। अभी वे अवस्थायें ही उपस्थित नहीं हुईं कि जिनमें हम असहयोग कर सकें। [illegible] इसलिये जो हमारे पास आजकल सरीखा है सही। मैं कहता हूँ कि यदि नहीं तो उस का कुछ फल न होगा। सरकार ने हमारे काम में सुधार स्कीम को रक्खा है और चाहिये कि उसे ले लें और इसी तरह अपने काम को बढ़ाते चलें [illegible] किन्तु यदि तुम ऐसा न करोगे तो जहां तुम्हारे हाथ से सुधार स्कीम जावेगी वहां इधर भी कुछ न बनेगा - उस समय के लिये [illegible] तुम से [illegible] किन्तु उसका परिणाम भयानक होगा। सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी ने कहा था कि जब तक [illegible] चल सकता है इसे असहयोग की कोई आवश्यकता नहीं [illegible]

Non-cooperation visualized नामक लेख में आज हिन्दुस्तान में [illegible] यदि ऐसा ही करोगे तो तमाम रेल, पोस्ट आदि सभी काम बन्द हो जावेंगे, तो फिर भारत [illegible] भीख मांगेगा। कुछ के दिनों में [illegible] हो जावेंगे और उस समय भारत में [illegible] मच जावेगा और तब फिर सब चीजें [illegible] बन्द हो जायेंगी तो न जाने क्या होगा।

ठीक है हम मानते हैं कि हमें इन चीजों की तंगी होगी। किन्तु सरकार ने इन चीजों के द्वारा हमें ऊपर से आराम पहुंचाते हुए अन्दर से कितनी हानि पहुंचाई है।

बाबू भगवान दास जी की वक्तृता में यह साफ साफ है -

अपने को पाप से बचाने के लिये हमें अब अपने देश में इससे तो कोई सन्देह है ही नहीं - किन्तु क्या हमें इन कष्टों से डर कर अपने काम को प्रारम्भ न करना चाहिये।

× × × ×

आज के दिन भी नेता हमारे सामने इसी बात के आदर्श को रख रहे हैं। पाप के साथ असहयोग करो - चाहे तुम्हारे पास कितनी ही क्यों न सहायता कम हो। आर्यवीरो! यदि सच्चे राम के अनुयायी बनना चाहते हो तो असहयोग

करो। तुम अवश्य सफल होगे और तभी सच्चे हमारे अनुयायी कहा सकोगे -

× × × ×

यह रहस्य चुका है जिसका पालन सारा असहयोग का —:

मेरे सेना में अपने धर्म की सेना सजाकर लड़ने जाते हैं - अवनिगत होने में देर नहीं है। इसलिए भाइयों के रास राज रास भैरवी - आप होगे हमारी होगे - [illegible] होगे और अहिंसावादी [illegible] इसलिए सफलता सफल होगा।

सम्पादकीय टिप्पणियां। —

अवस्था इंगलैण्ड की

हमारे पाठक जानते हैं कि इंगलैण्ड में कोयले की कानों में काम करनेवाले मजदूर वर्तमान वेतन को ले असन्तुष्ट हो हड़ताल करने की तय्यारी में हैं। मालिकों ने जो शर्तें की थी उपस्थित की थीं मजदूर उसे मानने को तय्यार नहीं थे। परन्तु फिर भी कुछ समय के लिये इस हड़ताल का विचार स्थगित करते हुये यह निश्चय किया गया था कि इन कान-मजदूरों की एक सभा हो और उसमें इन प्रश्नों पर विचार हो। उस सभा का परिणाम निकल आया है जिसके अनुसार बहुपक्ष मालिकों की शर्तें मानने को तय्यार नहीं है। हड़ताल का दिन १६ अक्टूबर रक्खा गया है अर्थात् इस दिन हड़ताल आरम्भ हो जावेगी। प्रधानमंत्री मि. लायड जार्ज इस समाचार को सुन कर घबरा रहे हैं। वस्तुतः इंगलैण्ड की औद्योगिक उन्नति को इससे बहुत धक्का लगेगा परन्तु वर्तमान समय में यह अनिवार्य है।

भारत को काबू करो

लण्डन में एक सहभोज में मध्य एशिया की वर्तमान अवस्था और अशान्ति पर भाषण देते हुये लार्ड कर्ज़न ने कहा है कि यह प्रश्न बहुत कुछ भारत की रक्षा पर निर्भर करता है। इसका स्पष्ट अभिप्राय यह है कि यदि मध्य एशिया को काबू में रखना अभीष्ट हो तो भारत के पांव में परतंत्रता, दासता और पराधीनता की बेड़ियों और भी कसकर बांधी जानी चाहिये। पाठक यह भूले नहीं होंगे कि ये वही लार्ड कर्ज़न हैं जिन्होंने अपनी वायसरायी में बंग-विच्छेद करके देश में एक नवीन आन्दोलन और जागृति उपस्थित कर दी थी। आज इनकी फिर इसी तरह की संकुचित नीति से प्रतीत होता है भारत में एक और ऐसा प्रबल आन्दोलन उठेगा जिससे भारत शीघ्र ही स्वतंत्रता का आनन्द उठा सकेगा।

बीबी बसन्ती फिर: —

मद्रास के कौन्सिल भवन में भाषण देते हुये देवी बसन्ती ने कहा कि कांग्रेस में सम्मिलित होने में अब कोई लाभ नहीं है क्योंकि कांग्रेस ने असहयोग को पास कर दिया है। सच तो यह है कि देवी बसन्ती कांग्रेस से इसलिये नाराज़ हैं क्योंकि वह अब उनके हाथ की कठपुतली नहीं रही है। देवी बसन्ती ने अपने जीवन में सरकार के साथ सदा ही सहयोग किया है परन्तु अब एक देश के लिये वह इस साधन को बुरा मानती हैं। इसका एकमात्र कारण उनका बुढ़ापा है जो कि उन्हें ज़माने के साथ चलने नहीं देता॥

मलेरिया का कोप!-

सुना जाता है कि मलेरिया से पटियाले के राजमन्त्री तथा राजवैद्य मरगये हैं॥ बड़े शोक की बात है।

(संवाद दाता द्वारा)

दृढ़ता और वीरता

(महात्मा गांधीजी के लेख का सारांश)..

— जो युद्ध चल रहा है उसकी महत्ता का विचार है। एक सज्जन ने पूछा कि क्या ये ठीक युद्ध कहा जा सकता है। मैंने उत्तर दिया कि हमारी लड़ाई में युद्ध के लक्षण परिमित हैं॥ जो हमें मिलना चाहिये — स्वराज्य — वह युद्ध के बिना नहीं मिलता, इसीलिये युद्ध के साधन होने चाहिये हमें अपना सामान्य व्यवहार बन्द कर आपद्धर्म का आचरण करना चाहिये, सामान्य युद्ध और इस युद्ध में अन्तर इतना ही है कि इस युद्ध में पशुबल और शरीर के बल के लिये स्थान नहीं है — केवल यही नहीं, शरीरबल से अपनी हार भी है॥ इसके सिवाय सामान्य युद्ध और इस युद्ध के लक्षण एक से हैं। सामान्य युद्ध की भांति इस युद्ध में भी आत्मसंयम, संगठन और शिक्षा की आवश्यकता है॥ युद्ध के समय जनसाधारण अपनी व्यावहारिक प्रवृत्तियों का अधिक भाग त्याग देते हैं, लोग सार्वजनिक संकट के समय व्यक्तिगत दुःख भूल जाते हैं; नीतिभ्रष्ट नीति का ग्रहण कर लेते हैं, लुटेरे लूट का धंधा छोड़ देते हैं, शराबी शराब छोड़ देता है, व्यभिचारी व्यभिचार छोड़ देता है, चोर चोरी छोड़ देता है, सभी जनसमाज के छुटकारे का मंत्रपाठ करते हैं, यह समय लोगों के अदालत में जाने का नहीं है, जो विद्यार्थी देश को स्वतन्त्रता प्राप्त कराने में सहायता देता है वह इस प्रवृत्ति को विद्याभ्यास मानता है॥

पर इस समय सबसे अधिक शोभा देने वाले गुण दृढ़ता और वीरता हैं, इनकी जरूरत सबसे अधिक देखने में आती है। अपने निश्चय से न बदलना ही दृढ़ता है॥ आज सरकारी काम छोड़ना, कल पश्चाताप करना और तीसरे दिन उसी काम में जाने का प्रयत्न करना — इस सब में दृढ़ता नहीं है, ऐसी कमजोरी से देश का पतन होता है और वह उच्चासन नहीं पाता। आज इस्तीफा देकर कल उसको लौटा लेने वाले लोग जनसमाज को जितनी हानि करते हैं उतनी इस्तीफा न देने वालों से नहीं होती। आपत्तियां आवें तो उन्हें झेल कर अपना काम करना यही वीरता का चिन्ह है।

क्षत्रिय वृत्ति के साथ युद्ध में वीरता का भाव जोड़ा जाता है। शान्ति के समय वणिक वृत्ति ठीक होती है और अशान्ति के समय वीरता। गुजरात वणिक वृत्ति के लिये सर्वत्र विख्यात है और इस ख्याति के योग्य है। पर बहुधा हम लोगों को ऐसा मालूम होने लगता है कि वणिक वृत्ति वालों में वीरता नहीं आती॥ जैसे जनसमाज का पोषण एक ही वृत्ति से नहीं होता वैसे ही व्यक्ति विशेष का पोषण भी एक ही वृत्ति या पेशे से नहीं होता। इससे हर एक मनुष्य में वीरता तो होती है पर उसका उपयोग नहीं करने से ऐसा मालूम-

होने लगता है कि हममें यह गुण है ही नहीं, इससे गुजरात के लिये भारतवर्ष के लिये यह समय वीरता दिखाने का है, — मुझे पूर्ण आशा है कि जिसमें पाशविक बल नहीं वह वीर कैसा ?? इस तरह की मिथ्या शंका कोई नहीं करेगा। हाथी चींटियों को कुचलता जाता है तो वह वीरता नहीं है, जो हाथी सिंह का सामना करता है वही वीरता दिखाता है, क्योंकि इस कार्य में वह अपने प्राणों को संकट में डालता है। गधी का ध्यान खींचने में कुम्हार की वीरता नहीं है, पर लुटेरों का सामना करने वाला ही नर-केसरी है चूंकि वह अपने जीवन को बड़े से बड़े संकट में डाल देता है। जो पशु-बल के उपयोग से वश में नहीं आता, अड़ा रहता है वही सच्चा वीर है, भारतवर्ष को इसी निःशस्त्र युद्ध में वीरता दिखाने का समय आया है। मेरी शिक्षा का फल क्या होगा यह विचार किये बिना विद्यालय छोड़ने वाला विद्यार्थी वीरता दिखाता है और जो दूसरे विद्यालय में प्रबन्ध कर छोड़ता है वह क्षणिक वीरता दिखाता है। चाहे जीविका मिले या न मिले यही विचार कर सरकारी अदालतों में न जाने वाले वकील वीरता दिखाते हैं, रोज़ी का बन्दोबस्त कर रखने वाले दुनिया की चाल चलते हैं। वीरता नहीं दिखाते। परिणाम का विचार किये बिना विश्वास रखकर कूद पड़ना यही वीरता है॥

जहां भीरुता है वहां वीरता नहीं होती, इस जनसमाज में भीरुता है इससे न तो स्वतन्त्रता प्राप्त होती है और न भीरुता का नाश ही होता है। ये विरोधी बातें हैं। पग पग पर साहस की जरूरत पड़ेगी। रण में जोखिम उठानी पड़ती है और कितनी ही विपत्तियां सामने आती हैं। इससे हम जान बूझ कर जोखिम का सामना करते हैं और थोड़ी विपत्तियां झेल कर बहुत फल निकाल सकते हैं॥ असहयोग के जिस सोपान पर आज हमें चढ़ना है उसमें थोड़ी बहुत विपत्ति है, पर विपत्ति के होते हुवे भी जनता की ओर से यदि उसका पूरा उत्तर मिले तो मुझे पूरा विश्वास है कि हम थोड़े ही समय में स्वराज्य भोगने लग जायेंगे। पर इस सोपान पर चढ़ने में सर्वसाधारण शिक्षित वर्ग से दृढ़ता और वीरता की आशा रखता हूं।

'सुधार का मज़ा'

[illegible]

सुना है कि [illegible]

[illegible] गया।

6 [illegible]

हमारे संवाद दाता.

अल्मोड़ा में दो आदमियों की मृत्यु

~~अपने संवाद दाता~~

एक सड़क पर जहां खुदाई होरही थी पहाड़ी के ऊपर से दो बड़ी भारी शिलायें उन पर गिरीं और वे बिचारे दोनों ~~[illegible]~~ फिर उठ ही न सके और मरगये। डिस्ट्रिक्ट इन्जिनियर ~~[illegible]~~ की इन्क्वायरी हो रही है।

कलकत्ता की हालत —

दुर्गा पूजी की चहल पहल है यह दस दिन तक लगातार रहेगी। अन्तिम दिन बड़े आनन्द के होते हैं। जहां जाओ जिस गली में देखो एक मूर्ति के पीछे २०, २५ आदमी ढोल, ताशा, झांझ थाली, पतीली आदि रख लेकर बजाते हुये हर्षध्वनि पूर्वक गंगाजी में डालने जारहे हैं। बड़े बड़े [illegible] में बड़े २ [illegible] आरहे हैं। इन बड़े स्थानों में मछली, [illegible], कुकुरमुत्ता आदि [illegible] के बगैर जैसे नमक बिना दाल। यहां तो जो चीज़ देखो तो मछली सी दीखती है।

रात आठ से [illegible] [illegible] प्रकाश होता है। मन्दिरों में जाओ तो [illegible] मछली के आकार [illegible] किसी आदमी की तरफ देखो तो उसका मुख भी [illegible] मालूम होता है। [illegible] [illegible] [illegible] दो तीन [illegible] और दूसरी [illegible] दोनों तरफ से [illegible] सा मुख [illegible] [illegible] [illegible] नहीं।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] समझो तो [illegible] से [illegible] है।

[illegible] —:

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है —

(१) [illegible] [illegible]

(२) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] २½ आने सेर [illegible] आने सेर [illegible] है।

[illegible] [illegible] बहुत [illegible] [illegible] हैं [illegible] [illegible] [illegible] हैं।

सुनते हैं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] होगा।

हाथरस के संवाददाता ने [illegible] जी के [illegible] [illegible] और [illegible] भेजा है हमने उसे अभी [illegible] प्रकाशित करदेना है - पाठक नहीं पढ़ते।

दोमज़ेदार —— बातें.

वायसराय के अर्थ: —

एक समय धृतराष्ट्र ~~[illegible]~~ महाराज भोजन खाकर गद्दी में पर बैठे लगे तभी एक कौआ "कांव कांव" करता हुआ बाहिर से आया और कुछ देर रुह फिर बाहिर चला गया। तब सञ्जय ने महाराज से कहा कि इस का तात्पर्य समझते हो क्या है?

धृतराष्ट्र --- नहीं - क्या इसमें कुछ गूढ़ रहस्य है?

संजय - हां - नहीं तो क्या कभी राजमहलों में कौए आया करते हैं।

धृतराष्ट्र - तो फिर इस का क्या तात्पर्य है

संजय - देखिये ये कौआ आप के गद्दी पर बैठने के समय आया था - एक दिन आवेगा कि ये ही राजा होंगे और इनका नाम वायस-राय होगा -

धृतराष्ट्र - हैं। भला - कौए भी कहीं भारत की गद्दी पर बैठ सकते हैं?

संजय — नहीं महाराज - वे होंगे तो मनुष्य - किन्तु ~~होंगे वायस~~ उन का नाम होगा वायसराय - यह इस लिये वायस भी काले होते हैं वे भी काले लोगों के राजा होंगे क्या - उस जमाने में - वाइस का (Vice) अर्थ होगा पाप और (Roy) राय का अर्थ राजा - वे पापों के राजा होंगे अर्थात् वे छलिया, कपटी, निठुर होंगे - खून [illegible] करेंगे -

धृतराष्ट्र - तब तो बड़ा बुरा होगा -

संजय —

महाराज! इसमें क्या सन्देह है - बड़ा अनर्थ होगा।

वैद्य और डाक्टर -:

एक समय एक ग्रामीण बीमार होकर पहिले एक वैद्य के पास गया वैद्य ने कहा कि देखो, तुम्हें अजीर्ण है इसलिये एक तो पानी बहुत कम पिया करो - दूसरा रात को बाईं करवट सोया करो - शाक भाजी से हमेशा परहेज़ रक्खो - तो तुम बहुत जल्द अच्छे होगे।

दूसरे अचानक उनके गांव में एक डाक्टर आ पहुंचे - ग्रामीण भी पूछता २ जा पहुंचा - कहिये महाराज! दवा बताओ -

दवा देकर डाक्टर ने कहा कि तुम्हें भूख कम लगती है, अजीर्ण है ~~[illegible]~~ मालूम होता है तुम पानी कम पीते हो - सवेरे पानी खूब पिया करो दाल छोड़कर शाक भाजी खूब खाया करो - रात को दाईं करवट सोया करो -

ग्रामीण ने कहा -

महाराज - कल ही तो एक वैद्य ने कुछ और ही इससे उलटा बताया था वैद्य ने

डाक्टर - अरे! वैद्य क्या जाने अब उनका जमाना गया - हमारा कहा ही ठीक होता है।

कुछ दिन बाद वैद्य मिले - ग्रामीण अभी अच्छा न हुआ था - वैद्यजी ने पूछा क्या हाल है -

ग्रा. — महाराज - एक डाक्टर ने दवा दी थी और कुछ बातें ठीक आप से उलटी कही थी - वे कहते थे कि अब वैद्यों का ज़माना नहीं -!

वैद्य - अरे! डाक्टरी तो पश्चिमीय देशों के लिये है हमारे लिये तो अपनी ही ठीक है —

ग्रामीण बिचारा चक्कर में पड़ गया दोनों की उलटी ही बातें?

बाबाजी की झोली.

अलीगढ़ विश्वविद्यालय

मि. चिन्तामणि जी को अलीगढ़ यूनिवर्सिटी की बड़ी फिकर पड़ी है। वे बहुत जोर से लिख रहे है, कि इस की असहयोगवादियों से रक्षा करनी चाहिये। नहीं तो इसकी इतने सालों से बनी हुई शान मट्टी मे मिल जावेगी। और लोगो के दिल मे केवल इस की स्मृति मात्र ही रह जावेगी। पर ये सब अपीले बहरे कानों पर ही पड़ेंगी। असहयोगवादियों ने कुछ न सुनाई करने का प्रण किया है वे इसे तोड़े बिना रहेगे ही नहीं।

—

New Statesman नामक पत्र असहयोग के समय में भारत के ऊपर समालोचना करता हुआ लिखता है। कि भला boycott प्रस्ताव का तात्पर्य क्या है?

(क) इससे स्वदेशी राज्य की स्थापना न होगी।

(ख) इससे सरकार व्यापार और रोजगार की जांच न करेगी।

हां इससे बन्द होते गाइसराय के दफ्तरों को कुछ लगी तो अवश्य होगी। किन्तु वाइसराय तो जाने वाले हैं। अत उनका क्या बिगड़ेगा मै यह जानकर बस रहा हूं। कि असहयोग का कोई फायदा नहीं है। Statesman के इस तरह लिखने से हमारे दिल को धक्का पहुंचता है। किन्तु हम तो इसे करेंगे ही।

खुली चिट्ठी

२८ के लीडर मे एक लीडरों के नाम खुली चिट्ठी निकली है। चिट्ठी के लेखक हैं एक किसान। उन्होंने दर्शाया है, कि गर्म दल के नेताओं ने हमारे लिये इतना काम नहीं किया जितना नर्म दल वालों ने।

इस समय जब कि किसानों के मदद करने का समय आया। हमारी दरख्वास्त का कौन्सिलों में सुनाने का समय आया। तब तुमने असहयोग का ठेका ले लिया। याद रखना— तुम्हे यह याद रखना चाहिये। कि आप गर्मदल वाले हमारे पक्ष मे नहीं पर विरुद्ध हैं। इसका एक मात्र प्रमाण यही होगा। कि तुम्हारा नेतृत्व छिन जावेगा। देखा कैसी मजेदार बाते हैं। यह सब C.I.D. विभाग की नौकरशाही Earl Cunnus का जादू है।

× × —

एक सुगम तरीका_

अंग्रेज लोग, जब कभी भी हिन्दी या उर्दू बोलना सीखना चाहते हैं तभी गलती से ... हुई करने लगते हैं और इस बात का ख्याल करते है कि हमे अंग्रेजी आती है। किन्तु हमारे हिन्दुस्तानी सालों तक मर मर कर अंग्रेजी रटते है फिर भी इन्हे अपनी अंग्रेजीदा होने पर भरोसा नहीं होता।

इसका सबसे सुगम उपाय अंग्रेजों ने ही उन्हे बता दिया है। और वह यह कि जब वे कभी भी अंग्रेजी सीखने लगें तभी गलती करना प्रारम्भ करदे

किन्तु उन्हें एक भाग को के सामने ही क्या ... चाहिये।

—

श्री रामकृष्ण परमहंस के उपदेशामृत.

नमक की पुतली की नाईं जीव समु-
द्र के सदृश परमेश्वर की थाह पता लगा-
ने जाता है। उसका फल यह मिलता है। कि
नमक की पुतली तुल्य जीव ईश्वर समुद्र में
गल घुल जाता है के लीन होकर एकी-
भाव को प्राप्त हो जाता है।

× × × ×

जो भगवान को चाहता है। वह ही उ-
से पाता है। न मानो तो बहुत नहीं, तीन ही
साधना करके देखलो।

× × × ×

इस जन्म में ईश्वर को प्राप्त करूंगा।
तीन ही दिन में प्राप्त करूंगा। एक बार
नाम लेते ही ईश्वर को प्राप्त करूंगा। ऐ-
सी उत्कट भक्ति द्वारा ही भगवान के दर्श-
न होते हैं। धीमी भक्ति से कुछ नहीं
बनता।

× × × ×

अमृत के तालाब में चाहे जैसे गिर
सको, अमर हो जाओगे। वैसे ही चाहे
जैसे भगवान का नाम लो। उसका फ-
ल अवश्य पाओगे।

× × × ×

कल्पना करो, कि एक माता के पांच
पुत्र हैं। सो वह किसी को काठ की चटनी
किसी को पुतली और किसी को मिठाई दे
के लुभा बहला कर अपने कार्य्य को क-
रने लगती है। सत्य है परन्तु जो बालक
खिलौना इत्यादि सब फेंक कर मां मां
करके रोता है। उसे मां गोद में लेकर पु-
चकारती और चुप कराती है। हे प्राणियो
तुम भी अन्य पदार्थों में भूले हो। यह

सब फेंक कर जो तुम अश्रुपात क-
र ईश्वर के लिये । तो वह तुम्हें
अपना दर्शन देगा।

× × × ×

लोहे की तलवार पारस पत्थर के
स्पर्श से सोने की तलवार होने पर
यद्यपि अपना रूप और आकृति
नहीं बदलती। तथापि वह किसी के
गला घोंटने वाली नहीं होती है। ऐसे
ही ईश्वर के शरणागत होने पर मनु-
ष्य का आकार न बदले कुछ चिन्ता
नहीं, पर वह हत्यारा नहीं होता है।

× × × ×

ज्ञान पुरुष है। भक्ति नारी (प्रकृ-
ति) है। ईश्वर के बाहरी घर तक ज्ञा-
न का प्रवेश हो सकता है। पर उसके अ-
न्तःपुर में भक्ति रानी को छोड़ अन्य को-
ई नहीं जा सकता।

+ + +

सत्य है कि बाघ में भी ई-
श्वर है पर बाघ के सामने न
जाना चाहिये। ऐसे ही सत्य है
कि खोटों में भी ईश्वर है पर
खोटों का संग बुरा है

(शेष फिर)

═

हमारी हाथरस की चिट्ठी.

महात्मा गांधी जी का स्वागत.

गत १३ अक्टूबर को भारत के मुकुट महात्मा गान्धी मुरादाबाद की प्रान्तिक की कांग्रेस से लौट कर अलीगढ़ होते हुए हाथरस पधारे। समस्त बाजार झण्डियों तथा विविध रंगों से रचित वंदनवार, पताका आदिकों से ऐसा सु-सज्जित किया गया था जिसे देख कर चित्त में राष्ट्रीय भाव जाग्रत हो जाते थे। लगभग ११ बजे दो मोटरें आईं। एक पर महात्मा गान्धी जी के पुत्र तथा एक और प्रोफेसर मौलाना शौकत अली और महम्मद अली विराजमान थे। महात्मा जी, उन की धर्मपत्नी, अलीबन्धु, तथा स्वामी सत्यदेव जी एक गाड़ी पर विराजे और समस्त बाजार में इन का जलूस (procession) में लोगों को मानो एक दिव्य धूमधाम के साथ निकाला गया। गाड़ी घोड़ों द्वारा खींची गई थी, महात्मा जी ने स्वयं गाड़ी खींचने से लोगों को मना कर दिया था। घूमते हुए नेता लोग रामलीला मण्डप में आगये जहां सभा सम्मिलित होने का प्रबन्ध किया गया था। लोग पहिले से स्थान रोक कर रहे, एक दम जन समूह, पूर्णमासी के सागर की भांति उमड़ चला। तिल धरने को स्थान नहीं था, महात्मा जी के दर्शनों की लालसा से अत्यन्त निकट चलने के लिये आग्रह करने लगा। लोगों ने सभा स्थान के समय तक पण्डाल को गड़बड़ कर रक्खा था। नेता लोग अपने २ आसनों पर बैठ गये। कुछ देर की प्रतीक्षा के उपरान्त जब पूर्ण शान्ति स्थापन करना असम्भव प्रतीत होने लगा, तब स्वामी सत्यदेव जी उठ कर बोले— "सज्जनो जिस प्रेम से आप लोगों ने महात्मा गान्धी जी, मौ. शौकत अली, तथा महम्मद अली का स्वागत किया है उसके लिये मैं आप सब लोगों को हार्दिक धन्यवाद देता हूं अब तक बहुत कुछ व्याख्यान दिये जा चुके हैं अब समय व्याख्यानों का नहीं वरन् काम करने का है। श्री म. गान्धी आप लोगों को एक ईश्वरीय सन्देश सुनावेंगे आशा है आप लोग उसे शान्त चित्त होकर सुनेंगे"। इस के उपरान्त मौलाना शौकत अली ने जो कुछ कहा उस का मर्म इस प्रकार है:—

"भाइयो! आप लोगों ने अपने राष्ट्रीय नेता का स्वागत किया है, समय काम करने का आगया है। जब तक हम अपने ध्येय का ध्यान न करेंगे [illegible] लोगों को चैन नहीं लेने देंगे। हम हिन्दू मुसलमानों ने मिलकर (म. गान्धी का हाथ पकड़ कर) म. गान्धी को अपना सर्दार मुकर्रर कर लिया है। जो कुछ इन की आज्ञा हो, सब को मानना चाहिये। मैं सच्चा मुसलमान हूं, गान्धी जी कट्टर हिन्दू हैं, मैंने गान्धी जी की [illegible] इस प्रकार अपना [illegible] प्रदर्शित करने के [illegible] जान ली है। जो कुछ राजों (गुलामों) में, मस्जिदों में, तथा हरम में बल है यह अपनी जन्म भूमि पर निछावर है। इस के बाद श्रीयुत मौ. महम्मद अली का व्याख्यान आरंभ हुआ। चार शब्दों में उन्होंने कहा मैं यूरोप के विविध देशों में घूम कर जो कुछ गहरा भी सौगात लाया हूं, वह मुसलमानों के लिये यह है कि हे मुसलमानो! हिन्दू भाइयों का हाथ पकड़ो, अंग्रेजों से कुछ भी आशा न रक्खो हिन्दुओं से मिल कर पहले भारत को स्वतन्त्र कर लो, तभी तुम्हारी अन्य कामनायें सिद्ध होंगी। हिन्दू भाइयों के लिये जो मैं सौगात लाया हूं, वह यह है कि हे हिन्दुओ! तुम्हारी संसार में मान और प्रतिष्ठा तभी होगी जब तुम अपने देश को स्वाधीन कर लोगे। अपनी तमाम शक्तियां अपने मनोरथ सिद्धि के लिये लगाओ। विदेशों में अपने देश को धोखा मत जाने दो, यहां के सैनिक [illegible] गुलाम बनाकर और देशों में [illegible] को [illegible] में सरकार को सहायता देते हैं, यह लज्जा की बात है, ऐसा न होने दो। फिर करतल ध्वनि के मध्य में महात्मा गान्धी ने अपना व्याख्यान आरंभ किया। आप के व्याख्यान के बीच ही में [illegible] में ऐसी गड़बड़ी मच गई कि [illegible] तथा [illegible]

हमारे-सहयोगी.

(प्रेषित पत्रों का सम्पादक उत्तरदाता नहीं है)

विजयोपहार -:

सम्पादक श्री व अधिकारी की

पत्र मौलिक है। लेखों की संख्या की दृष्टि से यद्यपि यह पत्र बहुत पीछे है क्योंकि इसमें लेख एक ही है किन्तु वह पक्का है और भाव सौन्दर्य की दृष्टि से अच्छा है। यह पत्र प्रकाश लेख लिखने के कारण अप्रकृत लेख लिखने वाले महाविद्यालय के हैं जिनके से इस अंश में अच्छा है। पत्र के सम्पादक हैं जहाँ का कलेवर नहीं बढ़ा पाया गया। बंकिम चन्द्र का हिन्दी अनुवाद भी कुछ अच्छा ही है। लेख समयानुकूल हैं इससे उन सहयोगियों को शिक्षा लेनी चाहिये जिन्होंने अपने [illegible] के लेखों से पत्रों को भर प्रकृत विषय पर कुछ भी प्रकाश नहीं डाला। आशा है सम्पादक महोदय अपनी सचाई की नीति [illegible] रखेंगे।

विजय-विहार -:

पत्र बहुत छोटे आकार में प्रकाशित हुआ है। नये लेखक जो लिखने में भूलें कर सकते हैं वह भी इसमें देखी जा सकती हैं तथा फिर परिश्रम सराहनीय है। यह देखकर हम बहुत प्रसन्न हुए हैं कि नये सहयोगी ने निबंधों में अपना बहुत समय व्यतीत नहीं किया। [illegible] सम्पादक साथ प्रतिभा इससे कुछ शिक्षा ग्रहण करेगा।

शास्त्र विद्यालय से अभी तक कोई पत्र निकला हुआ हमने नहीं देखा। सुना है कि 'प्रेम पुष्प' की तरह एक मास के विद्यार्थियों में विजय दशमी की खुशी में 'विजय कुसुम' निकला है। सम्पादक महोदय 'ब्र. देवदत्त शर्मा शास्त्री' हैं। आशा है कि यह पत्र भी शीघ्र निकलता और [redacted] मनोविनोद करेगा।

एक नया प्रस्ताव

बहुत से सहयोगियों के मुख से हमने सुना है कि वे चाहते हैं कि उपाध्यायों तथा अध्यापक दल में भी पुरस्कार [illegible] अनुकरण हो। हम इन लेखकों की ओर से उपाध्यायों की सेवा में यह नम्र निवेदन करते हैं कि वे इस अनुकरण को स्वीकार करें। यहाँ के विभागों में, गुरुकुल में, दर्जों में अलग दल से अनुकरण होना भी चाहिये। [illegible] हम आशा करते हैं कि उपाध्याय वर्ग इस ओर ध्यान देंगे।

यदि नहीं तो उन्हें अध्यापक दल की ओर से एक बड़ा उपालम्भ भी दिया जा सकता है।

सूचना

(कृपया विज्ञापन मैनेजर को कष्ट न उठाइये - हमारे पत्र में इसके लिये कुछ भी जगह नहीं है।)

(व्यवस्थापक)

विजय वैजयन्ती

शान्ति-निकेतन

समाचार.

मालवीय जी के समय विभाग में परिवर्तन -

लाहौर से समाचार मिला है कि मालवीय जी अब कुछ दिनों तक आराम करेंगे उन्होंने अपने कार्यों के लिये कुछ समय ~~विभाग~~ लिये को बदल लिया है।

रायकोट में डायरशाही की धमकी -

रायकोट जिला लुधियाना से हमें एक शिकायत मालूम हुई है जिसकी तरफ हम अधिकारियों के ध्यान को खींचते हैं। इस शिकायत में अगर कुछ सचाई है तो इसके सम्बन्ध में सरकार को कार्यवाही करनी चाहिये - कहा जाता है कि ३ अक्टूबर को रायकोट में जलसा होना था उसके लिये रसद का प्रबन्ध चौधरियों के सिपुर्द कर दिया था। चौधरियों ने रसद को बांट दिया - अगले दिन किसी ने शाक बेचने वालों से आग्रह कर दिया कि सब्ज़ी वाले दुकान नहीं लाते। सरकारी आदमियों की लोग कुछ परवाह नहीं करते। इस पर तीन सिपाही वर्दी पहने बन्दूक लिये बाज़ार में आ गये और उन्होंने शाक बेचने वालों को धमकाया कि फ़ौरन दुकान ले चले आओ तुम्हारी खैर नहीं।

शाक बेचने वालों का ध्यान था वे चले गये। इस विवाद को छोड़कर कि आया इस तरह किसी को बाधित किया जा सकता है या नहीं हम कहते हैं कि अगर शाक बेचने वाले शाक लेकर पैड़ में न पहुंचते थे तो सेना के अधिकारी चौधरी को बुलाकर पूछते कि शाक क्यों नहीं आया वह उपस्थित कर देते हम, सरकार का ध्यान इस की तरफ दिलाते हैं क्योंकि इस तरह की बातों से बेचैनी बढ़ती है। न. म.

बम्बई में चिट्ठीरसाओं की हड़ताल

हड़ताल बड़े ज़ोर शोर से जारी है - चिट्ठीरसाओं ने [illegible] जमा किया:-

बम्बई में चिट्ठीरसाओं और तार चपरासियों की हड़ताल पूर्ववत जारी है आज इस हड़ताल को प्रारम्भ हुये [illegible] वां दिन है। आदमियों को इसके कारण बहुत कष्ट हो रहा है। [illegible] सब ढेर पड़े हैं जो चिट्ठियां सिंगल के अन्त में पहुंची थी वे अब तक नहीं बटीं।

खबर मिली है कि चिट्ठीरसाओं की यूनियन ने कष्ट के लिये [illegible] [illegible] कर लिया है। [illegible] कहा है कि [illegible] मांग पूरी न होगी हम न [illegible]।

सुना जाता है कि २८ अक्टूबर को श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी का [illegible] में व्याख्यान होगा [illegible] आदि के भी [illegible] की आशा है।

अलीगढ़ कालिज

[illegible] ज़ियाउद्दीन का माता पिताओं को पत्र
विद्यार्थी अपनी [illegible] करते हैं
अवस्था गम्भीर है

[illegible] ज़ियाउद्दीन ने विद्यार्थियों के माता पिताओं को कालिज की वर्तमान दशा से सूचित करते हुये [illegible] के लिये अपील की है। [illegible] ने लिखा है [illegible] [illegible] और [illegible] का [illegible] नहीं लेने चाहिये

विद्यार्थियों के पास किये हुये प्रस्ताव. -

अलीगढ़ महाविद्यालय के -

निम्नलिखित प्रस्ताव पास किये हैं—

(१) यह विद्यार्थियों की समिति अंग्रेजी सरकार के उन्हीं [illegible] कि वे इस व्यवहार से सख्त घृणा प्रकट करती है।

(२) खिलाफत कमेटी के पास किये हुये प्रस्तावों को पूर्णतया से स्वीकार करती है।

(३) कालेज के संरक्षकों से ~~प्रार्थना करती~~ बलपूर्वक कहती है कि वे सरकार से मदद न लें और सरकारी विश्वविद्यालयों से इसको बिलकुल अलग कर लें।

(४) यदि इसको संरक्षकों ने इस अनुसार तक न माना तो हम ऐसे छात्र नेतों [illegible] ~~[illegible]~~ खिलाफत कमेटी के अनुसार नवयुवकों को शिक्षित करने के लिये जातीय संस्था बनायेंगे और सरकारी स्कूल विश्वविद्यालयों से इसके सम्बन्ध को तोड़ देंगे।

(५) सरकारी उपाधिधारियों से आनरेरी सरकारी ओहदों को तथा उपाधियों को छोड़ देने की प्रार्थना करती है तथा छात्रवृत्ति लेने वालों से निवेदन करती है कि वे छात्रवृत्ति को लेना छोड़ दें। और यदि वे मना करें तो जबर्दस्ती उनका बायकाट किया जावे।

005701

लाहौर के एक चर्च में व्याख्यान देते हुये लाला एल. एम. जोशी ने कहा है कि हम अपने [illegible] वफादार नहीं हैं। यह है मूल कारण इस अशान्ति और उपद्रव का जो कि इस समय संसार में हो रहा है। पादरी महाशय के ये शब्द अक्षरशः सत्य हैं; प्रत्येक अंग्रेज को चाहिये कि वह इन्हें अपने हृदय-पटल पर अंकित कर ले — वर्तमान का प्रतिनिधि

के ~~[illegible]~~ चिरकाल से सहयोग समता, न्याय और स्वतंत्रता जैसे मोटे २ शब्दों से भुलाते रहे हैं परन्तु जब जब काम का समय आता रहा तब तब अत्यन्त संकुचित स्वार्थमयी नीति का ही अनुसरण करते रहे। अंग्रेजों को अब यह समझ लेना चाहिये कि राजनैतिक दावपेंच के चंगुल में भारतवासी अब नहीं फंस सकते।

अमीर की नीति नहीं बदली

सरकारी सूचना निकली है कि कलकत्ते के समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ था कि अफगान सरकार ने नियमित रूप से एक मिशन भेजने की सूचना भारत सरकार को दी थी और फिर अफगान सरकार के विचार बदल गये और उसने इस मिशन को न भेजने की सूचना भेजी - ये दोनों समाचार अप्रामाणिक हैं।

यूनान के बादशाह को बन्दर ने काट खाया है और वे इसके सबब से बीमार होकर बिस्तर पर पड़े हैं और उनको देखने के लिये फ्रांस से डाक्टर बुलाया गया है।

कसूर में चोरियों की अधिकता

२०, २५ दिन हुये ~~[illegible]~~ शिकायत की गई थी लेकिन मालूम होता है कि यहां चोरियां बहुत अधिक हो रही हैं किन्तु कुछ भी ध्यान नहीं दिया गया। क्यों कि अभी तक दुर्दान्त चोरियां हो रही हैं।

कल ४½ बजे सन्ध्याकाल [illegible] में महात्मा गांधी जी का व्याख्यान हुआ। विषय असहयोग था। विद्यार्थियों में [illegible] आज डी. ए. वी. कालिज [illegible]।